

A. Or.

2815.

A. or.

2815

Madschm^{re}ah

किताब

मजमुअ़ शरायज़

हस्तुल इक़ जनाव नव्बाव लफिनेन्ट गवर्नर
बहादुर मुमालिक मगरबी व शिमाली व चीफ़
कमिश्नर मुल्क अवध

वास्ते

इस्तेमाल उम्मेदवारान इम्तिहान सिविल सर्विस के
साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक्शन मुमालिक

मगरबी व शिमाली व अवध के

दफ़्तर में मुरत्तब होकर

मुक़ाम इलाहाबाद

सन १८८४ ई०

गवर्नमेन्ट प्रेस में छपी

1928

६

प्रणयन सींगे फौजदारी

Bayerische
Staatsbibliothek
München

मुसम्मात सुद्धी जौजे साधो पासो साकिन भगवानपुर

परगना महुवा तहसील मोहनलालगंज

मुद्दया

सेवादीन चौकीदार भगवानपुर परगना महुवा

तहसील मोहनलालगंज

मुद्दयाअलेह

इल्लत मारपीट बमूजिब दफा ३२३

तजीरातहिन्द

BIBLIOTHECA
REGIA
MONACENSIS

गरीब परवर सलामत

जनाब आली जो पूजा देव स्थान मौजा भगवानपुर में
चढ़ता है वह हमेशा गुड़ैत लेता है और गुड़ैती मेरे खाविन्द के नाम थी
चुनांचे महीने माघ संवत् १८३१ में जिसको असी महीने भरका गुजरा
पूजा मजकूर यानी आटे के दीया और गंदुम बिरयां देव स्थान से मुद्द-
या उवाती थी उसपर मुद्दयाअलेह ने जमीन में गिराकर लात घूंसे
से मार पीट किया और सदहा गाली गुफता दीं जिसकी रपट याने
मोहनलालगंज में लिखा चुकी हूं और तमाम बाशिन्दगान देहा गवाह
हैं लिहाजा उम्मेदवार हूं कि बाद तहकीकात व गवाही गवाहान मुद्दया-
अलेह को सजा फरमाई जावे ॥

फिदवी या मुसम्मात सुद्धी जौजा साधो पासो गुड़ैत

साकिन भगवानपुर मारुजे २६ फरवरी

सन १८७५ ई०

प्रभूदीन मुद्दई साकिन मौजे मानिकपूर परगना खैरागढ़

बनाम

जलेश्वरप्रसाद कानूनगो तहसीली व अजुध्या प्रसाद वगैरः मुद्द-
आप्रलेहूम

गरीब परवर सलामत

गुजारिया यह है कि मौजा मानिकपूर में हम लोग
हिस्सेदार हैं और एक दरख्त बरगद का मौजे मजकूर में था तारीख २०
सितंबर सन् १८८३ ई० को मुल्जिम बिला रजामन्दी हमारे दरख्त
बरगद का कटवाने लगे हरचन्द हमारे लड़के ने मना किया नही माना
में वास्ते पैरवी मुकद्दमे मौजा मजकूर के इजूर में आया था तारीख २८
को जब कचहरी से लीया तो देखा कि दरख्त फिर काटा जाता है मुल्-
जिम से कहा कि किस वास्ते दरख्त हमारा बिला रजामन्दी कटवाते हैं
तब कानूनगो ने चन्द कलाम सरत कहें और दरख्त बड़ का हमारा
मालियत २५ रु० का कटवा डाला कुछ लकड़ी उठवा लेगये और कुछ
उसी जगह पड़ी है लाचार ताब मुकाबिले की न देखकर बाद दस्ति-
ला स्टेशन इजूर में नालिशी हूं उम्मेदवार कि तहकीकात होकर
तदारुक फरमाया जावे.

फिदवी प्रभूदीन मुद्दई मारुजे

२४ अक्टूबर सन् १८८३ ई०

गरीब परवर सलामत

अर्सी र्द महीने का इशारा कि मुसम्मा महमूद मेरे भाई
मुस्तगीस को मुसम्मिमान अकबरअली व चिरागअली व यहतअली
मुद्दआप्रलेहूम ने मजस्तह किया था वक्त मजस्तही यानेदार वास्ते

दरयाफ़्त वारदात मज़कूर के आया तो मज़रूह मज़कूर ने बज़बान
 खुद बहालत दुरुस्ती अफ़क़ बहवास मज़रूह होना हाथ से मुस-
 म्मियान मज़कूर के बयान किया और वह बयान दर्ज रोज़नामचे पाने
 में है और मज़रूह मज़कूर बाद बयान मज़कूर बसबब उसी
 ज़राहत के मरगाया और मुद् अज़ाअलेहूम हवालात में होकर बिदून
 ज़मानत रिहा होगये- चूंकि मुद् अज़ाअलेहूम मशहूर बदमाश हैं
 नमालूम कि बिना ज़मानत किस फ़रेबसे रिहाई पागये अब वह
 बदमाश निस्वत फ़िदवी के क़स्द मारने का करते हैं जनाब आली
 फ़िदवी अर्ज़ करता है कि जो मुद् अज़ाअलेहूम को सज़ा न दूँ तो वह
 निहायत बाला दस्ती पैदा करेंगे बल्कि वे बरमला कहते हैं कि
 हम तुम्हको जान से मार डालेंगे और यह बदमाश बमूज़िब ताज़ीरात
 हिन्द काबिल सज़ा संगीन के थे उम्मेदवार हूँ कि बाद तहकीकात मु-
 द अज़ाअलेहूम को सज़ा दीजाय ताकि दूबरात औरों के बास्ते भी हो
 और फ़िदवी अपनी दाद को फ़ज़्र चके दुआगो ज़ज़ूर में रहें.

फ़िदवी नसीख़ुद्दीन साकिन मौज़ा उफ़ेनी दाद रद्दा
 मारुजे ६ जून सन् १८६५ ई०

सीताराम वल्द जैकृष्णा कौम बक़ाल साकिन कसबा
 मलियाबाद ज़िला लखनऊ
 अतवलसिंह वल्द लाला वमिदई वल्द नामालूम वकंधई
 वल्द नामालूम वगुरबख़्श वल्द नामालूम वतिलक वल्द
 नामालूम कौम अहीर साकिनान मौज़े ईसापुर परगना
 व तहसील मलियाबाद ज़िला लखनऊ.

मुद्ई

मुद् अज़ाअलेहूम

दावा हस्बदफ़ा ३५२ ज़ररसानी बदफ़ा ३२३ ताज़ीरात हिन्द

गरीब परवर सलामत

वाकै १५ जौलार्द सन् १८७५ ई० को वक्त १० बजे दिनके में मुद्दई गुमटी ईसापुर पर एक तालाब में नहाने लगा और कपड़े अपने उस मुकाम पर रख दिये और मुद्दआअलेह लंबर १ से मुफ मुद्दई ने कहा कि मेरे कपड़े रखे हैं तेरी मवेशी खराब न कर डालें देखते रहना बावजूद कहतेने के उसने अपने मवेशी की हिफाजत न की एक मवेशी ने मेरे अंगरखे का दामन चबा डाला तब मैंने कहा कि बावजूद मेरे कहनेके तूने मेरा नुकसान कराया उसपर मुद्दआअलेह लंबर १ ने बहुत तकरार की और सब मुद्दआअलेहूम खेत से दौड़े और सब ने मेरे सिर के बाल पकड़ कर लात घूंसें से खूब मारा और मार पीट करके चले गये और बावजूद मार पीट के फिर मारने को कहते हैं उम्मेदवार हूं कि मुकद्मा कायम होकर दादरसी फरमाई जावै.

सीताराम मुद्दई मारुजे १८ जूलार्द सन् १८७५ ई०

गरीब परवर सलामत

आज तारीख १८ जनवरी सन् १८८६ ई० को ८ बजे दिन को शेख अबदुल करीम साबिक दारोगा राजा ईजानगर साकिन मुहल्ले नवाबगंज ने आकर इतिला की कि आज सुबह जो सो कर उठे तो सब असबाब खुला पाया और मकान के दरवाजों में दो संधें लगी हैं और दरवाजा मकान का खुला पड़ा है और एक सन्दूकचा खुर्द महमूला दो जोड़े दुशाले सफेद और सुर्ख व नकद ३०० रु० व सात अशरफी वगैरह जुमला मालियत तख्मीनन ६८१ रुपया नज़र न आया मालूम होता है कि किसी अदावती हमारे ने खुद या और किसी से संध दिलवाकर चुरा लिया दावा और शुभह किसी पर नहीं है बरवक्त सुराग पाने के

दावेदार होयगा चुनाचे मनसबदारवां हेड व लोधूखां वगैरह कानिस्ट विलान वास्ते मुम्प्रायने नकाब व दरयाफ़ हाल मुकाम नवाबगंज को रवाना कियेगये दरयाफ़ हाल करके रिपोर्ट हाज़ा इत्तलाअन इरसाल है पीछे से जो हाल होगा गुज़ारिष कियाजायगा ॥

फ़िदवी कुदरत अली सबइन्स्पेक्टर डि.वी.जिन भलपुरा

नाममौज़ा	नाम मुद्दई	नाम मुद्दआअला	सीगा	खुलासा दावा हस्बदफ़ा १०७ ऐक १० सन् १८८२
रामन- गर	मुसम्मात मह- रानी जौजा दुर्गा तिवारी मुतवफ़्फ़ा	अंगन व मोहन व गजाधर ति- वारी	फ़ौजदारी	वास्ते लियेजाने मुचलके हिफ़ज़ अमन मुद्दआ- अलेहूम से

गरीब परवर सलामत

बयान दावे का यह है कि बमुकाबले मुद्दआअलेहूम नालि-
शों महकमे फ़ौजदारी व अदालत दीवानी में होती आती हैं बल्कि अदा-
लत दीवानी से अपरेल सन् १८८१ में डिगरी हक़ियत व हक़ मुफ़ सायला
के ऊर्द फिर तारीख़ २८ अक्टूबर सन् १८८३ ई० को मुद्दआअलेहूम ने
जेवरात मालयती ५७ रु० छीन लिया कि इत्तिला पुलिस में ऊर्द और
अदालत में नालिश ऊर्द और सवाल मेरा सपुर्द तहसीलदार साहब के
इफ़्फ़ा वहां से तारीख़ ४ दिसम्बर सन् १८८३ ई० को अंगन और मोहन
तिवारी पर इकुम ५५ रुपये जुरमाने का इफ़्फ़ा चुनांचे उसी तारीख़ से
मुद्दआअलेहूम मये मुसम्मियान रामभरोस व जगन तिवारी व पृथ्वीदत्त मिश्र
साकिनान रामनगर मुसैद जान मारने के हैं और मुफ़ को मकान में जाने

नहीं देते कई मर्तबा फ़िदविया मकान में जाने लगी तब लाठी लेकर मारने को दौड़े लाचार फ़िदविया जान अपनी लेकर भाग के मौजा घरीपुर ऊपर मकान जगत तिवारी के मुकीम है चौकीदार से पुलिस में इत्तला किया और मेरे नकान में ग़ल्ला जौ गेहूं दाल चावल बरतन कपड़ा और नकद मालियती ५० रु० का रकबा है तम्भज्जुब नहीं है कि मुद्दाम्भले हम तसर्तफ़ कर गये हों इसवास्ते यह दरवास्त है कि मुद्दाम्भले हम से सुचलका हिफ़्ज़ अमन का लिया जावे ॥

फ़िदवीया महारानी जौजा दुर्गा तिवारी साकिन मौजारामनगर

मारुजे १५ दिसम्बर सन् १८८३ ई०

ग़रीब परवर सलामत

खुदावन्दा मुसम्मा रामजीलाल पटवारी मौजा ज़लम्बी खुर्द परगना खंडोली फ़िदवियान से अदावत कलबी रखता है और बसबब अदावत तरह तरह का तुक्कसान फ़ज्रचाता है अब हाल में जो मुसम्मियान दीपनरायन व महाराज नारायन व म्यारेलाल व स्यामकिशोर हमारे काश्तकारान ग़ैर मौस्तसी थे उनको इज़हार में बतारीख् दसितम्बर सन् १८८४ ई० उहकमे तहसील में और इज़हार हलफ़ी महकमे असिस्टेंट कमिश्नर वहां दुर में मौस्तसी लिखवा दिया और निकासी वग़ैरह कागजात बन्दोबस्त में वह लोग काश्तकार ग़ैर मौस्तसी लिखे हुए हैं और जो हमने फ़र्द पटवारी मज़कूर से तलब की तो फ़र्द भी जानबूझकर ग़लत बनाकर दी जो लोग काश्तकार ग़ैर मौस्तसी थे मिनजुमला उनके किसी को मौस्तसी और किसी को ग़ैर मौस्तसी लिख दिया यह चालाकी पटवारी की सिर्फ़ वास्ते जरूर पढ़चाने हमारे के हैं और सर्कारी मुलाज़िम के वास्ते बाब दफ़ा १६७ ताज़ीरात हिन्द में साफ़ लिखा है कि जो कोई मुलाज़िम सर्कारी किसी शरक्स

के नुकसान पहुँचाने की नियत से ग़लत दस्तावेज़ मुस्तब करे तो वह मस्तोजिब सज़ा कैद तीन साल का है चूँकि यह पटवारी भी मुलाज़िम सरकार है और उसने कागज़ात निकासी वगैरह दस्तख़ती अपने में काश्तकारान गैरमौस्तसी को बद्दहतमाल पहुँचाने नुक़सान हमारे के किसी को मौस्तसी और किसी को गैर मौस्तसी लिख दिया है और अपने इज़हार तहसील में सब को काश्तकार मौस्तसी लिखवाया है पस बमूजिब दफ़ा १६७ बाब ८ ताज़ीरात हिन्द पटवारी मजकूर लायक तदारुक है इसवास्ते अर्जी ज़ुज़ूर में गुज़रानकर उम्मेदवार हूँ कि तलबी पटवारी की होकर इल्लत मजकूर बाला में सज़ा होवे ता-कि फिर कोई ऐसी हरकत न करे ॥

फ़िदवियान फ़कीरचंद व नानकराम हिस्सादारान
मौजे ऊलम्बी खुर्द परगना खंडोली मारुजे ८ जून
सन १८६३ ई०

गरीब परवर सलामत

फ़िदवी नालिश बनालेने एक खिड़की जदीद बनाम मुसम्मा किशना ब्राह्मण साकिन मेरठ मुहल्ला चाह शिकिस्ता ब-कायदे कानून सन १८४० ई० अदालत फ़ौजदारी ज़िले मेरठ में गुज़रानता है और बयान उसका यह है कि फ़िदवी अर्से ८ महीने से पहाड़ मनसूरी पर वास्ते कारबार दूकानदारी के आया है पीछे फ़िदवी के १० रोज़ का अर्सा गुज़रा कि किशना मजकूर ने एक खिड़की जदीद रोबस्मकान ज़नाने के तैयार की है उसकी तैयारी से निहायत बेपर्दगी मकान फ़िदवी की है और जो मर्दुमान खाने फ़िदवी ने खिड़की बनाने को मना किया तो उसने हज़ारे गालियां दीं और मुस्तैद फ़ौजदारी हुम्मा फ़िदवी के मकान

पर कोई मर्द सिवाय फिदवी के नहीं है फ़क़त एक भार्द जिसकी उमर १० बरस की है ऊपर मकान के मौजूद है और बाकी मस्तरात रहती हैं वह बसबब दहशत और ख़ौफ़ जान अपनी के ख़ामोश रहती मुस-
म्मा किशान ने ऐसी ज़बरदस्ती ऊपर फिदवी के की है कि आज तक
अमलदारी सकार में ऐसा जुल्म किसी पर नहीं हुआ और अमलदारी में
शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं और बनने खिड़की से ज्यादा बे-
पर्दगी मकान फिदवी की है लिहाज़ा अर्ज़ी हाज़ा गुज़रानकर उम्मेदवार हूँ
कि तहकीकात इसकी मारफ़त कोतवाल मेरठ के हम सायगान फिदवी
से फ़रमाकर तदारुक़ फ़रमाया जावे और ज़क़न बनाम कोतवाल मज़-
कूर सादिर होवे कि खिड़की जदीद न बनाने दे और किशाना मज़कूर
आदमी फ़सादी है और हमेशा हर किसी से फ़साद करता रहता है
चुनांचे एक भर्तबा वह अपने भार्द से भी लड़ाया और मुक़द्मा उस
का फ़ौजदारी ज़िले मेरठ में तजवीज़ होकर मुचलका इक़रारी नाम-
बुर्दा से दरबाब नकारने तक़ार लिया गया कि वह दफ़तर हुज़ूर में
मौजूद है और मकान अपना बदचलन आदमियों को किराया देकर
चरस नाजायज़ बिकवाता है और सुबह से शाम तक तीस चालीस
आदमी उसके मकान पर मौजूद रहते हैं और भंग और चरस पी-
कर लावनी गाते हैं हुज़ूर बाला तहकीकात इसकी बख़ूबी फ़रमा
कर ज़क़न बन्द करा देने खिड़की का बनाम कोतवाल मेरठ सादिर
फ़रमावे और हुज़ूर खुद मुलाहिज़ा मकान किशाना मज़कूर का फ़रमावे
ताकि फिदवी इन्साफ़ को पहुँचे और फिदवी इज्जतदार है और उसके
यहां आदमी बदचलन आते हैं और जो ज़स्तरत हाज़िरी फिदवी की हो
तो फिदवी बाद १ महीने के हाज़िर होगा ॥

फिदवी प्यारेलाल साकिन मेरठ मुहल्ला बाह शिकस्ता

अज मुकाम कोह मनसूरी बाजार लंदौर

मास्ते ३१ अगस्त सन् १८५६ ई०

मुहम्मद बख्श वल्द हयात बख्श

मुद्दई

अलह बख्श व अहल्यार व अहमद बख्श

मुद्दआअलेहूम

दावा बिल ब्रादा जरर पड़ंचाने हस्ब दफा ३३४

ताजीरात हिन्द

गरीब परवर सलामत

वाकै २२ जनवरी सन् १८६६ ई० को मुद्दआअलेहूम ने फिदवी को नाहक पकड़ कर लकड़ी से जरर पड़ंचाया कि निशान मुजहिर के चेहरे पर मौजूद हैं रपट इसकी कोतवाली में मुंदरिज कराके मुस्त-
दर्द हूँ कि बाद तहकीकात व मुबूत जुर्म मुद्दआअलेहूम को सजा दी जावे-

फिदवी मुहम्मद बख्श वल्द हयात बख्श मुद्दई

मास्ते २४ जनवरी सन् १८६६ ई०

नाम मौजा	परगना	नाम मुद्दई	नाम मुद्द- आअलेह	किस्म दावी	खुलासा दावा
मेरठ	मेरठ	महमूदखां वल्द मसजुदखां साकिन मेरठ	शरीफखां वल्द हनीफखां बगैर साकि- न मेरठ	मार पीट कर- ना तामीर दी- वार मकान पर	बाद तहकीकात तदारुक फरमा- या जावे.

गरीब परवर सलामत

अर्ज यह है कि मुसम्मा शरीफ़ खां व लतीफ़ खां पिसरान
हनीफ़ खां ने फ़िदवी को वक्त तामीर कराने दीवार अपने मकान के
जो साबिक से शकस्त और मरम्मत तलब थी दंगा व फ़साद कर
के दीवार तामीर शुदा को गिरा दिया और लाठी से फ़िदवी को मारा
चुनांचे निशान ज़रब लाठी सिर पर फ़िदवी के मौजूद हैं चूंकि
फ़िदवी ज़ेरदस्त और मुद्माम्पलेह ज़बरदस्त हैं ताब मुका-
बला नला सका मजबूर रपट थाने में करके नालिशि हूँ कि तह-
कीक़ात होकर मुद्माम्पलेह को तदारुक फ़रमाया जावे ॥

फ़िदवी महमूद खां वल्द मसज्द खां साकिन मेरठ
मासजे ३ नवम्बर सन् १८८३ ई०

राजा सहाय कारपरदाज़ बाबू सीतल बख्श साकिन बाज़ार बढल गंज
मुस्तगीस

बाबू गुसाई साकिन बाज़ार बढल गंज " " " मुल्जिम

दावा तदारुक वर्जुम दफ़ा ४४७ ताजीरात हिन्द

गरीब परवर सलामत

आराजियात लंबरी २३७ व ६६१ व ७४७ वाक़े मौजे
दियानू तादादी ३ बीघा ११ बिस्वा हक़ियत ज़मींदारी हमारे आका की
है और मुल्जिम काशतकार उसका ग़ैर दरबीलकार था चुनांचे
बज़रिये इज़राय कार्रवाई इतलानामा दफ़ा ३६ व दफ़ा ३६ व ४०
ऐक १२ सन् १८८१ ई० व ज़सूल डिगरी बहक़ आका मुस्तगीस के
तामील दरख़ल दिहानी अदालत से इस हुक़म के साथ होगई कि फ़स्त
ख़रीफ़ काशता अपने को मुल्जिम काटकर आराजियात मुन्दरजे

सदर से बेदखल होजावे चुनांचे मुल्जिम ने अपनी फस्त को काट
 लिया आकाय मुस्तगी स ब हुसूल हुक दखिल बिहानी उस पर
 कब्जा करके वास्ते बोने फस्त रब्बी के जुतवाता रहा असी ८ रोज का
 हुआ कि बर वक्त बोये जाने जो वगैरह के मुल्जिम और आदमी
 साथ लेकर खेत पर आया और बोने से रोक दिया और आप उस
 आराजियात में अपनी तरफ से जो व मसूर वगैरह बोदी और बना
 करने पर आमादा तकारर हुआ चूंकि यह फेल मुल्जिम का नाजा-
 यज है इसवास्ते उम्मेदवार हूं कि बाद तहकीकात तदारुक फरमाया
 जावे ॥

फिदवी राजा सहाय कारपरदाज
 मासजे १८ अकटूर सन् १८८३ ई०

खुदा बख्श वल्द गुलाम अब्बास कौम और ब पेशा नोकरी
 साकिन मुहल्ला अशरफाबाद बाकै लखनऊ

मुद्दई

बनाम

ललताप्रसाद वल्द गुरूप्रसाद साकिन लखनऊ मुद्द-
 आअलेह लंबर १ व भगवन्तसिंह वल्द शिवदीन सिंह
 साकिन रामदासपुर मुद्दआअलेह लंबर २ व नवी बख्श
 वल्द नामालूम साकिन पिपरी सालपुर मुद्दआअलेह लंबर ३
 व बलदेव वल्द शिव बख्श साकिन मौजे निगुहां मुद्दआ-
 अलेह लंबर ४ व हनुमान वल्द नामालूम मुद्दआअलेह लंबर ५ मुद्दआअलेह

दावा इस्व मनशा दफे ३२३ ताजी रात हिन्द

गरीब परवर सलामत

बाकै तारीख ८ सितंबर सन् हाल वक्त ७ बजे दिनकी

मुद्गप्ताश्लेहम् मज्जकूर लाठी बांधे हुए मौजे रामदासपुर में थाने पर
 जहां मुद्दई मिन्जानिब ज़हूरअली हिस्सादार ॥ के रहता है आये और
 नवीबरख्श मुद्गप्ताश्लेः लंबर ३ ने हाथ मुद्दई का खींचकर छप्पर के
 बाहर डाल दिया और मुसम्मा लालताप्रसाद मुद्गप्ताश्लेः लंबर १ ने जो
 अस्ल मुफ़सिद और बानी इस फ़साद का है एक लट्टू सिर पर मुद्दई के
 दूसरे जोर से मारा कि सिर फट गया और हड्डी सिर की टूट गई और
 मुसम्मा भगवन्तसिंह ने एक लाठी थाने पर मारी कि उसको मेहदी हसन
 मेरे लड़के ने रोका भगवन्तसिंह ने उसको उठाकर दबोचा और गला
 ऐसा दबाया करीब था कि आंखें निकल पड़े और मुसम्मा लालताप्र-
 साद और नवीबरख्श और हनूमान हर से मुद्गप्ताश्लेहम् मुद्दई को
 लाठियों से बराबर मारते रहे कि इस घर से मैं मददअली और मुबारक-
 अली ने आकर मेहदी हसन को भगवन्तसिंह से और मुद्दई को ज़रब
 लाठियों से बचाया और हर किस्म से समझाया अगर ये लोग उस वक्त
 न पड़चंजाते तो ज़रूर मुद्गप्ताश्लेहम् मुद्दई को मार डालते बाद उस
 के मुद्दई बेहोश होगया यह मुक्तको थाने मोहनलालगंज में सवार
 कराके लाये मुद्दई ने रपट दर्ज करा दी और वजह अदावत मुद्गप्ताश्ले-
 हम् से यह है कि मुद्दई का रुपया जिम्मे लालताप्रसाद बाबत हिसाब
 फ़हमी बवजह ठेकेदारी बाकी है जिसकी नालिश उसी रोज़ करनेवाला
 था यह खबर लालताप्रसाद ने आकर अपने नोकर लाकर मारपीट की
 और नालिश से बाज़ रखवा अर्जी दावा बगैरह लिखे हुए सब मेरे पास
 तैयार थे और यह मन्शाथा कि दस्तावेज़ ठेका छीन लें और सब
 मुद्गप्ताश्लेहम् बाबत दंगा फ़साद के सजायाब हो चुके हैं जिसके
 मुकदमात अदालत में मौजूद हैं वक्त इस्तिफ़सार बयान करूंगा ॥

फ़िदवी खुदाबरख्श वल्द गुलामअब्बास बकलम खुद

मारुजे र्द सितम्बर सन् १८७८ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाबशाली नालिष् फिदवी की बनाम मुसम्मियान जैराम व जालिमसिंह साकिन बुदंधा व मलका व भिकारी व हज्जू व दौलत व दरिया मुद्शाश्लेहूम साकिनान गांव रखोकेला थाना बेगमाबाद के यह है कि आज चार घड़ी दिन चढ़े मिनजुमला मुद्शाश्लेहूम के जालिमसिंह मुद्शाश्लेहूम खेत फिदवी को बैल व घोड़े से चरा रहा था फिदवी ने मुद्शाश्लेहूम मजकूर को मना किया इस सबब से मुद्शाश्लेहूम मजकूर मारने लगे कि मैं घर को भागा मुद्शाश्लेहूम मेरे पीछे भागे और मेरे घर में घुसकर मुझको लाठी से मारा और असबाब लूट कर चले गये मैंने शोर और गुल किया इसमें आदमी गांव के आ पहुंचे और उन्होंने यह हाल अपनी आंख से देखा है और इतिला इसकी थाने में की मगर कोई पुरसा हाल का न हुआ अब बउम्मेद इन्साफ हुजूर में सवाल गुजरान कर उम्मेदवार हूं कि बराह खाविन्दी तहकीकात इस्तगाल से फिदवी की होकर तदारुक सरकार से हो ॥

तफ्सील असबाब थाली २ लोटा १ डुक्का १ चादर सफेद १ पगड़ी १

फिदवी फोमा साकिन रखोकेला थाने बेगमाबाद

मारुजे ११ अगस्त सन् १८५५ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाबशाली हुजूरबाला ने जो हस्ब इस्तगाल से बुद्धसिंह कौरह मुद्ईयान हिस्सेदारान गांव लुत्फुल्लापुर थाने त्रिनचटगाढ़ बडल्लत फरेब मुफ दादरबा को मुकैयद हवालात फरमाया है हाल

यह है कि फिदवी महज नाकदी गुनाह है क्योंकि फिदवी ने सवाल
 महकमे मुनसफी हापड़ में गुजराना था कि मुसम्मात खुशालो जिन्दा
 है और नालिश दायर कदी मुसम्मात मजकूर सही है मुनसिफ
 साहिब ने उस पर कुछ इल्तिफात न फरमाया और मुकद्दमे को
 हसब बयान बुधसिंह वगैरह के जेर तजवीज से खारिज किया
 इस सूरत में निहायत हकतलफी मुसम्मात मजकूर की हुई अगर
 मुनसिफ साहब बराह खाविन्दी इजहार गवाहान निसबत जिन्दा होने मुस
 म्मात मजकूर के कलमबन्द फरमाते तो यकीन था कि इस तरहका
 फतूर बे सरोपा बुधसिंह वगैरह की जानिब से न उठता अब दुन्साफ
 ऊजूर से यकीन है कि दरोग को फरोग न होगा इसलिये अजी हाजा
 ऊजूर में गुजरान कर उम्मेदवार हूं कि बराह खाविन्दी तलवी गवाहान
 की मारफत यानेदार बिनचटगढ़ के फरमा के इजहार कलमबन्द फर
 माये जावे ताके हाल रास्तगोई फिदवी का जाहिर होजावे या मारफत
 यानेदार मजकूर के तहकीकात जिन्दा होने मुसम्मात की फरमाई जावे ॥

फिदवी जवाहिर साकिन लुतफुल्लापुर थाने बिनचटगढ़

मारुजे २० अगस्त सन् १८६५ ई०

गरीब परवर सलामत

बमुकद्मा जवाहरलाल वा शिवलाल सायलान दावी
 खियानत मुजरिमाना के यह जवाब बमरातिब जेल गुजारिषा है
 कि दादखा दलाली करता है और महाजनों से माल अपने नाम लि
 ख वाता है और बेचकर कीमत महाजन को देदेता है और जो नफा
 होता है अपने सर्फ में लाता है इसी तरह मुद्दयान से माल लाया
 और बेचने की क्रिये में था अभी माल बिक नहीं चुकाया कि इसी

अपने में मुक्त से और महाजन से तकरार होगई चुनाचे इस की
इतिला भी थाने में लिखवा दी है अब मुद्दयान ने बसबब अदावत
के यह नालिश करके मुझे हवालात में करा दिया है जनाबशाली
माल मौजूद है और बरबक्त जाने पुलिसके खुद फ़िदवी ने फ़ौरन
सब माल हवाले कर दिया था और पहिले ही इस नालिश की
खबर पाकर मुद्दयान को देता था नही मालूम कि इस मुकद्दमेमें
क्या बद दिया नती हुई और कौनसा जुर्म तसरुफ़ बेजा या खयानत
मुजरिमाना का फ़िदवी से सादिर हुआ कि ऐसी बे बुनयाद और
महज खिलाफ़ नालिश पर मैं गारद में हूं इन्साफ़ इसका मुत-
अल्लिक बजात हुआ है और सबूत के वास्ते गवाह व माल व वही
खाता मुद्दयान का मौजूद है उम्मेदवार हूं कि रिहाई पाऊं और
मुद्दयान को तदारुक बवजह नालिश खिलाफ़ के फ़रमाया जावे ॥

फ़िदवी शिव प्रसाद मुद्दशाअले

मार्गजे २७ जनवरी सन् १२६५ ई०

गरीब परवर सलामत

खुदावन्दा हाल तबही व बरबादी १२ बिस्वा गांव कछ
जिम्मीदारी फ़िदवी का हुआ वाला पर बरबबी रेशन है गुजरिश
यह है कि गारत गरान साकिनान गांव सिवाल व कुराली वगैरह ने
इस कदर गांव को तबाह किया है कि आज तक सरत आबादी की
नहीं हुई और हुआ साहिब कलेकर बहादुर साबिक ने हुक्म सादिर
फ़रमाया है कि जर मालगुजारी फ़स्त खरीफ़ सन् १२६५ फ़सली व
रबी फ़स्त मजकूर का लंबरदार से लिया जावेगा बन्दा नवाजा हुक्म
हाकिमान सर आंखों पर है लेकिन फ़िदवी सरत हेरान है क्यों कि

बरखौफ गारत गरान आबादी गांव की नहीं हो सक्ती और जो कोई
 काश्तकार आबाद होना चाहता है गारत गर आबाद नहीं होने देते
 हुज़ूर गौर फरमावे कि सबील जर मालगुजारी मुनहसिर है उत्पर
 आबादी गांव और चैन तरदुद के और आबादी गांव की बिदून मदद
 हाकिमों के गैर मुमकिन है लिहाजा फिदवी बिचारा उम्मेदवार इस
 बात का है कि बनजर खाविन्दी हुक्म बनाम तहसीलदार हुज़ूर
 तहसील सादिर फरमाया जावे कि व मदद एक सवार के आबादी गांव
 की करा देवे ताकि नौबत चैन तरदुद फसल खरीफ सन् १२६६ फसली
 की हो आयन्दा हुज़ूर मालिक व मुख्तार हैं ॥

फिदवी भदून ज़िमीदार मौज़ा कछ

परगना हुज़ूर तहसील

मारुजे १३ मई सन् १८५८ ई०

गरीब परवर सलामत

मुसम्मा बख्तावरसिंह ठाकुर साकिन मौज़े ज़ाफराबाद ने एक
 भैंस भेरी अर्सी ८ रोज़ का इश्रा कि व कीमत २० रुपये के खरीद की थी
 मिन्जुमला उनके ५ रुपये जुम्मा नामबर्दा बाकी थे आज फिदवी रुपये
 के तकाजे को उसके पास गया तो नामबुर्दे ने अज़राह बद मामलगी
 मुम्को सैकड़ों गालियां दी और एक लाठी मेरे मोटे पर और एक मेरी
 पीठ पर मारी कि लाठियों की चोट से दोनों जगह सूजन चढ़ गई है
 दूसलिये यह अर्जी बउम्मेद तदारुक मुद्आअला हुज़ूर में गुजरान कर
 उम्मेदवार हूं कि बाद तहकीकात और सुबूत जुर्म मुद्आअले को
 सज़ा दी जाय और गवाह सुबूत दावी मौजूद हैं जिस वक्त हुज़ूर
 तलब करेंगे हाज़िर कस्तंगा ॥

अनंदीराम कौम जाट साकिन जाफराबाद
मारुजे ४ नवम्बर सन् १८८३ ई०

नाम स्टेशन	नाम परगना	नाम मौजा	नाम सायल	नाम मुद्दशा- अले	खुलासा दरखास्त वास्ते सजा पाने मुद्दशाअलेहूम
महम्मदा- बाद	महम्मदा- बाद	चक सिवाला	रछपाल दुबे	संगमराम व देवीराम वगैरह	हस्बदफा ४४७ व ४२३ व ४२६ ताजी- रात हिन्द

गरीब परवर सलामत

वास्ते सजा पाने मुसम्मियान संगमराम वगैरह साकिन मौजे नौसेरा बमूजिब दफा ४४७ व ३२३ व ४२६ ताजीरातहिन्द इस बयान से मुस्लीम हूं कि आराजी महदूदे जेल में संगमराम गढ़ा खुदवाता था कि पहिले इसके हमारे आका की तरफ से जो महकमे माल में दावा होकर इस आराजी से संगमराम वगैरह बे दरखल किये गये और हमारे आका को दरखल दिलाया गया और जब हमारी तरफ से नुकसान का दावा दिवानी में हुआ तब मुद्दशाअलेहूम ने बयान किया कि चूंकि अब हम फेल नाजायज की वजह से आराजी से बेदखल और बेतअल्लुक किये गये और गढ़ा ज़मींदार साबिक के वक्त में खोदा था सो अब हर्जा नहीं देना चाहिये इस अब वह ज़मीन हमारे ज़मींदार की है और बकजह नहमवार कराने उस ज़मीन के हमारे आका का बहुत

नुकसान है इसलिये हम मुस्तगीस २२ सितम्बर सन् १८८३ ईस्वी
सनीचर के दिन जमीन महदूदा जेल को हमवार कराते थे कि मुद्-
आअलेहूम मये दस पंद्रह आदमियों के आये और काम रोक दिया
और लात मुक्के से मार पीट की रफ्त थाने में कर दी और दस फेल
नाजायज़ मुद्आअलेहूम से हमारे आका का बहुत नुकसान हुआ
कि अब बिला हमवार होने उस जमीन के काफ़त नहीं हो सकती लिहाज़ा
दरखास्त हाज़ा गुज़रान्कर उम्मेदवार हूँ कि बाद तहकीकात के मुद्-
आअलेहूम को सज़ा दी जावे ॥

चौहद्दी

उत्तर	दखिन	पूर्व	पश्चिम
खेतआका मुस्तगीस	बाग संगमराम	खेतआका मुस्तगीस	सिवान सोतरा
फिदवी रछपालदुबे नौकर सालिगराम			
व दुर्गाराम - जमीदारान चक असदुल्ला			
मारुजे ४ सितम्बर सन् १८८३ ई०			

गरीब परवर सलामत

बतारीख इमरोज़ा कैसरखां सवार पुलिस मुतअदयना चौकी
थाने हाज़ा दो कस मुश्तबा गिरफ़ार करके थाने हाज़ा में लाया बरतिक्क उस
के जो नाम बुर्दगान से पूछा गया कि तुम कौन हो और कहाँ से आये हो
एक शरत्स ने नाम अपना शरीफ़खां वल्द हनीफ़खां साकिन इलाके जेह-
लम और आना अपना डेरा गाज़ीखां से और जाना बसिस्त डेरार्दसमाईल
खां और दूसरे ने नाम अपना डालसिंह वल्द खूबचन्द कौमलुहार सा-
किन साबिक गुड़गांवा और आना अपना तरफ मिट्टनकोट से बाद पड़-
चाने डाक्टर चक साहब के और जाना बसिस्त डेर इसमाईलखां के बउम्मेद

नौकरी बतलाया और चिट्ठी अंगरेजी भी कि जो डाक्टर साहबसे हासिल
हुई थी दिखलाई मगर चूंकि अंगरेजी खां कोई इस जगह मौजूद न
था कुछ पता न मिला और बाद अजों जो किताब डालिया मफरुरान
देखी गई तो निस्बत शरीफ खां मारवूज लंबर १ के दूश्तबाह मफ-
रुरी का अज पलटन नौ कि जो जेहलम से भरती हुय के आई थी
पाया गया यानी एक शख्स हयात खां नामी सिपाही मफरुर है और
निस्बत लंबर २ के भी एक गुमान है कि रजमत पंजुम डेरे इस्मा-
ईल खां से एक साईस सदरुद्दीन का फरार हुआ है चूंकि रिहाई दोनों
की बिदून लेने जमानत के थाने से मुनासिब न थी लिहाजा दोनों
को रवाना हुजूर किया गया है ॥

फिदवी उमराव अली थानेदार

मारुजे २७ अक्टूबर सन् १८५७ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाब अली कबूल अजीं व तारीख १५ जूलाई सन् १८६३
ई० हेड कानिस्टबिल खंडौली का रुक्का मारफत आविद खां कानि-
स्टबिल के फिदवी के पास दूस मजमून का पहुंचा कि बाहिर्बेग और कादिरबेग
जमीदारान मौजा जटपुरा से खेत की बाबत बाहम तकार होने
वाली है व मुजरिद बतला थाना दोनों को हिदायत रहबरी अदा-
लत की करदी गई थी लेकिन चूंकि नाम बर्दान बाज नही आते
और बाहम अदावत शदीद रखते हैं और बार बार उनकी शिका-
यत आती है लिहाजा अजीं हाजा हुजूर में तरसील करके उम्मेदवार
हूं कि तरफेन का मुचलका हुजूर से लिया जाय ता कि इन्सदार
फसाद होवे और ताकीद हेड कानिस्टबिल को जित्त निगरां

रहने तक़ार के करदी गई ज़्यादा हद्द अदब ॥

फ़िदवी फैज़ुल्लाखांचीफ़ कानिस्टविल

मारुजे २२ जूलाई सन् १८६३ ई०

गरीब परवर सलामत

फ़िदवी ने नालिश बनाम मोहनसिंह इल्लत करने मार
पीट के हुज़ूर में दायर की थी कि वह मुक़द्मा ज़ेर तजवीज़ है अब
फ़िदवी को मरदुमान हमसाया ने फ़हमाइश की कि आपसमें राज़ी हो
जाओ इस वजह से राज़ीनामा दाख़िल करके उम्मेदवार हूँ कि व मन-
जूरी राज़ीनामा मुक़द्मा अदालत से ख़ारिज फ़रमाया जावे वाजिबथा
अर्ज किया ज़्यादा हद्द अदब ॥

फ़िदवी शेख़ मुहम्मद अली साकिन मुहल्ला चौक

कागज़ियान मारुजे १६ मई सन् १८६६ ई०

गरीब परवर सलामत

फ़िदवी ने नालिश बइल्लत ज़दव कोब बनाम सोहनलाल
व मनोहरलाल वग़ैरह मुद्दाअलेहूम दायर की थी और वह मुक़द्मा
हुज़ूर के बज़लास में ज़ेर तजवीज़ है चूंकि अहल मुहल्ला और रई-
सान हमसाया ने फ़हमाइश करके फ़रीकेन में बाहम सुलह करादी
लिहाज़ा फ़िदवी अपने दावे से बाज़ आकर दरखास्त हाज़ा बतौर राज़ी-
नामा पेश करके उम्मेदवार है कि बाद मनजूरी इसके मुक़द्मा अदा-
लत से ख़ारिज किया जावे ॥

फ़िदवी मोहनलाल मुद्दई

मारुजे ४ अगस्त सन् १८७६ ई०

गरीब परवर सलामत

कल तारीख ६ अगस्त थी बमुकद्मा मकुंदी हज्जाम ब
नाम मुवक्किलान मेरे हुजूर से हुकम हाज़िर लाने गवाहान सफ़ाई
अपने के सादिर हुश्रा जनाबशाली हरचंद मुवक्किलान ने गवाहों को
वास्ते हाज़िरी अदालत के लाना चाहा लेकिन वह लोग नहीं आते इस
सूरत में उम्मेदवार हूं कि सम्मन बनाम गवाहान मुन्दरजे इज़हार
मुवक्किलान के सादिर फ़रमाया जावे ॥

फ़िदवी जगूलाल मुख्तार कार मूमकलाल
व वाहिदशली व रामचरन व लछ्मन वगैरः
मुद्अप्पलेहूम
मारुजे ७ अगस्त सन् १८६६ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाबशाली हाल यह है कि शदी फ़िदविया की साथ
रामसिंह साकिन मौजे अनजुली इलाके कोतवाली मेरठ के हुर्द थी
अर्सा १० बरस का हुश्रा कि शौहर फ़िदविया ब कज़ा इलाही मर गया
और फ़िदविया जैसीराम के मकान में रहकर ओकात गुज़ारी करती
थी चूंकि जैसीराम मजकूर ने बराह फ़ारेब जुमला असबाब शौहर
फ़िदविया का लेलिया और अपने तसरुफ़ में लाया और जो फ़िदविया
ने तलब किया तो फ़िदविया को घर से निकाल दिया बल्कि दरपै
मार पीट हुश्रा लिहाज़ा बरवोफ़ नामबुर्दी के सकूनत अपनी औरंगाबाद
इलाके कोतवाली मेरठ में इख्तियार की मगर फिर भी वह कोतह-
अंदेश दंगा व फ़साद से बाज़ नहीं आता चूंकि फ़िदविया बेवा और
मुहताज है लिहाज़ा अर्जी हाज़ा हुजूर बाला में गुज़रान कर उम्मेदवार

हूं कि बराह खाविन्दी हुक्म बनाम कोतवाल सादिर फरमाया जावे कि
मुद्दामाले को दंगा और फसाद से बाज रखे ॥

फिदविया मुसम्मात प्रानो बेवा

मारुजे ३० अक्टूबर सन् १८६० ई०

गरीब परवर सलामत

खुदावन्दा आज १० बजे दिन के मुसम्मा बिहारीलाल बल्द गुलजा-
रीलाल कौम बङ्काल साकिन मौजा खैरागढ़ ने हाजिर थाना होकर
बयान किया कि रात को चार आदमी नामालूम दो रास बैल मेरे कीमती
८४ रुपये चुरा ले गये हैं और सुराग उनका और मुजरिमों का मौके
वारदात से तीन कोस के फासले पर मौजे मकनापुर में मिलता है बल्कि
करीब मौजे मजकूर के मुसम्मियान फकीरा व हनूमान ने २ बैल चार
आदमियों को होंके लिये जाते हुए देखा भी है कोशिश सुराग बरारी
की कीजावे इसलिये फिदवीने मुनवरखा का निस्टबिल को सुराग रसा-
नी के वास्ते तईनात कर दिया इत्तलाअन गुजारिश परदाज हूं जो
कुछ डाल होगा पीछे से काररवाई की जायगी ॥

फिदवी अजीज उद्दीन थानेदार

मारुजे २८ जून सन् १८६६ ई०

३१ अगस्त सन् १८८३ ई०	तारीख गुजरने दर-
रूपा व शंकरलाल	खास्त
सरकार भलिका मौज्जमा कैसरहिन्द	नाम अपीलांट
जुर्म दफा ४४७ व १०८ ताजीरातहिन्द	नाम रिसपांडेन्ट
बाबू माधोप्रसाद मेजिस्ट्रेट दर्जे अव्वल	किस मुकद्मा
करने सजा कैद सरस और ५० रुपया जुर्माना अपीलांट नंबर १ पर और २०० रुप- या जुर्माना अपील नं० २ पर	नाम हाकिम मुजबिज
१३ अगस्त सन् १८८३	खुलासा हुक्म जिसकी नाराजी से अपील है
१०	तारीख हुक्म अपरी

अपीलांट मजकूर बाला व नाराजी फैसला बाबू माधो प्रसाद मेजिस्ट्रेट दर्जे अव्वल शाहजहां पर मुर्वरखे १३ अगस्त सन् १८८३ ई० मुद्राअपर करने सजा कैद ३ महीने और ५० रु० जुर्माना व जुर्म दफा ४४७ अपीलांट नंबर १ और २०० रु० जुर्माना व जुर्म दफा १०८ ताजीरातहिन्द अपीलांट नंबर २ व अदालत सिपानजज बहादुर बवजूह जेल अपील करते हैं ।

१— शहादत सुबूत से साबित नहीं है कि बाग मुतनाज्जा मिल्कियत भवानी का है सजा खिलाफ कानून है ।

२— रहिन्नामा दरखली व बैनामा व इन्तरवाब लंबर बाग और इज्-हार पटवारी से जो बरक्त दाखिल खारिज और भी इस मुकद्मे में सरकार ने खुद तलब करके तहरीर किया बखूबी साबित है कि बाग मिल्कियत व कब्ज व दरखल अपीलांट लंबर २ का है इस सूरत में सजा अपीलांट लंबर १ व जुर्म दफा ४४७ व अपीलांट लंबर २ व जुर्म दफा १०८ ताजीरातहिन्द कानून खिलाफ है ।

३— अदालत मातहत को तसलीम है कि शंकरलाल अपीलांट मुद्रतरी मौजा बिक्रमपुर जिसमें बाग मुतनाज्जा बाँके हैं ग्राम तोड़ने

की हिदायत करके शाहजहांपूर चला आया और पहले दूसरे कभी किसी किस्म का भगड़ा बाबत बाग दरमियान भवानी व अपीलान्ट नहीं हुआ इस सूरत में दफा १०८ की सजा देना खिलाफ कानून है।

अपील लंबर २५४ सन् १८८३ ई०

व अदालत साहिब सिशनैज बहादुर जिला सहारनपूर
गुलाम मुर्तजा व वजीरखां व इसमाईलखां व अबदुल्लाखां
कैदियान अपीलान्ट

व नाम सरकार कैसरहिन्द

अपील व नाराजी हुकम मुन्शी इनायतअली साहिब डिप्टी
मेजिस्ट्रेट बहादुर जिला सहारनपूर महकूमा २६ नवम्बर
सन् १८८३ ई० मुशअर सदूर हुकम निस्बत लंबर १ आठ
महीने कैद सरख्त व निस्बत लंबर २ लगायत लम्बर ४
६, ६, महीने कैद सरख्त हस्ब दफा १४७ ताजीरातहिन्द
व वजूहात जेल गुजरानते हैं।

१— शहादत सुबूत २६ नफर खुद गरज का नाकाफी होना स्बकार
४ अक्टूबर सन् १८८३ ई० इजलासी मुजविज से साबित है लिहा-
जा शहादत मजकूर पर तजवीज सुबूत जुर्म की बेजा हुई।

२— वक्त वाकै होने वारदात के हिनडन नदी का तुगयानी पर होना
और ब इतबार तहरीर रोजनामचा पुलिस मुजविज साहिब का तस्लीम
करना और शहादत मुसम्मियान खुदाबरखा व अलाबरखा इसी हुजत
से नामोतबर करार देना जबकि मुसल्लमा मुजविज है तो हम मुल्-
जिमान का नदी से पार उतरना और लड़ाई में शरीक तजवीज करना
किसी तरह सही नहीं होसक्ता तजवीज गलत है।

३- वजीरखां मुल्जिम का कोई रिश्ता मुहम्मदशेरखां गवाह से नहीं है नमालूम मुजबिज साहिब ने उसकी रिश्तेदारी उसके इजहार के खिलाफ कहां से लिख दी उसके गवाहों की शहादत पर भी कोई जिरह नहीं की गई ।

४- इसमार्दूलखां व अबदुल्लाखां मुल्जिमों के गवाहों से कैलासपुर होना इसमार्दूलखां का और मुहीउद्दीनपुर होना अबदुल्लाखां का ब-वक्त वाकै होने वारदात के साबित है ।

५- थाने की रफ्त और हेड मुहरीरि के इजहार से जो बरोज वारदात बाद छः बजे सुबह के गुलाम मुर्तजा चौकीदार का नागल से कपासर को रवाना होना और फिर बावजूद लाइल्मी वारदात के ऐनवक्त पर हस्त बयान हरनाम मुस्तगीस व फैयाज अली मौके वारदात पर पंद्रह जाना बरेतबार रफ्तार के खिलाफ वाकै मालूम होता है लिहाजा तजवीज खिलाफ स्त्यदाद बेजा हुई ।

६- गुलाम मुर्तजा चौकीदार को मुद्दियान खुद गरज का व अदा-वत गुलाम सादात उसके बाप और मुहम्मद बाकी के शामिल लड़ाई बयान करना अदावतन जाहिर है मुजबिज का बिला गौर हालात के मुल्जिम करार देना इन्साफ के खिलाफ है ॥

फिदवियान गुलाम मुर्तजा व वजीरखां वगेरह
कैदियान अपीलान्ट जिला सहारनपूर
मारुजे १३ दिसम्बर सन् १९८३ ई०

गरीब परवर सलामत

मुवक्किलान बनारजी हुक्म जनाब साहिब डिप्टी मेजि-
स्ट्रेट बहादुर मुकाम बाड़ा मरकूमै २६ फरवरी सन् १९८६ ई० व-

मुकद्दमे भागोसिंह मुद्दई बनाम मुवक्किलान मुद्दआश्लेहुम इल्लत
मुकसान रसानी हुक्म देने ५० रु० जुरमाना वरना एक एक माह कैद
सादिर फरमाया है ऊजूर में दरखास्त हाजा व मुएद दफा ४३४
ऐक २५ सन १८६१ ई० व वजह जेल दाखिल करते हैं ।

१- वजहार मुद्दई मरकूमे १५ जनवरी सन १८६१ ई० व नीज
रखकार हाकिम से जाहिर है कि इस मुकद्दमे में असल तकार
हकियत व मदा खलत जमीन के है चुनांचे वजहार मुद्दई से
बे दरखली उसकी जमीन और अलंग से कि जिस पर मिट्टी दी गई
है जाहिर है और मुवक्किलान को भी निसबत जमीन और अलंग
मजकूर दावा हकियत और दरखल का है ऐसी हालत में वमूजिब
सरकपूलर लंबर १८ तारीख १२ दिसम्बर सन १८६१ ई० यह
मुकद्दमा लायक समाप्त अदालत फौजदारी के नही था खिलाफ
उसके हुक्म सजा का बेजाबता है ।

२- हाकिम ममदूह इरकाम फरमाते हैं कि मुद्दआश्लेहुम दावा
दरखलकारी का रखते हैं मगर कोई वजह कामिल नहीं रखते हैं
खुदावन्दा ऐसी तजवीज से हाकिम ममदूह के जरूर दरखल और
हकियत में मुवक्किलान के साफ पैदा इन्जाबलिकब जरिया ऐसी तज-
वीज के जो हुक्म सजा सादिर हुआ मूजिब बे दरखली मुवक्किलान
का होगा सीगे जुर्म से ऐसी तजवीज खिलाफ कानून है ।

३- अगर यह मुकद्दमा बाब २२ ऐक २५ सन १८६१ ई० में दायर
होकर सबूत तलब होता तो बेशक मुवक्किलान की तरफ से बेहतर
सबूत पेश किया जाता जो यह मुकद्दमा लायक तजवीज सीगे जरा-
यम के नहीं था और न मुवक्किलान से सबूत मदा खलत तलब
हुआ लिहाजा यह तजवीज व सबब न दाखिल करने किसी सबूत

के जो हुक्म सज़ा सादिर फरमाया है नादुरुस्त है ।

४ - यह मुकद्मा मुतअल्लिक नुकसान रसानी भी करार नहीं पासक्ता है क्योंकि जिस कदर तमसीलें ऐक ४५ सन् १८६० ई० में मुन्दरज हैं उसमें इस किस्म का मुकद्मा दाखिल नहीं है और न जुर्म नुकसान रसानी का बसुराद दफा ४२६ के कायम होसक्ता है चूंकि ऐसी तजवीज और हुक्म से बड़ा नुकसान मुवक्किलान का है इसलिये दरखास्त हाज़ा गुज़रान कर उम्मेदवार हैं कि दावरसी फरमाई जावे ॥

फ़िदवी बिहारीलाल मुख्तार मिन्जानिब
शंभूधर और भालासिंह सायलान
मारुजे र्द मार्च सन् १८६६ ई०

गरीब परवर सलामत

दरखास्त अपील बनाराजी हुक्म राय फकीरचंद राय बहादुर
डिप्टी मेजिस्ट्रेट व इक्वितियार मेजिस्ट्रेट इल्लत खयानत हस्ब
दफा ४०६ मसदूरे २ जनवरी सन् १८६६ ई० बमियाद छः महीने
कैद सरह

खुदावन्दा फ़िदवी महज़ बेजुर्म और बे कसूर है और
सबब बेजुर्मी का यह है कि मुक्त से मिर्ज़ापुर में मुद्दई से
मुकद्मात हुए वहां पर मुद्दई ने यह कहा कि हमारी शादी
करादोगे तो हम तुमको १००० रु० देवेंगे चुनांचे बमूजिब इक-
रार के फ़िदवी ने शादी करवादी मगर सिवाय २ जंजीर के और
कुछ फ़िदवी को नहीं दिया फिर बख़ौफ़ इस बात के कि बिरादरी
में बद्नाम करेगा इत्तहाम चोरी निसबत उन्हीं २ जंजीरों के लगाया

पस इस सूरत में उम्मेदवार नज़र खाविन्दी का है कि व मुलाहिजे नकल हुकम आखिर मशमूले दरखास्त हाज़ा व मुलाहिजे कागज़ात मिसिल रिहार्ड फ़िदवी की फ़रमाई जावे ॥

फ़िदवी किशोरीलाल कैदी

मारुजे ५ फ़रवरी सन् १८६६ ई०

दरखास्त नज़रसानी

लाला ब्रजभूखनलाल कारपरदाज़ राजा शंभूनरायनसिंह ज़मींदार
मौज़ा भुरिया परगना मंडायाहुं सायल
रंगई तिवारी इत्तला दिहन्दा हाकिम मातहत साकिन रामनगरपरगना
मंडायाहुं मसयूलअलै

लाला ब्रजभूखनलाल मज़कूर दरखास्त नज़रसानी बमुराद दफ़ा
४३५ ऐक १० सन् १८८२ ई० बाबत फ़ैसला निपट साहब जन्त
मेजिस्ट्रेट बहादुर मसदूरे २१ जनवरी सन् १८८४ ई० व मुकद्दमा
मुसम्मात महारानी व नाम जगन तिवारी वगैरह बूल्जाम दफ़ा १०७
ऐक १० सन् १८८२ ई० व गरज़ मंसूखी ज़ामिनी १०० रु० और मुच-
लका २०० रु० मुहकमे में जनाब साहिब सिशनजज बहादुर ज़िले
जौनपूर के गुज़रानता है ।

१- सायल मुजरिम है जुर्म दफ़ा १०७ उत्तर सायलके साबित
नहीं है ।

२- बर बिनाय बयान रंगई तिवारी मुखालिफ़ मेरे के हाकिम
मातहतने आशनाई मुसम्मात महारानी की तजवीज़ करके मुचलका
व ज़मानत तादादी २०० रु० व १०० रु० का लिया है कि जिस से
मुजरिमी सायल और सबब फ़साद आयन्दा मुतसव्वर है ।

३- सायल कारपरदाज तारीख मुकद्दमा मजकूर को वास्ते दर्याफ्त काररवाई मुकद्दमा आका अपनेकेजोब नाम मुसम्मात दुलिया महकमे आतहत में दायर था और भी वास्ते दायर करने मुकद्दमा काटने जंगल आका अपने के ब नाम अजुध्या वगैरह हाज़िर कचेहरी रहा था ॥

फिदवी ब्रजभूखनलाल सायल
मारुजे २८ फ़रवरी सन् १८८४ ई०

अपील ब अदालत सिशनजज बहादुर गोरखपूर
बाबू घोंघा साही अपीलान्ट
राहत साही कारपरदाज बाबू सीतलबख्श साही .. रिसपांडेन्ट

दरखास्त मुआयने मिसल बमूजिब दफा ३३५ जाबते फौजदारी सन् १८८२ ई० व नीज़ ब मुराद दफा ३३८ ऐक मजकूर वास्ते किये जाने रिपोर्ट ब अदालत हाईकोर्ट निस्वत मंसूरवी हुक्म सजा अदालत आतहत बमूजिबात जेल के गुजारिषा है ।

- १- जुर्मरूयदाद से साबित नहीं है तजवीज़ काबिल मंसूरवी है ।
- २- हुक्म अदालत अपील निस्वत लेने मुचलके हिवज़ अमन के खिलाफ़ कानून और खिलाफ़ इरदतियार है ।
- ३- सजा अव्वल निहायत सरत है ॥

बाबू घोंघा साही अपीलान्ट सायल
मारुजे २५ जनवरी सन् १८८४ ई०

अपील व हुजूर साहिब सिशन जज बहादुर मेरठ

जनाब अली

फिदवी व जुर्म दफा ४११ पेशगाह सर्दार हदेसिंह साहिब
मेजिस्ट्रेट दरजे अब्बल मेरठ से बतारीख १५ अक्टूबर सन् १८८३ ई०
वास्ते २ साल के कैद सराह होकर जेलखाने डिस्ट्रिक्ट में हूँ अर्ज यह
है कि फिदवी को पुलिस ने नाहक रात को गिरफ्तार कर लिया मैं
शराब के नशे में था फिदवी को मालूम नहीं कि पुलिस ने किस वक्त
गिरफ्तार किया जब हवालात में पहुँचा हूँ उस वक्त मालूम हुआ कि
मेरे ऊपर मुकद्मा कायम होगया इसवास्ते वजरिये सवालहाजा
अर्ज परदाज हूँ कि फिदवी की बे गुनाही पर खयाल फरमा कर
हुक्म रिहाई का अदालत से फरमाया जावे ।

आज फिदवी ने रोबस्त हुजूर हाजिर होकर मजमून दरवास्त
का हरफ व हरफ सुनकर तसदीक किया और बयान किया
कि जो कुछ इस दरवास्त में तहरीर है सही है ।

फिदवी अबदुल्ला वल्द इमाम अली साकिन बरेली
मुहल्ला मोचियां हाल मुकैयद जेलखाने डिस्ट्रिक्ट
मास्जे ५ नवम्बर सन् १८८३ ई०

अपील फौजदारी

गरीब परवर सलामत

मुवक्किल व नाराजी हुक्म जनाब साहिब डिप्टी मेजिस्ट्रेट
बहादुर मुकाम बिहार मरकूमा २६ फरवरी सन् १८८६ ई० जिन्होंने
ने व मुकद्मा करम अली मुद्दई व नाम मुवक्किल मुद्दआ अले व
इल्लत रखने माल सरका अपने कब्जे में हुक्म कैद व मियाद २ साल

सादिर फरमाया है हुजूर में बकजूर जैल अपील सरकिट करता है

१- यह कि सूयदाद मिस्ल से जुर्म रखने व लेने माल मस-
रूका दीदा व दानिस्ता मुवक्किल पर साबित नहीं है सदूर ऊकन सजा
निस्बत मुवक्किल लायक तरदीद है ।

२- वक्त खाने तलाशी जो परदा वगैरह मकान से रतनराय
के बरामद हुआ उससे मुवक्किल को हरगिज दूलाका नहीं है
अगरचे रतनराय मजकूर भानजा मुवक्किल का है मगर वह
मुवक्किल से अलाहिदा रहता है चुनोचे रतनराय मजकूर ने भी
अपने जवाब में बरामद होना माल मजकूर का अपने मकान से
बयान किया है पस सबूरत बरामद होने माल सरका मकान से रतनराय
के मुवक्किल पर जुर्म मजकूर कानूनन व इन्साफन आयद हाल
नहीं है ।

३- गवाहान सफाई से अलाहिदगी सकूनत मुवक्किल की
रतनराय से बखूबी साबित है इस सूरत में सजा मुवक्किल
लायक तरदीद है ।

४- बेचने वाला माल मसरूका भी बाकरमल व रतनराय
है मुवक्किल उसका बेचने वाला भी नहीं है पस बे दूलाकगी
में मुवक्किल के जाय शक नहीं है उम्मेद वार कि व मंजूरी
अपील व तलब व मुलाहिजा मिस्ल मुकद्मा तरदीद ऊकन
हाकिम ममदूह मरकूमे बाला पर हक रसानी फरमाई जावे ॥

अर्जी फिदवियान बिहारीलाल व सैयद कर-

बान अली मुख्तारान व रोशनलाल वकील

मिनजानिब - अमंडीराय मुद्दशा अले केदी -

अपीलार - मुवरखा रद्द मार्च सन १८८८ ई०

अपील नंबर २३८ सन् १८८३ ई०

ब अदालत सिशनजज बहादुर

जिले सहारनपुर

गुलाल कैदी बनाम सरकार कैसर हिन्द
अपील ब नाराजी ऊकन पंडित हरराम सिंह साहिब डिप्टी मेजि-
स्ट्रेट बहादुर जिले सहारनपुर महकूमे २८ अक्टूबर सन् १८८३
ई० मुशर्रर सदूर ऊकन ३ महीने कैद सरखत हस्ब दफा ४११ ताजी-
रात हिन्द ब वजूहात जेल पेश करता हूं ।

१- एस मुतदाविया न कबजे मुल्जिम से बरामद हुई न
किसी ने कबजे मुल्जिम में देखी ।

२- नेतराम के गवाहों से खरीदना एस मजकूर का मुल्जिम
से साबित नहीं है और मुजविज साहिब को भी कबूल है ।

३- मिसिल में किसी किस्म का सबूत दफा ४११ ताजीरात
हिन्द का निस्बत गुलाल के साबित नहीं बाद मुलाहिजे कागजात
मिसिल के बूनसाफ हो ॥

फिरवी गुलाल कैदी अपीलान्ट

२८ नवम्बर सन् १८८३ ई०

यादरास्त अपील फौजदारी

कटकसिंह साकिन बीडा परगना कांधला कैदी .. अपीलान्ट

अपील ब नाराजी ऊकन जंद मेजिस्ट्रेट बहादुर जिला

मुजफ्फरनगर मुवरखा १ दिसम्बर सन् १८८३ ई०

मुशर्रर सजा ३ महीने कैद सरखत जजूर में सिशनजज

बहादुर जिला सहारनपुर ब वजूहात जेल अर्ज

करता है ।

१- जिन गवाहों की शहादत वास्ते सबूत जुर्म के पेश ऊर्द है वह बंकोल मुद्दई कदीमी दुशमन मुल्जिम के हैं पस उन की शहादत के इतबार पर तजवीज़ सज़ा की सही नहीं है ।

२- सबूत पेश शुदा से भी जुर्म साबित नहीं है ।

३- मुल्जिम ने उज़र बे तश्ल्लुकी साबित किया है और खुद औरत मुसम्मात धन्नो भी मुल्जिम की बे तश्ल्लुकी कबूल करती है

फ़िदवी कटकसिंह साकिन बीड़ा

परगना कांधला कैदी अपीलान्ट

मास्ज़े १५ दिसम्बर सन् १८८३ ई०

अर्जियात सीगे माल

गरीब परवर सलामत

गुज़ारिश यह है कि अर्से २ रोज़ में काम पैमादूश का खतम हो जायगा बाद उसके तसदीक जमाबन्दी आसाभीवार ब तरतीब खसरा कच्चार मौजे उम्मेनी खालसा करके तारीख २२ जूलाई सन् १८७५ ई० को हाज़िर हुज़ूर होगा सिर्फ १ हफ़्ते की मोहलत और फ़रमाई जावे और अगर इस अर्से में फ़िदवी चला आवे तो कमाल दर्जे का हर्ज कारसकार में होगा क्योंकि दरिया तुग़ायानी पर होता जाता है लिहाज़ा अर्जी हाज़ा ब उम्मेद मिलजाने मोहलत १ हफ़्ते के इरसाल हुज़ूर है ज्यादा हद्द अदब ॥

फ़िदवी देवी चरन पटवारी मौजे बमरोली
मुतअय्यना पैमादूश कच्चार मौजे उम्मेनी खालसा

मास्ज़े १५ जनवरी सन् १८७६ ई०

गरीब परवर सलामत

जो कि एक किता बाग मय कुवां बाकै मौजे अतरोली
फिदवी ने फ़रोख़्त करके बैनामा बनाम अहमद बख़्श वल्द मुह
म्मद बख़्श व खलीलउद्दीन वल्द अजीज़उद्दीन साकिन मौजे
मजकूर लिख दिया है और रजिस्टरी भी करादी है इस वास्ते
यह दरखास्त मय परचे पटवारी लंबर शुमार व नंबर मुन्तख़िब
झज़ूर में गुज़रान कर उम्मेदवार हूं कि हस्ब जाबता दारिख़िल
ख़ास्ति फ़रमाया जावे ज़्यादा हद्द अदब ॥

फिदवी मुरारीलाल वल्द हज़ारीलाल
साकिन अतरोली.

मारुजे २२ जनवरी सन् १८६६ ई०

गरीब परवर सलामत

आज के दिन बन्दगान झज़ूर से तलबी फिदवी की
वास्ते एकज भावजा बागात ब मुक़द्दमे तकसीम मौजे बमरोली
के ऊई है जो कि हालात मुक़द्दमा से जगतनरायन मेरा छोटा
भाई बाकिफ़ है और वह वास्ते पैरवी मुक़द्दमातके झज़ूर में
साहिब बहादुर मोहतमिम बन्दोबस्त परगना रैवागढ़ में गया
है इस वजह से अदालत की आज की हाजिरी से मजबूर
हूं उम्मेदवार कि आज की ग़ैर हाजिरी माफ़ फ़रमाई जावे और
तारीख़ दूसरी मुक़द्दमे की मुकरर हो ॥

फिदवी बलदेवसिंहजीमीदार
मौजे बमरोली परगना चाडल
मारुजे १५ फ़रवरी सन् १८७२ ई०

गरीब परवर सलामत

जनावशाली ५३५ रुपया बाबत किस्त दोयम फसल
रब्बी सन हाल के जिम्मा ज़मींदारान २० बिस्वा मौजे नगला उम्मा-
नी के बाकी हैं और बाबजूद ताकीद शदीद के बाकीदारान ने अब
तक अदा नहीं किये और न बेबाक करने पर आमादा हैं बल्कि
अकसर गैर हाज़िर रहते हैं इस वास्ते अर्जी व उम्मेद इस अमर
के कि इन्तकाल जायदाद बाकीदारों का होकर बेबाकी अमल
में आये डूज़ूर में भेजता हूं क्योंकि सिवाय इन्तकाल जायदाद
ज़िमीदारी के कोई और सूरत बेबाकी की नज़र नहीं आती ॥

फ़िदवी नजमुद्दीन तहसीलदार
मारुजे २० जून सन् १८८३ ई०

गरीब परवर सलामत

दरयाफ़्त हुआ है कि सरकार को ठेका देना गुज़र
घाट मौजे उमरपुर सरां परगना चाइल ज़िला इलाहाबाद का
वास्ते मियाद २ साल के इब्दा सन् १८८४ ई० लगायत सन्-
१८८५ ई० व जमा १८००० रुपये के मजकूर है इस वास्ते दर-
खास्त गुज़रान कर उम्मेदवार हूं कि ठेका गुज़र मजकूर का वास्ते
मियाद मजकूर के व जमा १८००० रुपये के फ़िदवी को दिया जावे
और जमानत फ़िदवी की लेली जावे फ़िदवी उन प्रायत और
कयूद का जो दरबारह इस ठेके के वक्तन फ वक्तन सादिर होगी
पाबन्द होगा और ज़र ठेका बतादाद मरकूमे बाला वक्त मुष्-
यन पर अदा करता रहूंगा ॥

फ़िदवी इनायत हुसेन साकिन मौजे उमरपुर सरां

परगने चाइल जिला इलाहाबाद
मारुजे १ मार्च सन् १८८४ ई०

गरीब परवर सलामत

दरखास्त बटवारा मौजे रैया मुताल्लिके महंगांव के
मिन्जानिब श्रीनरयनदास वगैरह मुआफीदारान हुजूर में गुजरी
है कि चिद्दात आराजी मजरुआ के मुरत्तब होगये अब पैमाइश
आबादी मौजा की होती है - चूंकि रिआया मौजा आबाद कर्देह
हम सायलान है और उन पर कब्जा हमारा व सबब लेने जुमला
रकूम के कदीम से है बल्कि तमामी मुहासिल सायर मौजे पर
बदस्ति सनाय लगान मजरुआ के बिला मुजाहमत अहदे साय-
लान काबिज हैं वक्त दुरुस्ती कागजात बन्दोबस्त मुआफीदा-
रान ने तनाजा निस्बत दरख्तान मौजा के किया था बाद तहकी-
कात कामिल कब्जा हमारा बहाल रहा अब अगर खाने हाय
रिआया दर्ज चिद्दात मुआफीदारान होजांयगे तो हमारे कब्जे
में फतूर आयंदा को होगा लिहाजा दरखास्त हाजा गुजरान कर
उम्मेदवार हैं कि स्बकार बटवारा में तजकिरा हमारे कब्जे
का निस्बत खानेहाय रिआया व मकान खास हमारे बबेवास्त-
गी मुआफीदारान किया जावे फक्त ॥

अर्जी

फिदवियान अब्दुलसमद व सैय्यद अली व गुलाम-
अब्बास जिमीदारान साबिक मौजा रैया परगने
चायल जिला इलाहाबाद

मारुजे १० जनवरी सन् १८८० ई०

हाफिज़ अब्दुल्ला वल्द मौलवी मज़हरअली कोम शेख
साकिन महल्ले भभारी रौजा कस्बा काकोरी " " मुद्दई

बनाम

मल्लू वल्द गज्जू कोम चमार कापूतकार साकिन महल्ले गढ़ी
कस्बे मज़कूर " " " " मुद्दआप्रले

दावी दिला पाने मुबल्लिग ३॥॥ बाकियात लगान बाबत
आराज़ी १५ बीघा १ बिस्वा नम्बरी १७५७ मौकूरे कस्बे
काकोरी हस्ब दफा ८३ जिम्न २ ऐक १ र्द सन् १८६८ ई.
बर बिनाय गवाही गवाहान.

गरीब परवर सलामत

तशरीह दावी यह है कि मुद्दआप्रले मज़कूर सरदार
ने आराज़ी मज़कूर को ब जमा मुबल्लिग १० सालाना मुफ मुद्दई
से लेकर कापूत की मिनजुमला उसके दी। अदा किये और बाकी
नहीं देता है और जर मुतदावियह सन् १२८३ फसली मुता-
बिक आखिर जून सन् १८७५ ई० जिम्मे मुद्दआप्रले वाजिबुल
अदा होगया और वही तारीख जुहूर बिनाय दावी है उम्मेदवार
कि जर मुतदावियह ब दूजाफा खर्चा अदालत दिला पाऊं फकत॥
नम्बरखेत नामखेत तादाद आराज़ी तादाद लगान वसूल बाकी
१७७५ फुलचारी १५ बीघा १ बिस्वा १० दी ३॥॥

अर्जी

फिदवी हाफिज़ अब्दुल्ला मुद्दई
मारुजे दूकुम मर्द सन् १८७५ ई ई०

मुसाहब प्रली जिमीदार व नम्बरदार मौजा अतरोई खास

तहसील व जिला लखनऊ

मुद्दे

बनाम

जियालाल वल्द बेदी कौम अहीर काप्रतकार साकिन

मौजा मजकूर

मुद्दप्रालेह

दावी दिलापाने मुबलिग १२) बाबत बटाई गल्ला गंदुम व

सरसों तरवमीनन् २४५ मन वजन खाम मिनजुमला ४८५

मन कुल पैदावार फसल रबीन् सन् १२८३ फसली बाबत

आराजी १५ २ बिस्वा नम्बरी १३१८ वाकें मौजा अतरोई खास

बर बिनाय गवाही गवाहान

गरीब परवर सलामत

जो कि मुद्दप्रालेह ने आराजी मजकूर रुस्सदर सीर मुद्दे बटाई पर काप्रत की थी दरी विला १५ मार्च सन् १८७६ ई० को मुद्दप्रालेह गल्ला गंदुम व सरसों पैदावार रबीन् सन् १२८३ फसली आराजी मजकूर रुस्सदर काट कर जुमला आप उठा ले गया मुफ मुद्दे को बटाई का एक दाना भी नहीं दिया लिहाजा वही तारीख सन् १८७६ ई० जुहूर बिनाय दावी करार पाई उम्मेदवार कि बाद तहकीकात डिगरी बहकू मुद्दे बनाम मुद्दप्रालेह प्रदालत से फरमाई जावे फकत ॥

नंबर खेत नाम खेत आराजी लगान तादाद गल्ला वजन खाम

१३१८ मटियावाला १५ बी. २ बि. बटाई ४८५ मन कीमती १२)

गंदुम ४७० म. सरसों १५ म.

हिस्सा मुद्दे हिस्सा मुद्दप्रालेह हिस्से मुद्दे हिस्से मुद्दे

२३५ म. २० सेर २३५ म. २० सेर

२० सेर

२० सेर

अर्जी

फिदवी मुसाहबअली

मारुजे २० मार्च सन् १८७६ ई०

भैरों प्रशाद साकिन मौजा देवली इलाका रामनगर " मुद्दई

ब नाम

गोपी प्रशाद वल्द भवानी प्रशाद " " " मुद्दशाअलेह

दावी दरखलावी मवाजी १४ बिस्वा आराजी काशत

कदीमी वाकै मौजा देवली इलाके रामनगर

गरीब परवर सलामत

जनाबआली आराजी मजकूर कदीम से फिदवी की काशत में चली आती है और अर्से जायद अज बारह साल से मुद्दई उस पर काबिज है लगायत सन् १२७५ फसली मुद्दशाअलेह को पट्टा काशत लिख दिया और कबूलियत लिखवाली गर्द सन् १८७३ फसली तक फिदवी ने बमूजिब कौल व इकरार २३ सालाना के हिसाब से मालगुजारी अदा की इस साल मैंने उसमें तर्कारी वगैरः बोर्ड थी जब तर्कारी तैय्यार हुई मुशारुनअलेह ने मालगुजारी तलब की मैंने मालगुजारी अदा की मगर रसीद नही ली अब मुद्दशाअलेह ने यह बद् मा मलगी इख्तियार की कि मुझे बुला कर कहा कि पट्टा बेशी लिखदो फिदवी ने कबूल न किया इसवास्ते उस आराजी से बेदखल करके और काशतकारों के साथ आराजी मजकूर का बन्दोबस्त कर दिया हालां कि उसको सिवाय लेने मालगुजारी के कुछ हक्क छीन लेने काशत का नहीं है इसलिये उम्मेदवार हूं कि मुद्दशाअलेह तलब होकर मेरे जमीन काशत पर

मेरा दरख्त दिलाया जावे फ़कत ॥

अर्जी

फ़िदवी भैरों प्रशाद साकिन मौज़ा देवली इलाक़े
रामनगर मुद्दई - मारुजे ८ सितंबर सन् १८६६ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाब आली अर्सा चौदह बरस का गुज़रा है कि मुस-
म्मा नूरखां हमारे बाप ने आबाई व अजदादी ज़मीन अपने बेटों
को वास्ते गुज़रान के तकसीम कर दी थी और हम उसको आबाद
करके गुज़रान करते चले आये हैं जब से अमलदारी सरकार की
हुई है बमूजिब पैदावार हर पट्टी के ज़रमुशख़सः मुक़रर हुआ
और उस रोज़ से हर कोई ज़रे ठेका मक़बूज़ा अपना मारफ़त पटवारी
सर्कार में भरता चला आया अब कि सिकंदरखां मारफ़त थानेदार
के आकर ज़बरदस्ती से ग़ल्ला जिन्सी मेरा उठाकर ले गया सायल ने
मुसम्मा बरख़ुरदारखां अपने भाई को भेजा सिकंदरखां मज़कूर
ने बरख़ुरदारखां को बहुत सख़्त व सुस्त कहा सायल अगरचे
उससे कमज़ोर न था लेकिन ब लिहाज़ आईन सरकार ख़ामोश
होकर अर्ज़ करता है कि ऊज़ूर वाला बराह़ खाविन्दी ग़ल्ला मेरा
उससे वापिस करादे और जिस क़दर कि ज़र ठेका साबिका जिम्मे
सायल है पटवारी हम से बमूजिब साल गुज़रते के लैलेवे ता कि
फ़िदवी हक़ अपने को पहुँच कर अपने वतन में गुज़रान करे
आयंदा ऊज़ूर मालिक हैं फ़कत ॥

अर्जी

फ़िदवी गुलाम हैदर - मुवररवे ८ नवम्बर सन् १८६७ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाब भाली हकीकत हाल यह है कि जो गांव मौजे दूदा
हेरा परगने शरकी में है और खेवट उसकी सरकार में मौजूद है
उस खेवट में नाम मुफ़ फ़िदवी का दर्ज है बल्कि आज तक काबिज
व दर्खील है और मुसम्मात लख्मी जोजा जोकिया चचा मुतवक्फ़ा
मेरे के मौजूद है और वह भी आज तक अपने हिस्से जमीन पर काबि
ज व दर्खील है व सबब सहो के और नीज नाबाक़फ़ियत से नाम उस
का बख़ाने मालिकियत दर्ज नहीं है लिहाजा यह अर्जी इज़र में गुज
रान कर उम्मेदवार कि बाद तहकीकत के ज़मींदार मौजा से नाम मुस-
म्मात मज़कूर बख़ाने मालिकियत खेवट मेरे शामिल दर्ज फ़रमाया
जाय वाजिब जानकर अर्ज किया ज्यादा हद अदब फ़क़त

अर्जी

फ़िदवी कन्हैया ज़मींदार हिस्सेदार मौजा
दोंदा हेरा परगने शरकी

मुबारक़े १८ दिसम्बर सन् १८८५ ई०

गरीब परवर सलामत

मवाज़ी आठ बिस्वा ज़मीन जिसको अर्सी तरवमीन न
तीन बरस का गुज़रा है डिप्टी साहिब बहादुर ने हस्ब नालिश
यूसुफ़ अली मुद्आअलेह ऊक़ तक्सीम का दिया था मगर यूसुफ़
अली मुद्आअलेह ने मेरी तक्सीम में ज़मीन मुत्तासिल दरिया के
करके कहा कि अगर तेरी ज़मीन दरिया बुरद हुई तो हम तुम को
मुजरा देंगे चूंकि अब ज़मीन फ़िदवी की दरिया बुरद होगई और निहा-
यत नुक़सान मुज़हिर का हुम्मा मुद्आअलेह से कहता हूं कि

मेरी ज़मीन दरिया बुर्द होगई है मुझे मुजर दो मगर मुद्दाम्म-
लेह हस्ब इकरार व रिवाज मुल्क मुझे मुजर नहीं देता जो
कि सिवाय आस्तान हुजूर जाय गोर और इन्साफ़ और कहीं नहीं
है इसलिये उम्मेदवार हूं कि इस कदर बराह रैयत नवाजी
ज़मीन दरिया बुर्द मुद्दाम्मलेह से मुजर दिला दें और आयंदा
के लिये बमूजिब मनशाय हुक्म मुजव्वज़ह डिप्टी साहिब बहादुर
तक़सीम करा दें फ़क़त ॥

अर्जी

फ़िदवी फ़ैज़ अली साकिन बांकीपुर

मुर्वरख़े इकुम अप्रैल सन् १८८३ ई०

मुहम्मद सईद वल्द मुहम्मद अमीर साकिन मुहल्ले

नकीगंज

मुद्दई

बनाम

रतन वल्द भजना कौम अहीर साकिन व काश्त-

कार मौज़ा उत्तमपुर

मुद्दाम्मलेह

दावी दिला पाने मुबल्लिग १३॥॥॥ बाकी लगान सन

१२८१ फ़सली बाबत आराज़ी ४५ बीघा १२ बिस्वा

नम्बरी १८५१ मौकूआ मौज़ा उत्तमपुर हस्ब

मनशाय दफ़ा ८३ ऐक १८ सन् १८८८ ईस्वीबर-

बिनाय गवाही गवाहान -

गरीब परवर सलामत

जनाब आली मुद्दाम्मलेह मज़कूरुस्सदर ने आराज़ी

मज़कूर बजमा मुबल्लिग २६॥ सालाना मुफ़ मुद्दई से लेकर काश्त

की मिनजुमले उसके १२॥) अदा किये और बाकी ब सबब नादि-
हन्दी अदा नहीं करता है और जर मुतदावियह सन् १२८१ फ०
मुताबिक आखिर जून सन् १८७४ ई० जिम्मे मुद्दाम्मालेह बाजि-
बुल अदा होगया और वही तारीख जुहूर बिनाय दावी है उम्मेद
कि जर मुतदावियह ब इजाफा खर्चा अदालत दिलाया जावे ॥

अर्जी

फिदवी मुहम्मद सईद मुद्दई

मास्ते इकुम मई सन् १८७४ ई०

लालदास ब्राह्मण नम्बरदार

मौजा बहरादत

परगने ललित पूर ..

..

..

..

मुद्दई

ब नाम

गुलाबराय ब्राह्मण हिस्सेदार मौजा मजकूर .. मुद्दाम्मालेह

दावी मुबलिंग २६॥) ईपाई बाबत जोतजिमीन संबत १८२२

गरीब परवर सलामत

जनाबमाली मुद्दाम्मालेह ने बाबत जोतजिमीन संबत
१८२२ के मुसम्मा रतनलाल काश्तकार से ८॥) और शेख नजर
काश्तकार से १७॥) ईपाई जुमला २६॥) ईपाई वसूल करलिया
है और मुझे नहीं देता है और मुझे किस्त सकार देनी है इस
लिये अर्जी हाजा ब सीगे नम्बरी गुजरान कर उम्मेदवार हूं कि
तह काकीत होकर रुपया दिला पाऊं और वजह सुबूत पटवारी
देह और नीज मुकद्दमा सरसरी जो जवाहिरलाल और शेख-
नजर वगेरह काश्तकारान दायर था साबित करूंगा ॥

फुकृत ॥

अर्जी

फिदवी लालदास ब्राह्मण नंबरदार मौजा
बहरादत परगने ललितपुर
मास्तेजे २३ फरवरी सन् १८६६ ई०

जुगवरसिंह वल्द भवानीसिंह कौम ठाकुर साकिन व
पट्टीदार मौजा काही पाच्छिम परगने बिजनौर " मुद्दई

बनाम

मंगलसिंह वल्द भरतसिंह कौम ठाकुर साकिन व
काश्तकार मौजा मजकूर " मुद्दाम्प्रलेह

दावी दिला पाने मुबालिग १० बकाया लगान

खरीफ सन् १२८३ फसली- आराजी ३५ बीघा

नंबरी २३६१ व २३६४ मौकूआ मौजा मज-

कूर- हस्बगन्शाय दफा ८३ जिम्न २० ऐक

१६ सन् १८६८ ई० बर बिनाय गवाही गवाहान

गरीब परवर सलामत

आराजी मजकूर ससदर जो जानिब मुद्दई से बकाश्त
मुद्दाम्प्रलेह है जिसको मियाद आखिर माह नवम्बर सन् १८७५
ई० गुजर कर जर मुतदावियह वाजिबुल अदा होगया और मुद्द-
ाम्प्रलेह ने बा वजूद तलब व तकाजा हनोज अदा नहीं किया
उम्मेदवार कि बाद तहकीकात जर मुतदावियह बड़जाफा खर्चा
अदालत दिलाया जावे और तारीख बिनाय मुखासमत आखिर
माह नवम्बर सन् १८७५ ई० है फक्त ॥

नम्बर	नाम खेत	तादाद आराजी	लगान
२३६१	कलुआ	२५ बीघा	७
२३६४	कोही वाला	१५ बीघा	३
२ किते		३५	१०

अर्जी ————— ९

फिदवी जुरावरसिंह मुद्दई

मारुजे २१ जनवरी सन् १८७७ ई०

शरीर परवर सलामत

सर्कार दौलतमदार से २५ बीघा १० बिस्वा ज़िमीदारी मौज़ा लखना दून परगने खैरागढ़ ज़िले आगरा खैरख़ाही में फ़िदवी को मरहमत ऊर्दूची और उसी के मुत्तसिल एक मुम्नाफ़ी बाग़ बाँके हैं जिसमें १७५५ बीघा ज़िमीन है सुना है कि वह नीलाम होगा अगर ग़ैर शख़्स ख़रीदेगा तो फ़िदवी के गांव में ख़तल अन्दाज़ी करेगा इसलिये उम्मेदवार हूँ कि उसकी जमा तजवीज़ होकर बन्दोबस्त उसका फ़िदवी के नाम फ़रमाया जावे और अगर उसमें कोई हर्ज की बात हो तो कीमत मुनासिब उसकी ज़िला से तजवीज़ होके फ़िदवी से वसूल करके दाखिल खाजि उसका नमक ख़ार के नाम फ़रमाया जावे दोनों अम्र में से जो पसन्दाय आती हो अमल में लाया जावे बाज़िव था अर्ज़ किया फ़क़्त ॥

अर्जी —————

नमक ख़ार अकबर बेग़ तहसीलदार

फ़ीरोज़ाबाद ज़िला आगरा

मारुजे ५ दिसम्बर सन् १८६५ ई०

बद्री प्रसाद साकिन दूंदीपुर

मुद्दई

बनाम

जैगोपाल साकिन मुस्तफाबाद

मुद्दआप्पलेह

दावी दरखलयावी ४५ आराजी जमई

२६) रु. अजरुय इकरार मुद्दआप्पलेह

गरीब परवर सलामत

खुदावन्द मुद्दआप्पलेह ने ज़िमीन मजकूरे बाला बइकरार
आदाय निस्फ हिस्सा पैदावारी मुद्दई से लेकर काश्त की थी चुनांचे
दो साल से मुद्दआप्पलेह काश्त करता है और यह भी मुद्दआप्पलेह
ने बरवक्त लेने आराजी मुतदावियह के इकरार किया था कि द-
न्दुल जस्ूरत आराजी हवाले मुद्दई कस्ंगा गवाहान सबूत कोल
व इकरार मुद्दआप्पलेह मौजूद हैं और निस्फ हिस्सा पैदावार भी
मुद्दआप्पलेह ने मुफ को बांट दिया है मगर हस्व इकरार खुद
दरखल नहीं देता लिहाजा व अम्र लाचारी व सीगै नम्बरी माल
दावीदार है कि आराजी मुतदावियह पर दरखल दिलाया जाय
और सबूत मिलिकयत आराजी मुतदावियह में गवाह और काग-
जात मौजूद हैं मुलाहिजा फरमाया जावे फ़क़त ॥

अर्जी

फ़िदवी बद्री प्रसाद साकिन दूंदीपुर

मुर्वरेवे १२ अप्रैल सन् १८६६ ई०

गरीब परवर सलामत

बन्दगान ड़ज़ूर से वास्ते दाखिल करने नकल खसरा
टीप बाग नम्बरी २० वाकै मौजा गरिया खालिसा परगने चायल

ब मुकदमा मीर एवज अली डिगरीदार बनाम केशवदास मदन
 डिगरी व हजारीलाल व बिहारीलाल उजुरदारान् - दावी वा गुजापत
 मकान वाकै मंदरा परगने करारी व बाग वाकै गरिया खालसा परगने
 चादल के इरशाद फरमाया था चुनांचे बमूजिब हुकम बन्दगान
 हुजूर दरखास्त नकल खसरा टीप सन् १२८६ फसली हुजूर में
 जनाब साहिब डिप्टी कलेक्टर बहादुर गुजरानी उस पर हुकम अ-
 ताय नकल सादिर हुश्रा मगर अब तक खसरा टीप दाखिल स-
 रिफते नहीं हुश्रा पटवारी मौजा के पास मौजूद है बल्कि पटवारी ने
 इजहार में कब्जा व दरखल सिद्ध गोपाल बिरादर हकीकी उजुर-
 दारान् लिखाया है कि वह शामिल मिसिल मुकदमा उजुरदारी
 है इस वास्ते दरखास्त गुजरान कर उम्मेदवार हैं कि खसरा टीप
 जो पास पटवारी मौजूद है तलब होकर मुलाहिजा फरमाया जावे
 फकत मुकरर अर्ज यह है कि व वजह न दाखिल होने सरिफते
 में लेने नकल और दाखिल करने उसके से मजबूर हैं फकत

अर्जी

फिदवियान हजारीलाल व बिहारीलाल

उजुरदारान

मारुजे १८ जूलाई सन् १८८० ई०

फरजंद हुसेन वल्द खादिम हुसेन साकिन बिजनौर नम्बरदार मुर्तहिन
 डिगरीदार हिस्से ७ तालिब हुसेन बाबत मौजा अहमदपुर परगने
 व जिले बिजनौर " " " " " " मुद्दे

बनाम

अली हुसेन वल्द इमदाद हुसेन नम्बरदार कापतकार आराजी

मौजे मजकूर

मुद्दाम्प्रले

दावा दिला पाने मुबलिग २१=) बकाया लगान मवा-
जी २५ बीघा १८ बिस्वा नम्बरी जेल वाकै मौजा मजकूर
बाबत साल तमाम सन् १२८३ फसली बर बिनाय इ-
स्तहकाक रहन व डिगरी अदालत दीवानी हस्ब मंशाय
जिम्न २ दफा ८३ ऐकू लगान सन् १८६८ ई०

गरीब परवर सलामत

बयान दावी यह है कि फी माबैन बटवारा होगया है
और मुद्दई तहसील आसामीवार हिस्से मरहूना की खुद करता है
आराजी मजकूर काबत मुद्दाम्प्रले की है और उसका लगान २१=
जिम्मे मुद्दाम्प्रले वाजिबुल अदा है मगर वह बावजूद तलब व
तकाजाय व इन्कजाय मियाद एक माह वजू व किस्त सरकारी से
नहीं देता है लिहाजा उम्मेदवार हूं कि बाद तहकीकात जस्टरी डिगरी
मुतदावियह व हक्क मुद्दई व नाम मुद्दाम्प्रले व इजाफा खर्चा अदा-
लत फरमाई जावे और बिनाय मुखा समत इकुम अप्रैल सन्
१८७६ ई० है फकत ॥

नंबर	नाम खेत	तादाद आराजी	तादाद लगान	वसूल बाकी	कैफियत
१७७	तराईवाला	१५ बी. १ बि.	६)	०	६)
१८०	॥	१५ बी. १ बि.	६=)	०	६=)
१८८	गागरवाला	१७ बिस्वा	८)	०	८)
३ किते		२५ बी. १८ बि.	२१=)	०	२१=)

अर्जी

फिदवी फरजंद हुसेन मुद्दई

मारुजे १० अप्रैल सन् १८७६ ई०

शेरव इलाही बख्श मुद्दई डिगरीदार जिमीदार मौजा
रसूलपुर परगने चाइल जिले इलाहाबाद

ब नाम

शेरव अलीमुहम्मद हिस्सेदार मौजा मजकूर मुद्दआअले मदयून
दावी ईसाल मुबलिग ४८॥॥ र्द पाई ब कुर्के व
नीलाम जायदाद मनकूला - मदयून हस्ब निशां-
दिही डिगरीदार

गरीब परवर सलामत

वाकै इकुम अप्रैल सन् १८८२ ई० को डिगरीदार ने
दरखास्त कुर्के व नीलाम जायदाद जिमीदारी वाकै मौजा रसूलपुर
परगने चाइल ब सबब न होने कोई जायदाद मनकूला मदयून
डिगरी इजूर में गुजरानी और इजूर से निस्वत जायदाद मजकूर
इकन कुर्की व नीलाम सादिर नहीं इश्रा लिहाजा दरखास्त हाजा
इजूर में गुजरान कर उम्मेदवार हूं कि पेशतर इकन कुर्की व
नीलाम जायदाद मनकूला मदयून डिगरी हस्ब निशांदिही डिगरी-
दार सादिर फरमाया जावे बाद इ नीलाम जायदाद गैर मनकूला
जिसकी निस्वत डिगरीदार ने तालीका दाखिल किया है इकन
सादिर हो वाजिब था अर्ज किया फकत ॥

४८॥॥ र्द पाई

मुन्दर्जे दरखास्त मारुजे इकुम अप्रैल सन् १८८२ ई० तलबाना व खुराक गवाहान

४६॥॥ र्द पाई

१७

खर्चा हाल

॥॥॥

दरखास्त हाजा

तलबाना

७

॥॥॥

प्रज्ञी

फिदवी शेरव इलाही नख्श डिगरीदार
मासुजे १८ मई सन् १८८२ ई०

नूरअली वारिस व काबिज़ जायदाद मुहम्मद अकबर
मुतवक्फा ज़िमीदार तालग्राम तहसील छबरा मऊ .. मुद्दई

बनाम

मिडई व मंगल व गयादीन व शंभूनाथ वगैरह

साकिनान् मौजे मज़कूर मुद्दशा अलेहुम

दावी दिला पाने १० ई॥) बाकी साल सन् १२८६

फसली व सन् १२८७ फसली व सन् १२८८ फ०

हस्ब मनशाय दफा ८३ हर्फ अलिफ ऐक १२

सन् १८८९ ईस्वी

गरीब परवर सलामत

बयान दावी यह है कि मुद्दशा अलेहुम काश्तकार देह
जमीदारी शामिलतात विस्त बिस्वह मुद्दई व दीगर ज़िमीदारान्
सन् १२८६ फ० व सन् १२८७ फ० में ब हिसाब १२५) सालाना
व सन् १२८८ फ० में ४०) सालाना के हैं और हर एक ज़िमीदार
मुवाफ़िक दस्तूर व रिवाज के तहसील अपने अपने हिस्से की
अलहदा करता है चुनांचे सालहाय मुतदावियह में मुद्दशा
अलेहुम हस्ब तफ़सील ज़ैल बाकीदार हिस्सा मुद्दई हैं और बराह
नादिहंदी अदा नहीं करते लिहाज़ा ब दावी उस्सदर मुस्तगीस हूं
कि बाद तहकीकात हुक्म दिलाये जाने ज़र दावी मये खर्चा अदा-
लत फ़रमाया जावे और जुहूर बिनाय दावी अक़सात मुन्कज़िये से मुद्दई

नाम सन्	तादाद मुतालिबे हिस्से मुद्दई	वसूल	बाकी
१२८६ फ०	४३॥॥	८	३५॥॥
१२८७ फ०	४३॥॥	१५	२८॥॥
१२८८ फ०	४८	७	४३
	१३६॥॥	३०	१०६॥॥

अर्जी

फ़िदवी नूरअलीजिमीदार तालग्राम मुद्दई

मारुजे इकुम नवम्बर सन् १८८१ ई०

दरखास्त अपील

ठाकुर सीतलसिंह पिसर गंगोलीसिंह जिमीदार हिस्सेदार

मौजे दुमनपुर पट्टी जाफ़री बेग़म परगना सादह सलीमपुर

जिले कानपुर अपीलांत

ब नाम

जानकी प्रसाद चल्द मन्तूलात व रामचरन व रामगुलाम

पिसरान बालमुकंद मुतवफ़ा हिस्सेदारान् मौजे मजकूर

खाहिन्दह बटवारा रिपॉन्डेन्ट

मुतअल्लिक दफ़े १०७ ऐक १८ सन् १८७३ ई०

ठाकुर सीतलसिंह अपीलांत बड़जूर साहिब कमिश्नर बहादुर जिला

इलाहाबाद - ब नाराजी डुकन साहिब कलेक्टर बहादुर जिले

कानपुर सुवरिखे ७ अगस्त सन् १८८३ ई० मुशअर बहाली डुकन

डिप्टी कलेक्टर बहादुर जिले कानपुर ब वजूह ज़ैल अर्ज करता

है ।

१— अपीलांत को निस्वत नक़शे पटवारी के कोई उज़र व बहस नहीं है उज़र खास बाबत १ मजरे आबाद कर्दा ठाकुर

गंगोलीसिंह मूरिस अपने के हैं ।

२— तजवीज डिप्टी कलेक्टर व बयान पटवारी से साबित है कि ठाकुर गंगोलीसिंह हिस्सेदार मेरे बाप ने अपने जर खास और कोशिश से मुवाफिक दस्तर आम के १ पुरवा अपने नाम से आबाद किया और वास्ते सकूनत रईयत के मकान बनवा दिये और बहैसियत मालिकाना उत्तर पुरवा मजकूर के काबिज रहे और बाद इन्तकाल उनके अपीलान्ट वारिस ठाकुर गंगोलीसिंह का काबिज बिला शिरकत दूसरे के हैं इसमें कोई उजर शरीकों और रिप्पांडेन्ट का कभी नहीं हुआ ।

३— फिल हाल मुकद्दमे बटवारे में निस्वत आबादी पुरवा मजकूर के वक्त दाखिल होने फर्द मकबूजे अपीलान्ट के रिप्पांडेन्ट उजरदार हुए डिप्टी कलेक्टर बहादुर ने व वजह तैयार होने पुरवे मजकूर के बीच ज़मीन मुशतरका के इस खुलासे से हुक्म सादिर किया कि आबादी पुरवा मजकूर शामिल आबादी होकर हिस्सा एसदी तक सीम की जावे और हाकिम मातहत ने व मुलाहिजे मेरे अपील के उस हुक्म को बहाल रखा हालां कि फ़ैसला व काररवाई बटवारे की खिलाफ़ कानून व रिवाज के हैं

४— जब कि यह पुरवा आबाद कर्दा बाप अपीलान्ट व कबूजे अपीलान्ट में अर्से से चला आता है और अपीलान्ट ने बहुत से उजर पेश किये कि तहकीकात मुवाफिक कायदे के मुकनाय पुरवा व पटवारी साबिक व दीगर हिस्सेदारान् मीजे से की जावे मगर कुछ तवज्जेमान हुई ।

५— एतराज़ हुक्म मातहत कि पुरवा मजकूर ज़मीन मुशतरका में आबाद किया गया आबादी गांव में शामिल होकर कुल

हिस्सेदारों को रसदी मिलना चाहिये यह तजवीज़ बिलाफ़ रिवाज
और क़ानून के है क्योंकि कायदा है कि हर एक हिस्सेदार गांव
मुशतरका में बाग़ व तालाब व कुम्भा व पुरवा आबादी रईयत व
मकान बिला शिरकत दूसरे हिस्सेदारों के बनवा के मालिकाना
काबिज़ रहे और वक्त बनवाने के मुआवज़ा दूसरे हिस्सेदारों को
दिया जाता है चुनाचे जो बाग़ मूरिस अपीलान्ट ने उसी किस्म
ज़िमीन में नसब किया है उसका मुआवज़ा हाकिम मातहत ने
दूसरे हिस्सेदारों को दिया है यह अमर काबिल गौर व इन्साफ़
के है मूरिस अपीलान्ट ने इस पुरवे को न इस नियत से आबाद
कियाथा कि रईयत के साथ लेने किराये का फ़ायदा उठावे और
न ऐसा कायदा दिहात में है कि रईयत से किराया लिया जावे
उम्मेदवार हूँ कि ब तलब मिसिल व मंस्खी हुक्म मातहत के
हक़रसी फ़रमाई जावे ॥

फ़िदवी सीतलसिंह पिसर ठाकुर गंगोली सिंह
ज़िमीदार हिस्सेदार मौज़े दुमनपुर पट्टी जाफ़री
बेग़म परगना सादा सलीमपूर ज़िला कानपूर

गरीब परवर सलामत

सायल बनारजी हुक्म जनाब साहिब कलेक्टर बहा-
दुर ज़िला बदायूं मुवररेवे इकुम मई सन १८६५ ई० दर बाब समा-
प्त न करने दावी गंग शिकस्त मौज़ा गंगपुर परगने उम्कानी दर-
खास्त अपील अंदर मियाद इज़र में गुज़रान कर उज़रत नाज़ा-
मंदी मुख़्तसिर गुज़ारिषा करता है ।

१- जनाब साहिब कलेक्टर बहादुर व वजह अदम तैयारी

कागज़ पटवारी दावी समाप्त नही फ़रमाते जाय ग़ौर है कि अगर पटवारी ने कागज़ तैयार न किया तो कसूर उसका है न कि सायल का

२- कसूर पटवारी से दावी समाप्त न करना ब जुज़ कम नसीबी सायल और क्या तसबुर किया जाय जनाब आली जाय ग़ौर है कि मवाज़ी आठसौ बीघा आराज़ी शरह कामिल मिन-जुमले १४७६५ बीघा तरदुदी कुल रकबा गंग शिकस्त हो गई सिर्फ़ छःसौ बीघा आराज़ी ना काबिल तरदुद व कम शरह बाकी रह गई फिर इस आराज़ी से क्यों कर जमा सर्कारी सरनजाम हो सके जनाब साहिब कलेक्टर बहादुर को बख़ूबी बंदोबस्त कर देने तरफ़ीफ़ जमा का वाजिब था सो न किया लिहाज़ा उम्मेदवार कि तलबी मिसिल मुकदमा डुज़ूर में होकर बाद मुलाहिज़े उसके जनाब साहिब कलेक्टर को तहरीर फ़रमाया जावे कि बाद तहकीकात बंदोबस्त तरफ़ीफ़ जमा गंग शिकस्त बख़ूबी फ़रमावे वाजिब जान कर अर्ज किया ज्यादा हद अदब फ़क़त ॥

अर्जी

फ़िदवी तारा सिंह ज़िमीदार मौज़ा गंगपुर
गंग शिकस्त

मारुजे ३० मई सन् १८६५ ई०

शेख बहादुर अली लंबरदार मौज़े यारखुर्द परगना
रसूलाबाद ज़िला कानपुर " " " अपीलांट

बनाम

बल्देव प्रसाद काश्तकार मौज़े मज़कूर " " रिपॉन्डेन्ट

मुतअल्लकै दफा र्द ५ ऐक सन् १८८१ ई०

श्रीख बहादुर श्रीली श्रीपीलांट बड़जूर साहिब कमिश्नर बहादुर
जिला दूलाहाबाद- व नाराजी डूकन साहिब असिस्टेन्ट कलेक्टर
बहादुर दर्जे अव्वल जिले कानपूर- मुवररहे २३ जून सन् १८८३
ई० व सीगे निगानी बवजूह जेल अपील करता है ।

१- स्त्यदाद मिसिल से साबित है कि रिस्पॉन्डेन्ट सन् १२७८
फसली में अदालत से बेदखल किया गया व सन् १२७८ व सन्
१२७९ ई फसली में बेदखल रहा और सन् १२८० फसली में बमू-
जिब पट्टे जदीद के आराजी मुतनाजा मुद्दई को दीगई और बंदो-
बस्त में २ बरस का काश्तकार तसदीक हुआ इस हिसाब से
मुद्दत काश्त मुद्दई की अखीर सन् १२८० फसली तक १० बरस
होती है तो ऐसी हालत में मुद्दई को दखीलकार करार देना
गलत व बेजा है ।

२- जब कि बंदोबस्त सन् १८८२ ई० में मुद्दई २ बरस का
काश्तकार तसदीक हुआ और हाकिम मातहत तसलीम करते
हैं तो खिलाफ जमाबन्दी मुसद्दके बन्दोबस्त के मुद्दई को
दखीलकार करार देना गलत है ।

३- यह कियास हाकिम मातहत का कि जमाबन्दी बंदोबस्त
हाल की बाबत काश्त मुद्दई के लायक तवज्जो अदालत के
नहीं है तमाम तर बेजा व खिलाफ कानून है क्योंकि दफे ८१
ऐक्ट १८ सन् १८७३ ई० में साफ तौर से लिखा है कि तसदीक
बन्दोबस्त की सही ख्याल की जायगी अगर काररवाई बन्दोबस्त
पर अदालत तवज्जो न करे तो महज बेकार होजाय पर रिस्पॉन्डे-
न्ट को कैयासन खिलाफ कागजात बन्दोबस्त के और बावजूद त-
सलीम काश्त १० बरस के दखीलकार करार देना गलत है

उम्मेदवार हूं कि बतलब मिसिल व जनस्खी हुकन मातहत के इतला
नामा जारी फरमाया जावे ॥

फिदवी शेख बहादुर अली अपीलान्ट
मारुजे र्द अगस्त सन् १८८३ ई०

गरीब परवर सलामत

दादरवाह व नाराजी हुकन जनाब साहिब कलेकर बहा-
दुर मसदूरह ३ जून सन् १८८३ ई० - मुशर्र नामंजूरी हक्क शुफा मूजि-
बात अपील ऊपर उजरत जैलके हुजूर में व उम्मेद हक्क रसी अपनी गुजरानता है ।

अब्वल यह कि खुद साहिब कलेकर बहादुर अपनी
तजवीज में तहरीर फरमाते हैं कि उजरदार जिमीदार
मोरूसी देह से नहीं है बल्कि मुफ्तरी है पस मुकाम गौर है कि
बाप फिदवी और बाद वफात उनके फिदवी जरिये बे के अर्सा चालीस
वर्ष से ऊपर २० बिस्वा देह हाजा के काबिज है तो फिर मोरूसी
होने दादरवाह में कौन शक बाकी रहा क्योंकि अपीलान्ट व विरा-
सत बाप अपने के काबिज हक्कियत मुबैयह हुआ है और जब
कि अपीलान्ट हक्कियतदार बजरिये बेनामा देह हाजा में करार पा
चुका तो हस्ब अरायत वाजिबुल अर्ज महस्समी दादरवाह निस्बत
हक्क शुफा सरसर खिलाफ इन्साफ है ।

२०००

दूसरे यह कि यही हक्कियत मुतनाजा व एवज दो हजार रुपया
पास अपीलान्ट रहन है तो व इस्तहकाक मुर्तहिनी मुकद्दम हक्क नि-
स्बत शुफा सिवाय अपीलान्ट और किसी का नहीं ।

तीसरे यह कि फर्ज भी किया जावे कि अपीलान्ट जिमीदारान मोरूसी
देह हाजा से नहीं है तब भी व मुकाबिले मुसम्मियान के सरीसिंह व

नरायणसिंह ज्यादातर इस्तहकाक रखता है क्योंकि मुशतरियान
हाल मौजा डांडह में रहते हैं और न किसी कदर हकियतदार
इस देह में है मगर महसुमी ताला अपीलान्ट से कुछ इल्तफात ऊ-
पर उजर अपीलान्ट के नहीं हुआ इसवास्ते उम्मेदवार हूँ कि मिसिल
तलब होकर बमसूरवी हुकम मातहत दाद मादलत बखशी जावे फ़कत
अर्जी

फ़िदवी नाथूराम उजरदार अपीलान्ट साकिन
मौजा दांदूपुर परगने खैरागढ़
मास्ते २६ जून सन् १८६२ ई०

गरीब परवर सलामत

दादरवा बनाएजी हुकम जनाब कलेकर बहादुर ज़िले
आगरा - मसदूरह १८ दिसम्बर सन् १८६१ ई० ब उम्मेद बहाली
हुकम मसदूरह ३१ अक्टूबर सन् १८६१ ई० मा बैन मियाद अपील
दरखास्त मुराफेसानी हुज़ूर में गुज़रानता है ।

अवल यह कि तर्कर नम्बरदारी में कसरत राय हकियत-
दार पर गौर फ़रमाना चाहिये सो मुफ़ अपीलान्ट से पांच कस
हकियतदार १३ बिस्वा के होने नम्बरदारी मेरी से राजी हैं और जो
पांच कस हिस्सेदार रस्पांडेन्ट से राजी हैं वह ७ बिस्वा के हैं तो ब
हर सूरत साहिब ममदूरह को कसरत राय हकियतदार देरवना
चाहिये थी सो ऐसा न हुआ और कतअ्र नज़र इसके मिन् जुमले
उन १३ बिस्वा के सिर्फ़ में ही हकियतदार ८ बिस्वह का हूँ और जो
७ बिस्वह के हकियतदार नाथूराम से ख़ामंद हैं उसमें सिर्फ़ नाथूराम
एक बिस्वह का हकियतदार है इस सूरत में फ़िदवी हकियतदार

निस्वत नाथूराम के ज़्यादाह बिस्वह का है इन्साफ़ इसका ताल्लुक
हुज़ूर है ।

दूसरे यह कि लियाक़त सायल यह है कि छः सात मौज़ा खास
जिमीदारी अपनी हैं और हजारहा रुपये का देन लेन करता है और
१३ बिस्वा खास मौज़ा हाज़ा में हैं इस हालत में नालियाक़ती सा-
यल क्योंकर आयद हो सकती है ।

तीसरे मुसम्मा नाथूराम जिसकी निस्वत अब तक़रूर नम्बरदारी
तजवीज़ हुई है आदमी बद तरीक़ और बद चलन है अगर नाम
उसका नम्बरदारी में दर्ज हुआ तो बिलफ़ेल बरबादी हक़ियत फ़िदवी
की मुत्सव्वर है क्योंकि नामबुर्दह तरह तरह के फ़साद करेगा
लिहाज़ा उम्मेदवार हूँ कि ब मंसूखी हुक्म हाकिम मातहत दाद माद-
लत बरवशी जावे फ़क़त

अर्जी

फ़िदवी भरतसिंह अपीलान्ट साकिन मौज़ा सलेमपुर
हिस्सेदार १३ बिस्वह - मारुजे १६ जनवरी सन् १८६२

गरीब परवर सलामत

जनाब आली फ़िदवियान दरखास्त अपील बनाराजी हुक्म
जनाब साहिब कलेक्टर बहादुर ज़िले आगरा - मसदूरे १० अप्रैल
सन् १८६५ ई. बडिप्री कलेक्टर बहादुर मुव्वरवा १० फ़रवरी सन् १८६५
ई० ब दावी शुफ़ा हुज़ूर में गुजरानते हैं ।

१— जो कि नीलाम हक़ियत सीताराम जिमीदार मौज़े भरतिया
परगना दूरादतनगर ब इल्लत डिगरी अदालत दीवानी ब तारीख २०
जनवरी सन् १८६५ ई० पेगागाह डिप्री कलेक्टर बहादुर से करीब

४ बजे दिन के खतम हुआ जब तक हम अपीलान्त दरखास्त हकशुफा अपने की मुख्तार से तहरीर कराये इस अर्से में डिप्टी साहिब कचहरी बरखास्त करगये चुनांचे वह दरखास्त तहरीर शुदा दूसरे दिन वक्त खुलने कचहरी और इजलास फरमाने डिप्टी साहिब के गुजरानी उस पर ज़कन तहरीर कैफियत सरिफते का हुआ हम अपीलान्त बराबर १५ दिन तक रुपया नीलाम का लिये हुए हाजिर रहे और अहिलमद नीलाम से वास्ते लिये जाने रुपये और लिख देने कैफियत के कहते रहे वह आज कल करता रहा लान्चार होकर ६ फरवरी को दूसरी दरखास्त बंजूर डिप्टी साहिब गुजरानी बाद गुजरने दूसरी दरखास्त के तारीख ७ फरवरी को अहिलमद ने यह कैफियत लिखी कि दरखास्त शुफा खिलाफ कानून के दूसरे दिन गुजरी है लायक खारिज होने के है इस कैफियत पर दावी फिदवियान पेशगाह डिप्टी साहिब से नामंजूर हुआ अपील उसका बंजूर साहिब कलेक्टर बहादुर दायर किया तो उस पर ज़कन दाखिल दफ्तर होने का सादिर हुआ ।

आलीजाहा इसमें सरासर हकतलफ़ी फिदवियान की है अव्वल तो नीलाम बर वक्त बरखास्त होने कचहरी के हुआ और वास्ते हकशुफा के मियाद ६ घंटा मुकरर है जिस हालत में कचहरी १ घंटे के बाद बरखास्त होगई तो वह मियाद बर वक्त खुलने कचहरी के ६ घंटे तक मुजरा होनी चाहिये तो इस मियाद में दरखास्त शुफा गुजरी जाय गौर है कि जिस ऐक का जिकर अहिलमद ने अपनी कैफियत में लिखा है उसमें मियाद ६ घंटा दर्ज है इस वास्ते नकल ज़कन साहिब कलेक्टर बहादुर हमरिफता दरखास्त हाजा गुजरान कर उम्मेदवार हैं कि तलबी मिसिल होकर बाद मुलाहिजा उसके

हुकम हाकिम मातहत मनसूख होकर हुकमशुफा मंजूर फरमाया जावे
 फिदवियान हरदयालसिंह व बल्देवसिंह
 जिमीदारान मौजे सैयां परगना दूरादतनगर
 मासुजे ५ मई सन् १८६५ ई०

गरीब परवर सलामत

अपीलांट व नाराजी हुकम जनाब साहिब कलेक्टर बहा-
 दुर जिला बिजनौर मुवरखे ७ अप्रैल सन् १८६५ ई० और जनाब
 डिप्टी कलेक्टर बहादुर मुवरखे २८ अगस्त सन् १८६४ ई० व
 मुकद्दमे तसफिया तनाजा सरहद्द मौजे जमालपुर साथ मौजे
 उमरपुर परगना नगीना व आदमपुर परवावली परगना बड़पुरा
 जिला बिजनौर हुजूर वाला में गुजरान कर दादखाह है।

१- यह मुकद्दमा सीगे बन्दोबस्त से फ़ैसल हुआ है लिहाजा
 अजी हाजा माबेन मियाद ३ माह के गुजरान कर उम्मेदवार मंसूरवी
 अहकाम जिला है।

२- इस मुकद्दमे में हुकम तर्कर पंचादत नाफिज हुआ जब
 कि अपीलांट को हाल तरफदारी पंचों का दर्याफ्त हुआ तो २२ जूलाई
 सन् १८६४ ई० को कबल तहरीर फ़ैसले पंचादत के किता अजी
 वास्ते तर्कर और पंचों के गुजरानी बाबजूद गुजरजाने अजी के
 पंचों ने अजरुस्त रिषायत और तरफदारी जिमीदारान आदमपुर
 परवावली परगना बड़पुरा २३ जूलाई सन् १८६४ ई० को खिलाफ़
 वाक़े फ़ैसला पंचायत तहरीर किया और जनाब डिप्टी कलेक्टर
 बहादुर ने उस फ़ैसले पंचायत को कायम रक्खा और अपील में
 जनाब साहिब कलेक्टर बहादुर ने हुकम डिप्टी कलेक्टर का

बहाल फरमाया ।

३— जो कि कबल तहरीर फ़ैसला पंचायत अपीलान्ट ने
अर्जी हाल बेई मानी पंचों की ब ड़ज़ूर हाकिमान ज़िला गुज़-
रानी कि पंचोंने बाद गुज़रने अर्जी के ख़िलाफ़ वाक़े फ़ैसला
पंचायत तहरीर किया है और आराज़ी मक़बूज़ा क़दीम हमारी
शामिल मौज़े आदमपुर परवावली करदी है कि उससे सरासर
हक़ तलफ़ी अपीलान्ट की है लिहाज़ा अर्जी हाज़ा गुज़रान कर
उम्मेदवार हूँ कि बाद तलबी मिसिल और मुलाहिज़े अर्जी
उज़रदारी अपीलान्ट के मंसूखी अहक़ामात ऊक्काम ज़िला व तस-
फ़िया तनाज़ा सरहद अज़स्त्य तक़रूर पंचान जदीद फ़रमाई
जावे वाजिब था अर्ज किया ।

फ़िदवी सईदुद्दीन ज़िमीदार मालगुज़ार
मौज़े जमालपुर अपीलान्ट
मारुजे ६ जूलाई सन् १८६५ ई०

अरायज़ सीगे दीवानी

ठाकुर प्रशाद वल्द हनूमान प्रशाद कौम बक्काल साकिन
फ़रीदपुर परगना व ज़िला आगरा " " " मुद्दई
बनाम हीरालाल वल्द मन्तूलाल कौम बक्काल साकिन
मौज़ा मज़कूर " " " " मुद्दप्पाअले

दावी दिलापाने ५०० रुपये अस्ल व सूदबर बिनाय तमस्सुक
शरीब परवर सलामत

बयान दावी यह है कि मुद्दप्पाअले ने बैसार बदी ८

संवत् १८०५ को ३५० रु० नकद मुक्त से बमुकाम इरादत नगर कर्ज
लेकर और ५० रु० का तमस्सुक नविशता जवाहिरलाल बकाल मरकूमे
कुवार सुदी १२ संवत् १८०३ मेरे मदयून का वापिस लेकर वह
रुपया भी जिम्मे अपने लेलिया और कुल्ल ४०० रु० का तमस्सुक
अपनी तरफ से कागज स्टाम्प कामिल कीमत पर ब वादे अदाय
कुल्ल रुपया अर्से एक साल में मये सूद फी सदी १ रुपया माहवार लि
ख कर अपने अलब्द व गवाही से मुरतब कर दिया और बाद
तहरीर तमस्सुक के २ महीने के करीब गांव में रहकर बड़ौदा को
चला गया २ बरस बाद वहां से वापिस आया मैंने तकाजा किया
तो ब हजार दिक्कत ५० रुपये मित्ती असाद सुदी ५ संवत् १८०७
को वसूल दिये बाद इसके बा वजूद तकाजा कुछ वसूल नहीं दिया
इसलिये मुद्दई नादिहन्दी मुद्दआअले से तंग आकर यह अर्जी
नालिश व दावी दिला पाने ३५० रु० अस्त बाकी और १५० रु० सूद
ब हिसाब फी सदी १ रु० माहवार जुमला ५०० रु० इजूर में गुजरान
कर उम्मेदवार हूं कि दावी मये सूद आयन्दा मुद्दआअले से दिलाया जावे

कमतरीन ठाकुर प्रशाद मुद्दई

मारजे ६ मई सन् १८६४ ई०

मैं मुद्दई कि नाम मेरा मुन्दर्ज अर्जी हाजा है इकरार करता हूं कि जहां
तक मुक्त को इल्म व यकीन है मजमून अर्जी हाजा हर्फ ब हर्फ सही व दुरुस्त है

बरखुल्लाखां साकिन फीरोजा बाद

"

मुद्दई

बनाम दिलावरखां साकिन फीरोजा बाद

"

मुद्दआअले

दावी ५० रुपये कीमत दीवार

गरीब परवर सलामत

फिदवी ने दीवार शिमाली अपने मकान की ब एवज ५० रु०
के मुद्दाम्नामले से अजस्त्य किवाला मरकूमे १० दिसम्बर सन् १८७९
ई० रजिस्टरी शुदा खरीद की थी अब कि मकान फिदवी का सड़क में
आगया इसलिये अमला मकान मजकूर का कुम्हारों के हाथ ४०० रु०
के बदले बेच डाला मुद्दाम्नामला मजकूर दीवार मरकूमे सदर पर
दखल कुम्हारों को नहीं देता और दंगा और फसाद को मुस्तैद होता
है अब तक इन्तजार किया कि शायद अहिल मुहल्ला के समझाने
से तकरार से बाज आवे इस भमेले में २ महीने होगये लाचार किवा-
ला इस अर्जी में नत्थी करके उम्मेदवार हूं कि मुद्दाम्नामले से दखल
दीवार मजकूर पर सर्कार से दिलाया जाय और दीवार न दिया
चाहता हो तो बाद तहकीकात ५० रु० की डिगरी नामबुर्दा पर मये
खर्चे अदालत के कीजावे कि फिदवी अपने हक को पञ्चकर इस भगड़े
से रिहाई पावे ॥

फिदवी बख्शुल्ला खां साकिन फीरोजाबाद
मारजे २७ जूलाई सन् १८७४ ई०

मैं मुद्दई तसदीक करता हूं कि ता हद इल्म मेरे मजमून इस अर्जी
का सही है ॥

गुरप्रसाद वल्द शंकरलाल कौमक्षत्री पेशाजिमीदारी

साकिन फतेहपुर

मुद्दई

बनाम जोरावरसिंह व बहादुरसिंह वगैरह साकिन फतेहपुर "मुद्दाम्नामले हुम
मुद्दई हस्ब जैल अर्ज करता है

१- मौजे उत्तमपुर में १६५ बीघा आराजी है मिन् जुमला उस के
जोरावरसिंह वगैरह हिस्से दारान ब कदर ॥ आने के हैं और मुद्दई

हिस्सेदार ३८ पार्स का है ।

२— जोरावरसिंह वगैरह ने मिन जुमला ॥ आने हिस्से मजकूर के हिस्सा ॥ आने का फकीरचंद दुबे शरवस अजनवी के हाथ बतारी व बैसारव सुदी १३ सन् १२८८ फसली मुताबिक १२ मई सन् १८८२ ई० को ब कीमत ३००० रुपये के बिला इत्तला व आगाही मुफ मुद्दई हिस्सेदार मौजे मजकूर के बै किया ।

३— मुताबिक शरायत वाजिबुल अर्ज मुतअल्लकै मौजे मजकूर के यह हिस्सा ॥ आने का बनाम मुद्दई बै होना चाहिये या बिला रजा-मंदी मुफ मुद्दई के ब नाम शरवस अजनवी बै नहीं होसक्ता ।

४— कीमत मुन्दर्जे बैनामा ३००० रुपया सही नहीं है बाकै में १४०० रु० दिया गया है चूंकि बहादुरसिंह मुद्दआअले ने शरवस अजनवी को शरीक बैनामा नाजायज तौर पर कराया है इसलिये उसका दूस्तहकाक भी ज़ायल होगया मुद्दई मुस्तहिक डिगरी बाबत हिस्से ॥ आने के है और दस्तावेज मनशा दावी पीछे से दाखिल करुंगा

५— मुद्दई मुस्तदई है कि बअदाय १४०० रु० असली कीमत के डिगरी व नाजवाजी बैनामा बैसारव सुदी १३ सन् १२८८ फसली के व दूस्तहकाक शुफा फरमाई जावे और खर्चा अदालत भी मुद्दआअले हूम से दिलाय मिले ॥

फिदवी गुरप्रशाद मुद्दई

मारुजे २८ अप्रैल सन् १८८२ ई०

मैं मुद्दई कि नाम मेरा मुन्दरज अर्जी हाजा है तसदीक करता हूं कि मजमून इस अर्जी का हर्फ व हर्फ सही है ॥

फकीरचंद साकिन नागपूर

मुद्दई

बनाम

सुखबासीलाल साकिन नागपूर

मुद्दप्पाप्पले

दावी ३५० रु० अस्ल मये सूद

अजस्त्य तमस्तुक

गरीब परवर सलामत

मुद्दप्पाप्पले मजकूर ने चैत सम्बत् १८२० में २७५ रु० नकद मुक्त से लेकर तमस्तुक मियादी २ साल बढकार १ रुपया सेकड़ा माहवारी लिख दिया था चूंकि आज तक मुद्दप्पाप्पले ने अपने ढकार के बमूजिब जर कर्जा अदा नहीं किया और मांगता हूं तो हीला हवाला करता है इसलिये बसबब नादि हन्दी मुद्दप्पाप्पले के २७५ रु० अस्ल के और ७५ रु० सूद के बहिाब १ रुपया सेकड़ा माहवारी तारीख तहरीर तमस्तुक से तारीख नालिषा तक जुमला ३५० का दावीदार हूं उम्मेदवार हूं कि मुद्दप्पाप्पले की तलबी होकर रुपया मये खर्ची अदालत के दिलाया जावे और अस्ल तमस्तुक मये फर्द हिाब अर्जी के साथ नत्थी कर के पेश करता हूं ॥

फिदवी फकीरचंद साकिन नागपूर मुद्दई

मारुजे १२ अप्रैल सन् १८६६ ई०

में मुद्दई तसदीक करता हूं कि मजमून अर्जी हाजा सही है ॥

बल्देवसिंह बल्द बहादुर सिंह कोम पवार साकिन

मोजे जैबापुर परगना बारी

मुद्दई

बनाम मुसम्मात सोभा बेवा ववारिसा महावीरसिंह

कौम पचार साकिन मौजा लालपुर परगना महोबा " मुद्दप्पाअले
दावी दरवल यावी १३ खेत वाकै मौजे लालपुर व १०॥॥ आने
सूद बर बिनाय दस्तावेज रहननामा मुहरिगा १५ अगस्त
सन १८७२ ई० रजस्टरी शुदा

गरीब परवर सलामत

तशरीह दावी यह है कि महाबीरसिंह शौहर मुद्दप्पा-
अलेहने खेत मजकूर को ब एवज ७५ सूदी ३५ सेकड़ा माहवार
पास मुद्दई के रहन करके इकठार किया था कि सूद साल ब साल
अदा करेंगे और जर अस्त आखिर जेठ सन १२८१ फ० मुताबिक -
३१ मई सन १८७४ ई० तक अदा करेंगे और दर सूरत खिलाफ
बादा मुत्तहिन को खेतों पर देखल दूंगा चुनाचे भिनजुमला सूद के
सिर्फ ३३ अदा किये बाकी जर अस्त व सूद नहीं अदा किया और
मियाद बादा गुजर गई लिहाजा अब मुद्दई उम्मेदवार है कि हस्त
शर्त रहननामा खेतों पर दरवल दिलाया जावे और १०॥॥ आने बाकी
जर सूद की डिगरी मुद्दई को मिले ॥

फिदवी बलदेवसिंह मुद्दई

मारजे ७ जनवरी सन १८७८ ई०

मैं मुद्दई तसदीक करता हूँ कि मजमून अजी हाजा हफ बहफ सही है

देवीदीन बकाल साकिन सीता बड़ी इलाकै नागपुर " मुद्दई

ब नाम

चंदीदीन कलाल साकिन मौजे सोनी गांव इलाकै मजकूर " मुद्दप्पाअले

दावी दरवल यावी तरबमीनन १४ बिस्वाजिमीन

वाकै मौजे मजकूर ब तरेउन ३६

गरीब परवर सलामत

बयान दावी यह है कि हमारे बाप दादा के वक्त से आरा-
जी मजकूर मेरे खानदान में चली आती है और १० बरस से मेरा
उस पर कब्जा है शादी ब्याह में बिरादरी के लोग वहां जमा
होते थे अब अरसा तरख मीनन १ साल का हुआ होगा कि मुद्दाअले
ने अजराह जबरदस्ती व सीनाजोरी उस पर अपना कब्जा करके
आमादा फसाद होकर हमको बे दरखल कर दिया है चुनाचे पहिले
हमने अर्जी कचहरी फौजदारी में दी थी वहां से दीवानी में नालिषा
करने की हिदायत हुई इसलिये यह अर्जी गुजरान कर उम्मेदवार
हूं कि बाद तहकीकात इन्साफ हमारा फरमाया जावे ॥

फिदवी देबीदीन बकाल मुद्ई

मारुजे १० अप्रैल सन् १८८२ ई०

में मुद्ई कि नाम मेरा मुन्दरुज अर्जी हाजा है इकारर इस बात का
करता हूं कि मजमून अर्जी हाजा ताहद इल्म व यकीन मेरे सही है ॥

बिलासराय वल्द खुशालसिंह साकिन समनगर परगना वजीराबाद मुद्ई
ब नाम

भजनलाल वल्द सदासुख कोम ब्राह्मन व किसानसिंह वल्द

महा नरायन कोम अहीर साकिन मौजे बलापुर मुद्दाअलेहूम

दावी दिला पाने सुबलिंग १५५ बाकी जर महाल साल तमाम

सन् १८५८ ई० बाबत आराजी कापूत वाकै पट्टी शर्की रामनगर

परगना फीरोजाबाद बभूजिब फर्द वसूल बाकी नविषता पटवारी

गरीब परवर सलामत

बयान दावी यह है कि मौजे रामनगर परगना वजीराबाद में

१० बिस्वा पट्टी शरकी का लंबरदार मुद्दई है और १० बिस्वा पट्टी गर्बी का लंबरदार सम्प्रादतरां है और आराजी वजमा दोनों पट्टी की बमू-जिब डिगरी अदालत जज मातहत बहादुर जिले इटावा फीमा बैन दोनों लंबरदारों के व माह मई सन् १८८२ ई० तक सीम होगई है मुद्दआअलेहूम सन् १२५४ फसली से आराजी टीला व किनारा दरियाय गंगा बाँके मौजे मजकूर के फिदवी की तरफ से काश्तकार हैं और पट्टा व कबूलियत में ५५७ बीघा आराजी खाम लंबरी १३५ व १३७ मुन्दर्ज है जो हर साल कागज निकासी पटवारी में मये लगता मुन्दरजे कबूलियत लिखी जाती है और ६१ बीघा आराजी नाकिस लंबरी १४५ जिस पर मुद्दआअला रोंदा वगैरह रखा लेते हैं उस पर लगता नहीं लिखा जाता चुनान्चे बाबत फसल खरीफ व रबी सन् फलां फसली के मुबलिग ५३० बाबत महासिल आराजी मुतजकारे वाला वाजिबुल अदा थी उसमें से मुबलिग ३७५ मुद्दआअलेहूम ने अदा किये और १५५ बाकी रहे बावजूद तकाजा के अदा नहीं करते इसलिये अर्जी नालिशा गुजसनकर उम्मेदवार हूं कि जर दावी मजकूर मये सूद मुद्दआअलेहूम से दिलाया जावे ॥

फिदवी बिलासराय मुद्दई

मारजे ३ जूलाई सन् १८८३ ई०

में मुद्दई कि नाम मेरा अर्जी हाजा में मुन्दरज है इकार करता हूं कि मजमून अर्जी हाजा हर्फ ब हर्फ सही व दुरुस्त है ॥

रहीम बख्श सोदागर साकिन आगरा " " मुद्दई

व नाम

इलाही बख्श बूचड़ साकिन आगरा " " मुद्दआअले

दावी दिला पाने मुबलिग ३६०० रुपये बमूजिब

कागजात हिसाब

गरीब परवर सलामत

जनाब आली मुद्ई और मुद्आप्पला ने मिल कर
निष्का निष्की शिराकत से चमड़े का कारखाना जारी कियाथा और
उसी जमाने शिराकत में मुद्आप्पला ने मुभसे मुबलिग ५०००
उधार लियेथे चुनाचे शिराकत की बही में मुद्आप्पले के नाम दर्ज है
२० सितंबर सन् १८७१ तक ४००० वसूल हुए ३६०० प्रस्लके मुभ
मुद्ई को चाहिये देता नहीं हीला हवाला करता है कई दफे बतह-
रीर खतूत रुपया तलब किया मुद्आप्पला जवाब में जर कर्जे का
इक़रार करता है इसलिये प्रजी हाजा मये फर्द हिसाब व खतूत
दस्तरखती इक़रारी मुद्आप्पला पेश करके उम्मेदवार हूं कि जर प्र-
स्ल मये खर्चा अदालत दिलाया जावे ॥

फिदवी रहीम बख़्श सौदागर साकिन आगरा

मुद्ई - मारुजे २५ फ़रवरी सन् १८७२ ई०

में मुद्ई इक़रार इस बात का करता हूं कि बयान मुन्दर्जे प्रजी-
हाजा सही है ॥

नजीरखां वल्द वजीरखां साकिन सीता बड़ी इलाके नागपूर मुर्तहून " मुद्ई
ब नाम

अमीरखां वल्द हींगनखां साकिन मोजा मजकूर राहिन " मुद्आप्पले
दावी दिला पाने २७२ जर रहिन मये सूद मकान मकफूल राहिनसे
गरीब परवर सलामत

जनाब आली मुद्आप्पले ने अपना मकान बतौर रहन

ब एवज मुबलिग २०० रुपये व करारदाद सूद १५ सैकरा माहवार व
 इकरार अदाय २ साल मुफ मुद्दई के पास मकफूल कर दिया था रह-
 न नामा रजस्टरी शुदा मौजूद है बजाय दो साल के तीन साल होगये
 मुद्दआअला अपना मकान वा गुज़ाहत नही कराता और न आज तक
 एक हब्बा सूद का दिया और न मुद्दआअला के पास सिवाय मकान
 मज़कूर के और कोई जायदाद है उम्मेदवार हूं कि बमूजिब रहन-
 नामा व हिसाब मुनसलका अर्जी हाज़ा ज़र अस्त मये सूद मुबलिग
 ७२ के डिगरी होकर व नीलाम मकान हक्करसी फ़िदवी की फ़रमाई
 जावे या मकान मज़कूर पर मुफे दरबल दिलाया जावे ॥

फ़िदवी नज़ीरखां मुर्तहिन मुद्दई

मारुजे २५ नवम्बर सन् १८७२ ई०

मैं मुद्दई कि नाम मेरा मुन्दरज अर्जी हाज़ा है तसदीक करता हूं कि
 मज़मून इस अर्जी का हर्फ व हर्फ सही व दुरुस्त है ॥

राजाराम व रामहेत पिसरान हरीशंकर कोम बाहान साकिन

मौजे रामपूर परगना जलालाबाद " " " " मुद्दईयान

बनाम

हरपतराय व अजुध्या अशाद बगैरह साकिन मौजे रामपूर

परगना मज़कूर " " " " " " मुद्दआअलेहूम

दावी दिला पाने १०८६ मन २७ सेर गल्ला मिनजुमला

२१७३ मन १४ सेर गल्ला फ़स्त रबी बाबत सन् १२७० फ़०

ग़रीब परवर सलामत

बयान दावी यह है कि बाद मिनहार्द हिस्सा दीगर
 शुरका के बिलकुल गल्ला खलियान में मौजूद था उसको व तारीख

२६ मार्च व ३ अप्रैल सन् १८८३ ई० मुद्दामुल्लेख मजदूर राह जबर-
दस्ती उठाकर लेगये व सूरत अदम दस्तयाणी गल्ला व दिला पाने
मुबलिग ४५५॥ ३॥ १० पाई कीमत गल्ला व मुबलिग १२२॥ ॥ ॥ अने सूद
जुमला मुबलिग ५७८॥ ३॥ १० पाई बाबत कीमत मजदूर मुस्तागीस
हैं उम्मेदवार कि व वृजराय सम्मान हस्ब जाबता अदालत से दावी
मजदूर मुद्दामुल्लेख से मये खर्चा अदालत व सूद तायूम वस्तुल
दिला मिले और जहूर बिनाय दावी तारीख उठाये लेजाने गल्ले
से पैदा हुई ॥

फिदवियान राजाराम व रामहेत साकिन मौजे राजपूर

मुद्दियान - मारुजे १५ सितम्बर सन् १८६६ ई०

हम मुद्दियान तसदीक करते हैं कि मजमून अर्जी हाजा सही है ॥

बाबू सरजू प्रशाद वल्द बाबू रूपचंद मुतवाफा कौम अगरवाला

पेशाजिमीदारी व महाजनी साकिन मौजे अलीनगर मुतअ-

ल्लिके गोरखपुर व हिस्सेदार मौजे परासी पट्टे देवरानू परगना

मनसूर नगर बस्ती मुद्द

बनाम मुसम्मात राजकुंवर जोजे रामअधीन कौम क्षत्री साकिन

व हिस्सेदार मौजे मजदूर मुद्दामुल्लेख

दावी दिला पाने मुबलिग १३१॥ अने अस्त व ३२॥ अने सूद

जुमला मुबलिग १६३॥ ॥ ॥ अने जर मुनाफा मुतसरफा मुद्दामुल्लेख

बाबत हिस्से ३४ पाई मुद्द मौकूये कुरा ॥ अने वृजमाली वाकै

मौजे परासी पट्टे देवरानू परगना मनसूर नगर बस्ती बर बिनाय

फर्द वासिल जाकी दस्तखती अपने बाबत सन् १२८६ व १२८७

व १२८८ फसली कि जहूर दावी का ३० माह जून से वकूफ-

पिजीर झुप्पा हस्ब मनशा हर्फे ज दफा र्द ३ ऐक १२

सन १८८१ ई०

मुद्दई हस्ब जैल अर्ज करता है

१- मौजे परासी में मिनजुमला थोक कुरा हिस्सा ७ इजमाली के ३४ पार्द हिस्से मुद्दई के और ७॥ पार्द हिस्से मुद्दप्पाअलेहाके हैं और हम ब इन्दराज नाम खेवटदारी के काबिज हैं ।

२- कुल्ल पैदावार कुरा ७ इजमाली की मुबलिग ८२॥॥ ६ पार्द सालाना इसमें पैदावार मुनाफा हिस्से मुद्दई का मुबलिग ४८॥ अने व मुनाफा हिस्से मुद्दप्पाअलेहामुबलिग ३४॥॥ ६ पार्द हैं ।

३- मिनजुमला पैदावार ४८॥ अने सालाना हिस्से याफ़नी मुद्दई के बाद मिनहार्द मुबलिग ३८॥ ६ पार्द लगान सीर मवाजी १बीघा १बिस्वा लगता आराजी पुरता लम्बरी १४२ व १४३ मुद्दई के व नीज मिनहार्द १८॥ ६ पार्द लगान काफ़त गुलजार लुहार काफ़तकार जो मुद्दई को वसूल झुप्पा मुबलिग ४३॥॥ अने मुनाफा सालाना याफ़नी मुद्दई ३ साल का बक़दर ज़र दावी अस्त मये सूद व जिम्मा मुद्दप्पाअलेहानिकलता है मुद्दप्पाअलेहामज़कूर कुल्ल पैदावार थोक का व मनसब हिस्सेदारी महाल इजमाली के बज़रिये करने सीर व तहसील आसामियान के तसरुफ़ करगई बावजूद मतालबा मुद्दई को कुछ मुनाफा नहीं दिया मुद्दई ने मालगुजारी अपने हिस्से की तहसील में अपने पास से जमा करदी है ।

४- पटवारी देहा ब इत्फ़ाक़ मुद्दप्पाअलेहा है ब तकवियत उसके मुद्दप्पाअलेहाने ज़र मुनाफा मुद्दई को नहीं दिया बल्कि व़सी तरह मुद्दप्पाअलेहाने मुनाफा पिछले सालों का भी नहीं दियाथा उसकी डिगरी ब हक़ मुद्दई ऊर्द व मुनाफा मुद्दप्पाअलेहाने ख़जाने में जमा करदिया है ।

५- मुद्दई मुस्तदई है कि डिगरी दावी की मये सूद प्रायन्दा तायूम
वस्तूल व खर्चा मुकदमे के सादिर होवे फर्द वासिल बाकी में पैदावार
वगैरह की तफसील दर्ज है ॥

फिदवी बाबू सख्त प्रसाद मुद्दई
मारुजे १३ दिसम्बर सन् १८८१ ई०

जैगुपाल वल्द मोहन कोम काछी साकिन कानपुर .. मुद्दई

व नाम

ठकुरी वल्द नाथ कोम काछी साकिन मुकाम मजकूर .. मुद्दप्रप्रला

दावी मुबलिग १५) सर्फ शादी वर बिनाय गवाही गवाहान

गरीब परवर सलामत

जनाब प्राली मुद्दप्रप्रला मजकूर ने मुसम्मात भुनकिया
बुरखतर अपनी की शादी साथ साहिब दीन पिसर मुक्त मुद्दई के करने
का कोल करार करके बैसाख बदी ८ संवत् १८३० मुताबिक २० अप्रैल
सन् १८७३ ई० को अदाय रस्म टीका की जिसमें मुबलिग १५) बाबत
तवाजो मर्दुमान बिरादरी हस्ब तफसील जेल मुक्त मुद्दई के सर्फ हुए
अब माघ सुदी ११ संवत् १८३३ मुताबिक ६ फरवरी सन् १८७६ ई०
को करने शादी से बिला वजह महज इनकार किया और इसी ६ फरवरी सन्
१८७६ ई० को जर मुतदावियह बजुम्मा मुद्दप्रप्रला वाजिबुल अदा
होगया और यही तारीख जहूर बिनाय दावी है उम्मेदवार कि जर मुत-
दावियह व इजाफा खर्चा अदालत मुद्दप्रप्रले से दिलाया जाय ॥

पी ५) रु० मैदा दे ॥ अनेकी शकूर २॥ की तरकारी १) रु०

फिदवी जैगुपाल मुद्दई मारुजे २८ मई सन् १८७६

में मुद्दई तसदीक करता हूँ कि बयान अजी हाजा सही व दुरुस्त है ॥

राम प्रसाद वल्द छोटराम भाड़वारी साकिन व दुकानदार अरौंचा
 परगना महीना तहसील मलियाबाद जिला लखनऊ ॥ मुद्दई
 बनाम इमामी वल्द छोटे कौम हलवाई साकिन व दुकानदार
 मुकाम मजकूर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ मुद्दाम्प्राला

दावा दिला पाने ४५) कर्जी अस्त व सूद हस्व तफसील
 जैल बर विनाय तमस्सुक रजस्टरी शुदा मुसद्दिका १०

अगस्त सन् १८८८ ई०

गरीब परवर सलामत

बयान लावी यह है कि मुद्दाम्प्राले ने ३०) मुक मुद्दई
 से कर्ज लेकर वादा अदाय जर मुन्दरजी तमस्सुक माह बैसारव सन्
 १२७५ फसली मुताबिक ६ मई सन् १८८८ ई० कियाथा और यह
 इकार था कि दर सूरत अदम वस्तुल जर एक किता दुकान वाकै मोजे
 अरौंचा पर दखल मुक मुद्दई का कराय देवे लेकिन बावस्फ इन-
 किजा वादे के मुद्दाम्प्राले मजकूर ने नजर मुनदरजा तमस्सुक अदा
 किया और न दुकान पर दखल दिलाया जब सायल दुकान पर दखल
 चाहता है तब आमादा फौजदारी होता है लिहाजा बरजू नालिश
 मुस्तवई हूँ कि जर मतलूवा मये खर्चा अदालत दिला पाऊं और
 तारीख ६ मई सन् १८८८ ई० से जहूर विनाय दावी है ॥

फिदवी राम प्रसाद मुद्दई

मारुजे ५ जनवरी सन् १८७८

मैं मुद्दई कि नाम मेरा मुन्दरज अर्जी हाजा है इकार करता हूँ
 कि जहां तक मुकको इल्म व यकीन है मजमून हफ़ि व हफ़ि
 अर्जी हाजा सही है ॥

राम प्रसाद बकलम खुद

पंडित शिवलाल

बनाम

मुद्दे

कुंवर रघुनन्दनसिंह

मुद्दाम्मले

गरीब परवर सलामत

जो कि मैंने दरखास्त अपने मुद्दाम्मला बनाये जाने की आज दाखिल की थी उस पर यह हुक्म सादिर हुआ कि यह अदालत कुछ हुक्म नहीं देसक्ती और मैं हाईकोर्ट में वास्ते अपने मुद्दाम्मला बनाये जाने के दरखास्त किया चाहता हूं क्योंकि मेरे न मुद्दाम्मला बनाये जाने से मेरा कमाल नुकसान है लिहाजा दरखास्त हाजा गुजरान कर गुजारिण है कि जब तक अदालत हाईकोर्ट से मेरी दरखास्त पर कुछ हुक्म सादिर नहो काररवाई मुकद्मा यहां मुल्तवी फरमाई जावे ॥

महादेव प्रसाद वकील सायल

मारुजे ११ फरवरी सन् १८८२ ई०

चूंकि सायल कोई फरीक मुकद्मा नहीं है लिहाजा इस दरखास्त पर कोई हुक्म इस अदालत से सादिर नहीं होसक्ता ।

हुक्म हुआ कि

शामिल मिसल के रहे- ११ फरवरी सन् १८८२ ई० ॥

गरीब परवर सलामत

मुकद्मा बाबू लक्ष्मीनारायनसिंह वगैरह डिगरीदारान बनाम लाला शिवराम लाल वगैरह मद्रयूनान् ऊजूर में दायर है उस मुकद्मे में तलबी मुफ हरीनन्दनसिंह व वजह मुजाहिमत दाखल आराजियात डिगरी मुदह ऊजूर से अमल में आई है और आज

तारीख पेशी मुकदमा मुकरीर है चूंकि मुझ सायल को चंद नकल
हासिल करना महकमे माल से जस्तर है और बिला देरवने नकूल
के दाखिल करने जबाब से माजूर हूं इसलिये दरखास्त हाजा ऊजूर
में गुजरान कर उम्मेदवार हूं कि मुहलत दो हफ्ते की मरहमत
फरमाई जावे ॥

अर्जी

फिदवी हरिनन्दनसिंह मुद्ग्राशले मदयून
मुवरिखे १७ जनवरी सन् १८८३ ई०

नम्बर १८६

गरीब पर वर सलामत

बमुकदमे बूजराय डिगरी बाबू लक्ष्मीनारायनसिंह वगैरह
डिगरीदारान् जो बनाम जगतसिंह वगैरह मुद्ग्राशले हम इल्लत
मुजाहमत हस्ब रिपोर्ट अमीनके कायम किया गया है उस मुकदमे
में ऊजूर मुझ सायल मुद्ग्राशलेका यह है कि आराजी मुतनाजा
जिसपर अमीन दरख्त दिहानी के लिये गयेथे उस आराजी पर न
हम मुद्ग्राशले काबिज हैं और न कोई मुजाहमत दरख्तदि-
हानी में किया यह मुकदमा सिर्फ वास्ते हैरानी हम मुद्ग्राशलेके
कायम किया गया है मुद्ग्राशलेको हकियत दरख्तदिहानी शुदा से
कुछ तअल्लुक नहीं है लिहाजा दरखास्त हाजा ऊजूर में गुजरान
कर उम्मेदवार हूं कि मुद्ग्राशला इस मुबारजे से बरी किया
जाय जब हम मुद्ग्राशले से कोई तअल्लुक नहीं है व न मुजा-
हमत किया है तो नाहक हम मुद्ग्राशले पर जुर्म हस्ब दफा ३२८
ऐक १४ सन् १८८२ ई० कायम किया गया है मुद्ग्राशलेबद्दन्साफ

अदालत लायक बरी होने के हैं ॥

अर्जी

फिदवी जगतसिंह मुद्दप्पाअले
मास्तुजे १७ जनवरी सन् १८८३ ई०
हुकम हुआ कि

शामिल मिसल हो- अलमरकूम १७ जनवरी सन् १८८३ ई०

हस्त दफा २६३ ऐक १० सन् १८७७ ई०

गरीब परवर सलामत

बसुक्दमे इजराय डिगरी अपने जो बनाम लाला
श्याम वंगेरह मुद्दप्पाअलेहूम दायर हैं डिगरीदारान् हस्त तफ़-
सील जेल अर्ज परदाज हैं ॥

दफा १— आराजियात सीर मतलूबुल दरखल सीर व मकबूजा
खुद मदयूनान हैं चुनांचे ब मुक्दमा नम्बरी सीर व मकबूजा खुद
मदयूनान साबित होकर डिगरीदारान् को हर्जा उसका अजस्तय पै-
दावार खाम के दिलाया गया और उस हुक्क में उजर मदयूनान
का मंजूर नहीं किया गया कि सुबूत उसका मुलाहिजा मिसल नम्बरी
व कैसला साहिब जज बहादुर से बखूबी हासिल है ।

दफा २

डिगरीदारान् को मुक्दमा नम्बरी में दावी मुदारखलत आरा-
जियात सीर का है व शमूल दावी मुदारखलत हक़ियत के था
कि जिसकी डिगरी सादिर ऊई लिहजा हस्त मनशाय दावी व
डिगरी के कबूजा हम डिगरीदारान का आराजियात सीर पर हस्त

दफा २६३ मजभूषा जाबता दीवानी ब बरवास्त कब्जा मदयू-
नान् के वन्साफन मिलना चाहिये और कोई काररवाई साजिशी
मदयूनान् बइतफाक पटवारी देह व आसामियान् इस्त्रियारी
हरगिज लायक लिहाज व सीगे इजर में काबिलतसलीम
नहीं है ॥

प्रज्ञी

फिदवियान महावीरसिंह व लक्ष्मीनरा-
यनसिंह व दीपनरायनसिंह डिगरीदारान्
मास्ते १४ मार्च सन् १८८२ ई०

लुक्कप्रलीखां उर्फ अताहुसेन मुद्ई बनाम जुल्फकारखां व बाबू
गयाप्रसाद व बाबू काशीप्रसाद मुद्ग्राप्रलेहुम

दावी बमनसूखी नीलाम व दरखलावी मकानात व

जिमीन उफतादह वाकै दरियाबाद

बयान तहरीरी मिनजानिब बाबू गयाप्रसाद व काशीप्रसाद मुद्ग्राप्रले-
हुम व वजूह जैल गुजारिषा है ।

१— जायदाद मुतनाजा मालियती तरखमीनन् ८०० है मुद्ईने
त ऐउन मालियत कम कर दिया है ।

२— दावी मुद्ई व वजह तमादी ऐयाम लायक इखराज है
क्योंकि नीलाम तारीख ३० मार्च सन् १८८० ई० को मंजूर हुआ है
और दावी हाल जो कि दर असल बगरज मनसूखी नीलाम है ३ मार्च
सन् १८८२ ई० को बाद मियाद मुकररह कानून रायर हुआ है ।

३— दावी मुद्ई महज लगे और बेजा है ।

४— हम मुद्दाप्रलेहूम से बजरिये बैनामा २२ दिसम्बर सन् १८८१ ई० मिनजुमलै हुकूम उसी हैसियत से कि जिस हैसियत पर जायदाद मुतनाजा नीलाम में खरीद कियाथा बिना हेचक शरायत व अपनी किसी जिम्मेदारी के बदस्त जुल्फकार अलीखं मुद्दाप्रले नम्बर १ बै किया तो अब हम से कोई तम्बल्लुक उस जायदाद से नहीं रहा जो कुछ कि तम्बल्लुक व नफा इक्कियत जायदाद मुतनाजा का हो वह ब मुकाबिले मुद्दाप्रले नम्बर १ के होना चाहिये हमको मुद्द ने बा वस्फ देखने व इल्म शरायत बैनामा के बेकार मुद्दाप्रले कियाहै बहर नोदावी मुद्द लायक दरबाराज है ।

५— मुद्द खुद वक्त खरीद नीलाम व उजुरदारी अपने माल के पैरोकार व मौजूद था तो दफा १९५ कानून शहादत लायक लिहाज है ।

हम बाबू गयाप्रसाद व बाबू काशीप्रसाद मुद्दाप्रले इकार करते हैं कि मरातिब मुन्दरजे दरवास्त ता हद इल्म यकीन हमारे सब सही व दुरुस्त है ॥

अल्ल

द

गयाप्रसाद व काशीप्रसाद बकलम बल्देवप्रसाद मुख्तार ग्राम

गरीब परवर सलामत

मुकद्मा इजराय डिगरी हम डिगरीदारान का ब नाम शिवराम वगैरह मुद्दाप्रलेहूम ऊजूर में दायर है उस मुकद्मे में अदालत से आज यह हुक्म हुआ कि तफसील नाम आसामियान इलाके की जिनसे मुद्दाप्रले ने तहसील करलिया है हम

डिगरीदार दाखिल करें चूंकि आसामियान इलाके का नाम काग-
जात जमाबन्दी से दरयाफ्त करना है लिहाजा यह दरखास्त
गुजरान कर उम्मेदवार हैं कि मोहलत १ हफ्ते की दी जावे कि
नाम आसामियों का तहकीक करके बजरिये दरखास्त अलहदा
पेश करें ॥

फिदवियान महावीर प्रसाद
वगैरह डिगरीदारान्
मारुजे १३ मार्च सन् १८८२ ई०

मुकद्मा दीवानी नम्बर — ब अदालत साहिब जज बहादुर
शहर बनारस

करमसिंह वल्द दीवानसिंह कौम खत्री साकिन मुहल्ले सुखलाल
साहू शहर बनारस पेशा महाजनी बाद वफात करमसिंह पूरन-
चंद व हरनयन मुद्दई करार पाया - " " " मुद्दई
बनाम

हरीशंकर वल्द रामदयाल कौम खत्री साकिन मुहल्ला ब्रह्मताल
शहर बनारस पेशा दलाली " " " " मुद्दआप्पले
हरीशंकर वल्द रामदयाल मजकूर साकिन मुहल्ला सुखलाल
साहूकार शहर बनारस " " " " मुद्दआप्पले अपीलान्ट
शरवस मजकूरे वाला अदालत दीवानी मुहकमे जनाब साहिबजज
बहादुर शहर बनारस ब नाराजी डिगरी बमुकद्मा मरकूमे बाला
मुवररे तारीख ३ मई सन् १८८१ ई० ब वजूह मुफस्सिले जेल
अपील गुजरानता है ।

१— मकान मुतनाजे का असली मालिक मदयून अपीलान्ट है

और मदन के बाप ने बाद अलहदगी करमसिंह अपने रुपये से मकान मुत-
नाजे को बनाम खुद व नीज अज नाम फतहचन्द पिसर खुद खरीद किया
है और तारीख खरीदारी से आज तक बराबर काबिज है और मरम्मत
सालाना उसकी करता है दावी करमसिंह व उसके दीगर पिसरान्
का गैर सही है ।

२— अर्सा दस बरस का हुआ कि करमसिंह का दिवाला निकल
गया और जायदाद उसकी मुतालिबे डिगरियात में नीलाम हुई अगर
बाकई यह जायदाद करमसिंह की होती तो नीलाम से महफूज न रह-
ती और बाज बाज दायनान ने नीलाम पर भी चढ़ाया तो बर तिज्क अजर-
दारी पितर मदन जायदाद बा गुजायत हुई ।

३— मुहकमचन्द गुमास्ता करमसिंह का था और हमेशा से उसका
खैरबाह व दोस्त रहा हालत नदारी में भी वह बराबर अपनी जमानत
से करमसिंह को महफूज करता आया है और करमसिंह अपने
लड़के वालों को उसके सुपुर्द कर गया है तो वह खुद व मंजिले कर-
मसिंह के है उसकी शहादत व मुकाबिले अपीलान्त बे वक़्त है
कि बाला मकान मुतनाजा अज नाम मदन अपीलान्त व कब्जे
मदन अपीलान्त है - शहादत से साबित है कि कब्जा मालिकाना मदन
अपीलान्त बराबर चला आया है व गवाहान् रसपंडेन्ट महज साजि-
शी हैं व बयान तामीर मकान निस्वत रसपंडेन्ट गैर साबित है
बल्कि खास पितर मदन अपीलान्त ने अपने रुपये से तैयार करा-
या है तो ऐसे सबूत के मुकाबिले में तरजीह दिया जाना शहादत
रसपंडेन्ट लायक ऐतराज के है ॥

मास्ते दीजून सन् १८८१ ई०

पंडित शिवलाल सायल अपीलान्त

बनाम

भोलासिंह वगैरह रसांडेन्ट

दरखास्त तजवीज सानी निस्वत फैसला हाईकोर्ट मुवररैवे ५ जनवरी
सन् १८७५ ई० फैसला अपील ग्राम

नंबर ८४ सन् १८७५ ई० व तऐउन ६०३८।७ च पाई

गरिब परवर सलामत

मुकदमा मुन्दरजे उनवान में अर्ज है कि बिला इजाजत हमारे
मुकदमा मजकूर में मुसम्मी मोहनलाल मुख्तार ग्राम हमारे ने जवा
बदिही खिलाफ वाकई मारफत बाबू अणकाशचंद्र वकील हाईकोर्ट
में कराई हमको जवाबदिही करना मंजूर नहीं है इकरारनामा सुल-
हनामा फैसला व रसीद सही कागजात हैं उनकी अस्तियत व नवदियत
में हमको कुछ ऐतराज नहीं है नकूल मजकूर वक्त मौजूद होने
असल मिसल के मुनसफी कासगंज से असल से मुकाबिला करा के
मारफत महमूद बख्श वकील अपने के कुंषर व ग्यानसिंह वगैरह
भूरिस हमारे ने हासिल की थीं लिहाजा यह सवाल गुजरान कर
उम्मेदवार हैं कि शामिल मिसल फरमाया जावे ॥ फकत

अर्जी

फिदवियान भोलासिंह व भिरवारीसिंह बिरादर हकीकी
चचाजाद व मुसम्मात पूरन कुंषर जौजा श्यौ बख्श
व भिरवारीसिंह मजकूर वली गोविन्दसिंह नाबालिग
साकिनान बुधवालिस परगने मारहरा जिला एटा

११ फरवरी सन् १८८२ ई०

नम्बर १०४२ सन् १८८३ ई०

शेख अब्दुल सुभान मुद्दई अपीलांट बनाम जान मुहम्मद मुद्दई
अले व अब्दुलकादिर बाया रस्पॉडेंट

अपीलांट व नाराजी डिगरी साहिब जज बहादुर जिला अजमगढ़
मुर्वरखे १२ जून सन् १८८३ ई०

व बजूह जेल गुजरानता है

१— हर गाह अपीलांट ने व तसलीम असल दस्तावेज बैनामा
मुतनाजा मरकूमा १२ अगस्त सन् १८८२ ई० मिलिकयत अब्दुलका-
दिर बाया दावी शुफा का पेश किया और उस दस्तावेज पर दस्तरखत
अपीलांट के नही हैं तो हक्क शुफा साकित नही होसता बजूहात
डिसमिस दावी गैर काफ़ी हैं ।

२— बाया पिसर मुद्दई का नही है और न परवर्दह लिहाजा
उसकी मिलिकयत खरीदे से अपीलांट को कुछ हक्क नही पैदा हो
सकता है ।

३— साहिब जज ने असल दस्तावेज बैनामा २७ अगस्त सन् १८८५
ई० की ताबीर खिलाफ की है नाबालिगी बाया की या पिसर मुतबन्ना
होना मुद्दई का मुन्दरज नही है ।

४— शहादत मुलीमा बीबी से साबित है कि अब्दुलकादिर
बाया बेरा सुल्बी मुद्दई का नही है और न वह मां असली मुद्दई
की है उसकी ताबीर भी खिलाफ ऊर्दू है ॥

अपील दोम बतयेउन १४३५

नम्बर ७७६

बल्देवसहाय मुद्दई अपीलांट बनाम नदनचौबे व शिवदत्त राय रस्पॉडेंट

ब नाराजी डिगरी साहिब जज बरेली भुवारेवे १ नवम्बर सन् १८८३ ई०

ब वज्रह जैल

१— साहिब जज का फ़ैसला इस वज्रह से खिलाफ़ कानून है कि मौसफ़अले ने असर रहन मुकदम मौसमा अपीलान्ट की निस्बत कुछ लिहाज़ नहीं किया हालां कि उसके निफ़ाज़ की बाबत अपीलान्ट को ज़ाबला कानून के मुताबिक़ डिगरी हासिल हो चुकी है ।

२— हर गाह रहन मौसमा अपीलान्ट मुकदम है तो रस्पांडेन्ट को जो मुर्तद्दिन माबाद है अपीलान्ट के दावी वाजिब की निस्बत ब मुकाबिले उस जायदाद के जो उसके पास सराहतन मकफ़ूला थी ऐतराज़ करने का मनसब नहीं पड़चता ।

३— साहिब जज ने जो जायदाद मकफ़ूला के जुज़ कलील पर दावी को महदूद किया है यह तजवीज़ मौसफ़अले की खिलाफ़ इबारत उस डिगरी के है जो रस्पांडेन्ट के हक़ में उसके रहन मुकदम के बिनाय पर सादिर ऊर्द है ।

४— साहिब जज की यह काररवाई ग़लत है कि मौसफ़अले ने अपनी डिगरी में अपीलान्ट के कुल दावी को बमुकाबिले जायदाद मकफ़ूला के नामंज़ूर और कुल खर्चा उसके जिम्मे आयद किया ॥

बअदालत साहिब जज बहादुर

१८९१ नम्बर मुकदमा अपील

अवल सन् १८८२ ई०

रामदयाल वगैरह अपीलान्ट

ब नाम

पंडित रघुनाथ प्रसाद वगैरह रस्पांडेन्ट

दावी दिलापाने मुबलिग़ ३५३॥॥॥

असल व सूद बकाया मालगुजारी

व अरवराजात देह बाबत सन् ८६

व सन् ८७ व सन् ८८ फ़सली

हस्ब दफ़ा ८३ (जे) ऐक्ट १२

सन् १८८१ ई० - अपील बतख़ेउन

३०१-५ पार्स डिसमिस शुद्ध

बाबत सन् १२८६ फ. बाबत सन् १२८७ फ.

१७८॥-८ पार्स ६१॥-४॥ पार्स

बाबत सन् १२८८ फ. सली

६०४॥ पार्स

रामदयाल मुद्दई अपीलान्ट

व नाराजी डिगरी अदालत माल व किस्मत किरवी जिला बांदा मुर्वरखे
३० अक्टूबर सन् १८८२ ई० अपील व वजह जेल बज्जूर साहिब
जज बहादुर बांदा दाखिल करता है ।

अवल

न सुबूत होना किसी तजकिरा का दरबारह तनरबाह कारिन्दा
व सिपाही वाजिबुल अर्ज में कोई वजह न दिलाने अखराजात तन-
रबाह मजकूर की कानूनन नहीं होसती लिहाजा इजहार हलफी
मुख्तार रस्पांडेन्ट मामूला मिसल से साबित है कि कारिन्दा व
सिपाहियों के रखने से रस्पांडेन्ट भी राजी व गैर मुअतरिज रहा पस
बहरहाल तनरबाह उसकी अपीलान्ट को मुजरा मिलनी चाहिये ।

दोम

रकम हक्क नम्बरदारी के न दिलाने की भी कोई वजह हाकिम
मातहत ने नहीं लिखी हालां कि रकम ऐसी है कि जिसका दिलाना
व मावजा उन तकलीफात व अखराजात गैर मामूली के जो खास
नम्बरदारान् को आयद होतेहैं कानूनन जायज रक्खा गया है और
इस खास मुकद्दमे में कोई खर्च खुराक वगैरह का भी नहीं मांगा
गया रकम मजकूर रुस्सदर काबिल दिलाने के है ॥

सोम

रकम नट की मामूली है सिर्फ इस मौजे में नहीं बल्कि कुल जिले में उम्मान दीजाती है व तलबाना मजदूरियां तहसील मालगुजारी का भी आम तोर व हमेशा आयद होता है व सन् १२८६ फसली में कि ऐन वक्त बन्दोबस्त का था मुबलिग १० जो मजदूरी पत्थर गढ़वा ने में सर्फ ऊँच गलत तजवीज नहीं होसता पस यह जुमला रकूम काबिल मुजरई हैं ।

चहारम

व तारिख रकूम ८ मुतप्रल्लिके सन् १२८७ फसली की रसीद सरकारी शामिल मिसल है व बगर्ज सुबूत रकूम ३० व ३५ मुतप्रल्लिके सन् १२८८ फसली अपीलान्ट ने दरखास्त तलबी कैफियत व नीज मिसल मुकद्दमा के मुहकमे बन्दोबस्त से अदालत मातहत में मुजरानी थी उसमें कुछ लिहाज नहीं ऊँचा पस यह तजवीज कि उन रकूम का कुछ सुबूत नहीं दिया गया गलत है ।

पंजुम

अपीलांट को हुकुल तहसील व हर सूरत मिलना चाहिये और जर वाजिब याफ़नी अपीलांट पर सूद भी अपीलांट को मिलना चाहिये हाकिम मातहत ने कोई कजह न दिलाने सूद के नहीं लिखी ॥

अल्ब

६

रामदयाल मुद्ई अपीलांट

मारुजे १२ दिसम्बर सन् १८८२ ई०

मारफत शंभूप्रसाद वकील

जैकुवार खुद व वली हरग्यान व शंकर नाबालिगान

मुद्दई अपीलांट

व नाम

खूशीराम व मुसम्मात हत्तो जौजा रामदयाल मुद्दआअलेहुम रस्यांडेन्ट

दरखास्त मंजूरी अपील दोम व तऐउन १५४१३)

व नाराजी कैसला साहिब जज बहादुर सहारनपुर

मुवररिखे ३० अप्रैल सन् १८८३ ई० व वजूहात

जेल -

१- जब मुद्दआअले वजरिये सुलहनाभा इकरारी मादर अपीलांट के दरखील है तो बहर हाल मुद्दईयानको इरिक्तियार इरजाय नालिषा हाजा का हासिल है ।

२- मुराफेसानी ने जो तजवीज निस्बत उम्र अपीलांट के वरबिनाय नकूल इजहारत मादर व पिदर अपीलांट के किया वह गलत है क्यों कि जब मुराफेऊला ने अपीलांट को हाजिर कराकर और बाद मुलाहिजा के तजवीज फरमाया कि वह बालिग है तो अपील अदालत को सिर्फ नकूल इजहारत को मुलाहिजा फरमाकर तजवीज नाबालिगियत करना बिला इजहार लेने उन अशवास के बेजा है ॥

दरखास्त मंजूरी अपील दोम

व तऐउन २००)

मुसम्मात बादशाह बेगम मुद्दई अपीलांट व नाम वजीर उल्लाखां

व मुसम्मात मुमताज बीबी रस्यांडेन्ट

व नाराजी कैसला जज मातहत फर्रुखाबाद मुवररिखे ४

जुलाई सन् १८८३ ई०

१— फ़ैसला इस वजह से ख़िलाफ़ क़ानून है कि इस मुक़द्दमे से शरण मुहम्मदी को कुछ इलाका नहीं है ऊक़ाम मातहत को इन्फ़िसाल मुक़द्दमे का बिला लिहज़ मसायल शरई के मुनासिब था

२— बफ़र्ज मुतमज़लिक़ क़ारार पाने शरण मुहम्मदी के भी अदालत मातहत की राय बनिस्वत नौद्वयत हिबह मौसूमा अपीलांत व मजाज़ तन्सीख़ होने रस्पॉडेन्ट के ख़िलाफ़ क़ानून बाक़ै ऊई है और फ़ैसले की पार्त भी अदालत मातहत ने महज़ बेजा तौर से इस मामले से मुतमज़लिक़ की है ।

३— व नज़र हालात मुसल्लिमा अदालत मातहत के रस्पॉडेन्ट हरगिज़ मजाज़ ख़िलाफ़ वर्ज़ी मुअ़ाहिदे का नया और अपीलांत बहर नौ मुस्तहक़ डिगरी अपने दावी के है जज़ मातहतने उसके डिसमिस करने के लिये जो दलायल कायम फ़रमाये हैं वह दुरुस्त नहीं होसके ।

४— जब मअ़ावज़ा से इनकार नहीं होसता तो तामील हिबह की रस्पॉडेन्ट पर लाज़िम है

१०४५ नम्बर सन् १८८३ ई०

जसोदानन्द पांडे मुद्दई अपीलांत बनाम रामसहाय

मुद्दअ़ाअलेह रस्पॉडेन्ट

व नारज़ी डिगरी साहिब जज़ बहादुर

मातहत अज़मगढ़ सुवरिखे २७ मार्च

सन् १८८३ ई०

१— फ़ैसला मज़कूर इस वजह से ख़िलाफ़ क़ानून है कि मुद्दई को कोई मंसब नालिश मंसरवी वै का हासिल नहीं है और जिस बयान

से दावी मुद्दई है उस बुनियाद पर दावी डिगरी नहीं होसक्ता ।

२— जब मुद्दई ने बै मुतनाजा को मुकद्दमा साबिक में तसलीम किया तो अब खिलाफ उसके दावी नहीं करसक्ता ।

३— जब बाया अपीलान्ट जायद अज़्ज़ाज़दह साल बज़रिये बै काबिज़ रहा और उसको मुद्दई ने मंसूर न कराया तो अब वह म-जाज़ ऐतराज़ का निस्बत बै मुतनाजा के नहीं हो सक्ता ॥

दरवास्त मंज़ूरी अपील दोम व तयेउन १०४)

ठाकुर रुस्तम सिंह व भीखमसिंह मुद्दआअलेहम अपीलान्ट

बनाम जीवनराम वगैरह

मुद्दई रस्पाडेन्ट

व नाराज़ी फैसला जज मातहत मैनपुरी मुवरिये १८

मार्च सन् १८८३ ई०

१— फैसला इस वजह से खिलाफ कानून है कि वाजिबुल अर्ज में शर्त सरीही अदम इरक़यार इन्तक़ाल मकानात के निस्बत कुल बाशिन्दगान के मुन्दरज है जज मातहत ने उसके महदूद करने से शर्त मज़कूर की ताबीर ग़लत की है ।

२— जो उज़रात मुअस्सिर तजवीज़ मुकद्दमा अपीलान्ट की जानिव से पेश हुए थे उनका कोई तस्फ़िया अदालत मातहतने न फ़रमाया लिहाज़ा फैसला नाकिस है ।

३— जिन दस्तावेज़ात पर अदालत मातहतकी इस्तदलाल है जब तक मियाद उनकी मंसूरवी गुज़र न जाय हरगिज़ काबिल इस के नहीं है कि उनकी बुनियाद पर तजवीज़ मुकद्दमा खिलाफ अपीलान्ट कीजावे ॥

दरखास्त अपील दोम

ब अदालत हाईकोर्ट मुमालिक मगरबी व शिमाली इलाहाबाद

ब तरेउन १७७

दूधनाथ राय व कलबनाथ राय मुद्दईयान अपीलांत बनाम रोंटा लाल
व बिहीरलाल वगेरह

ब नाराजी डिगरी जज मातहत जिला

गोरखपुर - मुवरिवे २८ जून सन् १८८३ ई०

ब वजह जेल अपील करते हैं-

१- फ़ैसला मजकूर इस वजह से खिलाफ़ कानून है कि अदालत
अपील ने कैफ़ियत व बयान अहल कमीषन और नक़्शे जात
सानिक को ग़लत समझा है जिससे आराजी सुतनाजा का सुत-
अल्लिके देह अपीलांत होना साबित है ।

२- फ़ैसला मजकूर इस वजह से खिलाफ़ कानून है कि जज मात-
हत ने यह तजवीज़ की है कि आराजी सुतनाजा जुज़ आराजी न-
म्बरी २ व ५० है और हमेशा कबजे में अपीलांत के थी ।

३- फ़ैसला मजकूर इस वजह से खिलाफ़ कानून है कि जज
मातहत ने हालात मुक़द्मा के समझने में ग़लती की है अपीलांत ने
माल का कोई जुज़ गांव में नहीं कहा बल्कि वही माल हद्द फ़ासिल
दोनों इलाकों का है ।

दरखास्त मंजूरी अपील दोम

ब तरेउन १८० ब अदालत हाईकोर्ट इलाहाबाद

भजन लाल मुद्दई " " " " " अपीलांत

बनाम

सुरववासी व बनारसी व पहलवानसिंह व अजोध्या प्रसाद व
हारिका प्रसाद व मुसम्मात राधा कुंभर जौजा व बारिसा प्रागदास व
गोरीशंकर नाबालिग व रिफाकत अजोध्या प्रसाद मुद्दाम्प्रलेहम् रसपंडे

अपील बनारसी डिगरी साहिब जज मातहत
बहादुर जिला मेनपुरी - मुवरिखे १० अप्रैल
सन १८८३ ई०

१- शरायत तमस्सुक बिनाय दावी की तअबीर अदालतैन मातहत
ने गलत फरमाई क्योंकि तमस्सुक मजकूर में कोई मियाद ऐसी
मुकरर नहीं है जिसके अन्दर कर्जा वाजिबुल अदा हो सिर्फ
यह शर्त थी कि बाद १ बरसके दिया जायगा ।

२- अदालतैन मातहत को लाजिम था कि शरायत सरीही
मुन्दरजे तमस्सुक को तामील कराते ।

३- शरह सूद जो अदालत अपील मातहतने दिलाया वह
ब लिहाज हालत फरीकैन और उनके मामिलातके निहाय
त कम है ॥

मुरलीधर व रेवेरलीराम अपीलान्ट बनाम हबीब उसेन व मुहम्मद
कासिम व मुसम्मात साहिब जान रसपंडे

अपील बनारसी फ़ैसला जज मातहत जिला सहारनपूर
मुवरिखे १४ जून सन १८८३ ई०

व कजह जैल गुजारिष है-

१- दावी मुद्दयान में इस वजह से तामादी आरिज है कि
उनको २० सितम्बर सन १८७८ ई० से तीन बरस के अन्दर
अदालत में आना चाहिये था ।

२— दोम यह कि जज मातहत ने बेजा तौर पर चंद कागजात पर हवाला लिखा है जिसके जवाज या याफतनी होने रुपये के निस्वत कोई सुबूत मिसल में नहीं है ।

३— सोम यह कि जज मातहत ने इस बारह में गलती की है कि अपीलांट पर दावी मनसूबी अजसर नो बैनामे का जो इस्मी रस्यांडेन्ट तहरीर ऊष्ठा है करना लाजिम है ॥

४— चहारम जब कि रस्यांडेन्ट साजिशी होने दस्तावेज अपीलांट के लिये अदालत में आये मगर साबित नहीं कर सके ।

५— पंजुम जब कि इजहार बै का कबल रहननामा अपीलांट के नहीं ऊष्ठा तो अपीलांट अपने हुक्म मुर्त हनी से महस्सम नहीं हो सकते ॥

ब अदालत साहिब जज बहादुर कानपूर

मुकर्रमा दीवानी नम्बर ३३६ अपील ग्राम सन १८८२ ई०

नरपतियादीन वल्द जीवरखन व सुसम्मात भगवानी कुंभर जौजा लाला व शहजादा विलायती साकिनान मौजा कुंभीपुर परगने श्यौराजपुर जिले कानपुर मुद्दाम्प्रलेद्धम् अपीलांट

भागवानदास वल्द जगन्नाथ व बालकराम वल्द पीलम्बरदास व सुसम्मात मुन्दरि कुंभर जौजा दौलतराम व श्री दीन नाबालिग व वलायत भगवानदास मजकूरह सारदी फिकेट याफतह साकिनान जरनलर्गंज गुफा शहर कानपुर मुद्दईयान रस्यांडेन्ट

दावी बतयेउन २००

दरखलाबी ब इसबात हकियत व मिलिकियत मुश्तरका ऊपर आराजी नम्बर १३४ तादादी ३५ बीघा ३ बिस्वा मये दरख्तान मौजूआखोलान

पराने श्यौराजपुर - अपील व नाराजी कैसला मुनसिफ साहिब हवाली
शहर कानपुर मुसदूरह ३१ जूलार्ई सन १८८२ ई० मुशअर डिग-
री दावी मुद्दईयान व ऊज़ूर साहिब जज बहादुर कानपुर हस्ब
जैल अर्ज करते हैं -

१- जिस हालत में अपीलांट आराजी बाग मुतनाजा परजमाने
दराज से मालिकाना काबिज़ हैं और मुद्दईयान को भी उस से
इनकार नहीं है और दरख्तान हमेशा लगाते और काटते रहे
तो तमादी दावी मुद्दई में सरीह आरिज़ है ।

२- स्तयदाद मिसल और कैफियत अब्दुलहक अमीन से
बरखूबी साबित है कि मुद्दईयान ने दरख्तान नसब कर्दह अपी-
लांट के काटडाले और उखाड़ डाले ।

३- यह अम्र भी बरखूबी साबित है कि ज़िमीन मुतनाजे का
कभी तरबता खाली दरख्तान समरदार से नहीं ऊआ और फूल भी
नसब कर्दह अपीलांटों का है बाग खुदरो नहीं होता तजवीज़ अदा-
लत मातहत कानूनन व इन्साफन लायक मनसूरवी के है ॥

फ़िदवियान नरपतिया दीन व मुसम्मात
भगवानी कुंअर व शहजादा अपीलांट
मुवररवे ३१ अगस्त सन १८८२ ई०

व अदालत हार्डकोर्ट मुमालिक मगरबी व शिमाली

दूलाहाबाद - अपील दोम - बतरेउन ४८७)

नम्बर १०७५ दोम सन १८८३ ई०

बल्देव नायक मुद्दआम्रले अपीलांट बनाम कन्हैया नायक मुद्दई ..

रस्पॉडेन्ट

अपील दोम व नाराजी फैसला साहिबजन् गोखपुर

सुबरखे २८ मई सन् १८८३ ई०

बवजूह जेल

१— अदालत अपील मातहत ने कारवाइ हाथ नालिश सुफ-
लिसी व नीज सुलहनामा मुदखला मुकदमा साबिक की ताबीर
गलत की है ।

२— स्पॉन्डेन्ट मजाज् दायर करने नालिश बाबत ऐसे रुपये के
नहीं हैं जिसका पाना उसने अल्फाज् सरीही से कबूल किया है ।

३— अदालत अपील मातहत ने सुबूत तहरीरी मुदखला मुक-
दमा पर कुछ लिहाज् नहीं किया ॥

दरखास्त मंजूरी अपील दोम बतयेउन १०)

रुद्र प्रतापसिंह व जुदिस्टल सिंह मुदई अपीलांट बनाम नवल नाबालिग
व बलायत दीनदयाल मुदअप्राप्तलेज्म रस्पॉन्डेन्ट

अपीलांट मजकूरे बाला व नाराजी फैसला साहिबजन्

बहादुर इलाहाबाद-सुबरखे २१ जून सन् १८८२ ई०

दरखास्त अपील दोम

व दफात जेल करते हैं.

१— यह कि बाब १८ हिस्सा (ज) जाले दीवानी मुताल्लिक
मुजाहमत इजराय हर किस्मकी डिगरी के है लिहाजा तजवीज
अदालत मातहत कि नालिश हाजा लायक समाप्त नहीं है इस
वजह से कि डिगरी जिसकी इजराय से नालिश हाजा पैदा हुई दरखल
याबी की नहीं कानूनन् गलत व लायक मनस्खी के है ।

२— नालिश साबिक वास्ते खुलवा पाने नाबद्धान अन्दरीन

दीवार रसांडेन्ट के थी लिहाजा नालिश मजकूर फिलवाकै दखलयादी
उसी कदर जिमीन के है कि जिस पर नाबदान मुतनाजा बाकै था ।

३— दफा ३३९ जाब्तो दीवानी मुत्ताल्लिक मुकद्दमा नथी तो
साहिब जज को दावी मुद्दई डिसमिस करमाना चाहिये था न कि
अपील डिगरी फरमाते ।

४— नालिश हाजा में जिम्न ५ दफा ९३ ऐक ९४ सन् १८८२
ई० आरिज है ॥

अपील दोम सन् १८८२ ई०

बतरेउन द००० पंजगुना १८०॥३१० पाई

जीतसिंह व कल्यानसिंह मुद्दईयान अपीलान्त बनाम आसाराम व
जालिमसिंह रसांडेन्ट

बनारसी डिगरी साहिब जज मातहत मैनपुरी

मुवररेवे २ जनवरी सन् १८८२ ई०

व कजूर जैल -

१— अदालत मातहत ने शरायत वाजिबुल अर्ज के तअबीर करने में
गलती की है लिहाजा फ़ैसला खिलाफ़ कानून है ।

२— फ़ैसला इस वजह से बेजा है कि जालिमसिंह मुद्दई नम्बर
२ को कोई हक्क बजात हासिल नहीं है और जब कि अदालत मातहत
ने आसाराम मुद्दई नम्बर १ को नालिश से गैर मुत्ताल्लिक करार दिया
तो दावी व हैसियत मौजूदह डिसमिस होना चाहिये ।

३— नालिश हाजा में नुक्स इप्तिमाल बेजा का वाकअ है
लिहाजा फ़ैसला खिलाफ़ कानून है ॥

पंडित मथुराप्रसाद उर्फ मकदूराम व पंडित बच्चूराम व रामसहाय व
सुखनन्दन व बलभद्र मुद्दयान अपीलांत

व नाम

लाला व मदन व भवानीदीन मुद्दप्पाप्पलेडम रस्पांडेन्ट

अपील व नाराजी डिगरी जज् भातहत जिला कानपुर

मुवरखे ४ मई सन् १८८३ ई०

१- फ़ैसला इस वजह से खिलाफ़ क़ानून है कि नालिश हाज़ा
की दाद रसी को ड़क्क़ाम भातहत ने बख़ूबी नंही समझा यह नालिश
वास्ते बेदख़ली रस्पांडेन्ट के व वजह खिलाफ़ वर्जी के नही है बल्कि
वास्ते बाज़ रखेजाने मुद्दप्पाप्पले तामीर चाह पुरख़्तह से है जिसका
इस्तहकाक़ अपीलांत को हर तरह से हासिल है व नज़ीर ड़क्क़ाम
भातहत ग़ैर मुतअल्लिक़ है ।

२- जब कि रस्पांडेन्ट ने बयान रज़ामन्दी अपीलांत का ज़ाहिर
किया और उसके सुबूत से क़ासिर है तो दावी ड़िसामिस नही
होसता था ।

३- वाजिबुल अर्ज़ एक काग़ज़ मुसदिका ज़िमीदार व काशतकारान
है और उसमें जो इन्दराज दस्तर व रिवाज का है उसकी पाबन्दी
जुमला काशतकारान व सुकनाय देह पर लाजिमी है ॥

३२ नम्बर अपील सन् १८८३ ई०

जगन्नाथ वग़ैरह मुद्दयान अपीलांत व नाम निरंजनसिंह वग़ैरह
मुद्दप्पाप्पलेडम रस्पांडेन्ट

अपीलांत मज़क़ूरेबाला व अदालत साहिब जज् बहादुर

जिला फ़रुखाबाद व नाराजी फ़ैसला ख़ाजि फ़ज़ल अहमद

साहिब असिस्टेन्ट कलेक्टर दर्जे अव्वल मुर्वारवे १४ दिसं-
बर सन् १८८२ ई० - मुशफ़र डिगरी ८८) असल
मये खर्चा व सूद रसदी व डिसमिस करने दावी
६४) मये सूद रसदी अपील व कदर ६४) असल
व सूद रसदी जिसकी तफ़रीक़ डिगरी में नहीं है
व वजूह ज़ेल गुज़रानते हैं।

एक यह कि अदम जवान् दिह्री एक मुद्दाम्मालेदम से सि-
दाक़त कुल दावा साबित है।

दूसरे यह कि सिदाक़त तमस्सुक की निस्बत तहकीक़ात होनी
चाहिये और गवाहान मुद्दाम्माले व शहादत मौजूदह मिसल से
सिदाक़त उसकी बख़ूबी है।

तीसरे यह कि डिगरी खिलाफ़ ऊकन मुरत्तब ऊई ॥

जगन्नाथ व बदरी व पंचम नाबालि-
गान व वलायत मुसम्मात मूला
अपीलांट - मुर्वारवे ५ जनवरी सन् १८८३

खूबचन्द वल्द कुंजासिंह साकिन रिवनी परगना फ़रीदनगर" अपीलांट

व नाम

हरशंकर नरायनसिंह वल्द हरप्रसादसिंह वगैरः " रिस्पॉन्डेन्ट
दावा दूसवात हक्कियत व बहाली दरख़ल निस्बत ८
बीघा १६ बिस्वा आराजी व मनसूखी रहननामा मरकूम १ कुवार
सन् १२८८ फ़सली और अब व निस्बत ४ बीघा ८ बिस्वा जुज़
डिसमिस शुदा बालियती ६००) व मनसूखी रहननामा मजकूर मये
खूबचन्द अपीलांट व नाराजी फ़ैसला सब जज़ गाजीपूर मुर्वारवा

१० अगस्त सन् १८८१ ई० इज़र जनाब साहिब जज बहादुर गाजीपुर व बजह जेल अपील करता हूँ ।

१— जब मुताबिक शास्त्र यह बात तसलीम है कि जायदाद मौस्सी में बाप और बेटे का हक बराबर है और दोनों हक जुदा गाना हैं पस ज़ाहिर है कि नलीजे दस्तावेज़ मज़कूर से ज़वाल हकियत मुफ़ अपीलान्त भी मुतसव्वर है जिसका कोई तज़ल्लुक अपीलान्त से नहीं होसता और न ब मुकाबिले अपीलान्त दस्तावेज़ मज़कूर जायज़ करार पा सकती है खास कर ऐसी स्तरत में कि अपीलान्त करज़ा लेने में शामिल न था इस्तिदलाल मुजबिज़ अव्वल ऊपर अ हवाल शास्त्र के कि बेटे को हर स्तरत में लाज़ि-म है कि कर्ज़ा मूरिस अदा करे महज़ ग़लत है ।

२— दस्तावेज़ मज़कूर का नाजायज़ होना इस वजह से भी साबित है कि मुताबिक दस्तावेज़ तनसीख तलब व शुमूल दीगर हक़ के हक़ नाबालिग़ान मुन्दरज़ दस्तावेज़ मज़कूर कराया गया था जिसके निस्वत कोई मन्सब और इरितियार इन्तक़ाल रस्पां-डेन्ट को नथा जो ब मुकाबिले मुदु व गोपी ना बालिग़ान ब रिफ़ा-क़त मुफ़ अपीलान्त नाजायज़ करार पाचुकी है पस ब मुकाबिल अपीलान्त जायज़ करार देना दस्तावेज़ मज़कूर का ग़ैर सही है ।

३— जब दस्तावेज़ मज़कूर बिला किसी ज़स्तरत जायज़ शास्त्र के लिखी गई है और अपीलान्त शरीक किसी कर्जे का नहीं तो बार कर्ज़ा मज़कूर जायदाद अपीलान्त से क्योंकर मुतअल्लिक होसकता है बयान मुदअ़ाअला कि ब ज़स्तरत शादी नवासी के जिसका बाप ज़िन्दा और मौजूद है लेना कर्जे का हद अह-काम शास्त्र तक नहीं पज़ंचता ॥

४— जब अपीलान्त जिन्दा और बालिग मौजूद है तो बिला रजामन्दी अपीलान्त लेना कर्जे का व कफालत जायदाद अपीलान्त कानूनन नादुरुस्त है ।

५— जब शहादत से यह अमर साबित नहीं किया गया कि किस जस्ूरत खास महकूमे शास्त्र की रू से अहतियाज लेने कर्जे की ऊई तो महज केयासन डिसमिस होना दावे अपीलान्त का खिलाफ इन्साफ और उसूल शास्त्र के है ।

६— जब कि अपीलान्त पिसर कुंजासिंह जिन्दा है और ना बालिग नहीं है तो कुंजासिंह मजकूर को हरगिज बिला रजामन्दी बेटे के मनसब इन्तकाल का बमूजिब उसूल शास्त्र के हासिल नहीं है इल्ला इस शर्त पर कि जस्ूरत इस कदर हो कि बिला इन्तकाल के हिफ्ज मिलिकियत या अदाय रस्म जायज हुन्द के नहीं होसके लेकिन इस मुकद्दमे में भिन्जुमला शायत मजकूर के कोई सूरत मौजूद नहीं है ।

७— खरीदार या मुर्तहन को बमूजिब मनशा शास्त्र फर्ज है कि कबल तहरीर दस्तावेज किवाला और रहननामा के इस अमर की तहकीक करले कि बाये या राहिन को जस्ूरत इस कदर है कि बिला लेने कर्जे के काम अंजाम नहीं होसता लेकिन इस मुकद्दमे में मुद्आअले ने कोई सबूत कि बार सबूत इस अमर का उसपर था निस्बत होने जस्ूरत किस्म मजकूर के नहीं पेश किया तो बहरहाल फैसला अदालत मातहत लायक मनसूखी के है ॥

भास्जे र्द सितम्बर सन् १८८२ ई०

गुरप्रसाद बल्द शंकराय कौम क्षत्री साकिन मोजे बिलासपुर

परगना इरादत नगर मुद्दई

अपीलांत

ब नाम

फकीरचन्द व जैकरन दुबे पिसरान रामचरन दुबे वगैरह

मुद्दआप्पलेऊम

रिस्पांडेन्ट

अपीलांत ब अदालत दीवानी जिला गोरखपुर

ब नाराजी फ़ैसले जज मातहत मुर्वारखे २१ जून

सन १८८२ ई० ब बज्रहात जेल अपील करताहै

१— शहादत कागज़ी व निशानी से हिस्सेदारी व कब्ज़ा व दरबल अपीलांत बख़्शी साबित है मुजबिज़ ने जो बबजह अदम इन्द-राज नाम तजवीज़ मुज़िर व हक्क अपीलांत फ़रमाई है बिलकुल ख़िलाफ़ व नादुरुस्त है ।

२— दावा अपीलांत बर बिनाय शुफ़ा है जिसमें रिवाज व वाजिबुल अर्ज़ दोनों दाखिल हैं बल्कि दादरसी में वाजिबुल अर्ज़ हाल काबिल इस्तिदलाल नहीं है वाजिबुल अर्ज़ साबिक से रिवाज शुफ़ा जाहिर साबित है मुजबिज़ ने जो इसके ख़िलाफ़ फ़ैसला किया है वह सही नहीं है ।

३— वाजिबुल अर्ज़ हाल नासिख़ रिवाज मुन्दरजे वाजिबुल अर्ज़ साबिक नहीं है बन्दोबस्त हाल में सिर्फ़ जमा की अलबत्ता तबदीली हुई है रिवाज किसी तरह से मरसूख़ नहीं किया गया है ।

४— जाहिर है कि ज़माने तरतीब वाजिबुल अर्ज़ हाल में महाल ज़ब्त सरकार या अगर सरकार ने तज़क़िरा रिवाज शुफ़ा का दर्ज़ नहीं फ़रमाया तो कुछ दर्ज़ नहीं क्योंकि कोई शरीक सरकार का न था तो इससे लाज़िम नहीं आता कि रिवाज साबिक कल अदम

होगया खसूसन जबकि खुद बाजिबुल अख्त में यही लिखा है कि सर्कार लम्बरदार है और तहसील भी उसकी जानिब से होती है इसलिये हाल बै व रहन वगैरह का लिखा न गया बहर हाल फ़ैसला सही और दुरुस्त नहीं है ।

५- इसमें जो मुजब्विज ने सही मानली हैं उनपर भी दूत-राज है और न सबूत काबिल दूतमीनान है बल्कि जिस कदर बयान अपीलांट का है वही साबित है तमाम वजूह मुन्दरजा फ़ैसला नाकिस और ना दुरुस्त हैं ॥

फ़िदवी गुरप्रसादराय मुद्दई अपीलांट
मारुजे २८ जूलाई सन् १८८१ ई०

अरायज़ मुत्फ़रिकात

जनाब अग़ाली

अर्ज फ़िदवी की यह है कि फ़िदवी बसबब बीमारी ज्यादा होने के तारीख २४ दिसम्बर सन् १८८३ को काम छोड़कर हलद्वानी चला आया जब देखा कि रामनगर के डाक्टर से कुछ इलाज न हो सका इस बाद इस यहाँ इस हलद्वानी में आया अपने अपने की एक इत्तला जनाब ठामसन साहिब बहादुर को दे आया बाद को तारीख २८ दिसम्बर सन् ८३ को फ़िदवी ने एक इत्तला हुज़ूर को भी करदी फ़िदवी की बीमारी का हाल हलद्वानी के डाक्टर से दरयाफ़्त हो जाय फ़िदवी लाचार होकर हलद्वानी आया था अब जब हुज़ूर ने

फ़िदवी को बचपन से पाला और फ़िदवी के बाप को भी अब फ़िदवी
 कहा जावे जब तक ऊज़ूर हैं तबही तक गुलाम का बन्दोबस्त हो
 सकता है बाद ऊज़ूर के गुलाम को कौन पूछेगा अब गुलाम को
 प्राराम है और फ़िदवी उम्मेद वार है कि फ़िदवी की जगह फ़िदवी
 को इनायत हो ऊज़ूर बख़ूबी जानते हैं सिवा ऊज़ूर के फ़िदवी का
 कोई नहीं है जो कुछ है ऊज़ूर ही है बाद ऊज़ूर के जब तक फ़िदवी
 जीता है तब फिर गुलाम को कौन खाने को देगा गुलाम क्या करेगा
 अभी तक तो गुलाम समझता है कि गुलाम का बाप मौजूद है बाद
 की इस दुनियां में गुलाम का कोई नहीं है अब ऊज़ूर जैसा समझें
 वैसा करें अपना मा बाप जानकर अर्ज किया मुनासिब हुक्म इना-
 यत हो ॥

अर्जी फ़िदवी कलू आबपाशी जमादार

हाल मंडी हलहानी

माह मार्च ३ सन् ८४

ग़रीब परवर सलामत

खुदावन्दा अर्ज फ़िदवी की इस तरह पर है कि फ़िदवी
 ने ऊज़ूर के पास परवरिश पाने की निस्वत अर्ज किया इसमें ऊज़ूर
 ने कहा कि तुमसे क्या नोकरी होगी नोकरी के लायक तेरा क्या पड़ा
 हुआ है अब अर्ज करता हूँ कि ऊज़ूर की बदीलत १ दफ़े अपने चचा
 एग़बरदत्त कानूनगो की एवजी का काम पौड़ी मुहाफ़िज़ दफ़्तर में
 किया बाद फिर चचा गंगाधर के साथ तहसील रामनगर में मदद-
 गारी का काम किया जिस तरह मैं काम करने में होशियार हूँ मेजि-
 स्ट्रेट तामसन साहिब बहादुर व तहसील रामनगर से दर्याफ़्त किया

जावे और जो काम ज़रूर देंगे वह काम फ़िदवी चला सकता है
और ८० सन् में ज़रूर ने रेली शुमार के काम पर काठवास रामनगर
में भरती करके भेजा तब से जिस तरह मैं काम करता हूं जंगलात
वाले डिप्टी कनसर्वेटर विलमट साहिब से व साबिक सुपरिन्टेन्डेन्ट
वलतारवरसिंह जो अब रामनगर तहसील में पेशकार हुआ है इन
से दर्याफ़्त होजावे मालिक समझकर अर्ज कर पाई परवरि-
श करना या न करना ज़रूर के इस्तिथार है ॥

अर्जी अम्बिका दत्त खड्डूर

रेली शुमार मुहरीर रामनगर

तारीख २६ मार्च सन् १८८४ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाबे आली अर्ज गुलाम का इस तौर है अवस्था
करीब ७।८ बरस के बाप मेरा मरगया बाप का जोड़ा हुआ ५-
४ सौ रुपया की जायदाद जो थी आज तक पढ़ने में और छोटे भाई
के लत्ते कपड़े के खर्च में आगई और रानी खेत में इम्तहान गुलाम
ने दिया वह सारटी फ़िकेट मेरे पास मौजूद है सन् हाल पादरी
फ़ीलीप साहिब के स्कूल में कादड़ माड़ अठागुली के काम किया
जनाब फ़ीलीप साहिब विलायत जाने के सबब अपने सब मद-
र्से बन्द करगये आयन्दे के वास्ते चिट्ठी गुलाम को देगये अब
गुलाम की अवस्था करीब २०।२२ बरस के होगई अब गुलाम का
वसीला सरकार से दूसरा कोई नहीं है सिवाय नौकरी के दूसरा
काम हो नहीं सकता इस वास्ते अर्ज बीच कदम खाविन्दों के
आधसेर आटे के वास्ते गुज़रानता हूं जहां भौका हो गुलाम

का निबाह गुजरान होवे तहां रखदेवें गुलाम गरीब सर-
कारों को दुष्प्रा दिया करेगा दूसरे खुदा है सरकार जो हाल
मेरा गरीबी चाजिबथा कदम खाविन्दों में प्रर्ज किया आइ-
न्दे मालिक सरकार है ।

प्रर्जी गुलाम भवानीदत्त जोसी बेरा तिलो-
चन साकि नदड़ माड़ प्रतागुली पला
जिले कुमाऊं तारीख २८ जनवरी
सन् १८८४ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाब प्राली अमरकोश के तीनों कांडों का भाषा प्रका-
रादिके काम से अत्यन्त परिश्रम और सावधानी से प्रगरेजी डि-
क्शनरी की भांत बनाया है और विद्यार्थी जनों और पाठक लोगों
को बहुत ही लाभदायक है इसलिये एक पुस्तक डूज़र की खि-
दमत में भेजकर उम्मेदवार हूं कि डूज़र भी इसकी खरीद कर-
मावें और सब जनों को लाभ पहुंचावें ॥

प्रर्जी चक्रपाणि सिकंद मास्टर

नार्मल स्कूल इलाहाबाद

तारीख १८ जनवरी सन् १८८२ ई०

गरीब परवर सलामत

खुदावन्दा डूज़र मुल्क मालिक निराधारों के आधार
दुर्बलों के मा बाप जिस तरह हमारे पिछलों का पालन किया यकी-
न है उसी तरह हम नाबालिगों के उत्पार परवरिश है व आयन्दा

रहेगी प्रज गुलाम की ऊँर आला के कदमतले है कि सन् १८८२
 के मुकाम कमोला चौकी में गुलाम का खोड़ रजिस्टर मुलाहिजा
 किया था बाद को कमतरीन ने अपना प्रज मास्टर किया था
 ऊँर ने खूब रहम दिल से सुना बाद ऊँर ने फिदवी को मुंह
 जबानी ऊँर दिया था कि तू पैमादूश जानता है गुलाम काम
 पैमादूश व मिलान से वाकिफ था मगर कम तकदीर गुलाम की
 जो उस वक्त जबान से इनकार किया काम जिस तरह दियानत
 दारी से किया खुदा जानता है बाद को ऊँर मुल्कपती मुंहजबा-
 नी ऊँर इनायत करगये थे कि जिस वक्त कोई जगह नयी बखा-
 ली होती है हमको खबर दो सो गरीब नवाजा एक जगह खुर-
 पाताल में रेंजरी व एक जगह रामनगर खोड़ में होती है ब-
 मजिब ऊँर मुंहजबानी ऊँर के इत्तलाअन प्रज किया पर-
 वरिश करना इस्तिथार मालिकों के है वसीला ऊँर से और
 कोई नहीं है जो हाल था लिखा मालिक सरकार

प्रज फिदवी राधापती खोड़ कमोला
 तारीख २८ मार्च सन् १८८४ ई०

श्रीयुत प्रभुवरो जयति तराम्

सुना है कि इलाहाबाद में नार्मलस्कूल शीघ्र
 स्थापित होने वाला है प्रार्थक बहुत दिनों से गवर्नमेन्ट ट्रांस-
 लेटर आफिस में उर्दू से हिन्दी तर्जुमे का काम करता है
 और ३० मासिक पाता है यद्यपि उक्त आफिस में किसी
 प्रकार का लक्ष नहीं है परन्तु विद्या विभाग में प्रवेश करने
 का अभिलाषा ऊँर जो चिर काल से हृद्गत है वह अभी तक

जीर्ण नहीं हुआ बरन्व राजकीय पुरस्कार रूपी नीर से आर्द्र होकर और भी दृढ़ होगया है- प्रार्थक संस्कृत-हिन्दी-उर्दू तीनों भाषाओं की शिक्षा का अभ्यास और रुचि रखता है- साहित्य-व्याकरण-इतिहासादि के पढ़ाने का कार्य चाहता है प्रभुवर को विदित होगा कि मेरे रचित कई ग्रंथ सर्कार से अंगीकृत हो चुके हैं ॥

प्रार्थक- रामप्रसाद तिवारी

इलाहाबाद- गवर्नमेन्ट ट्रेन्सलेटर

आफिस

१८ अप्रैल सन् १८८१ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाब आली गुजारिषा हाल फिदवी का यह है कि फिदवी ने इम्तहान म्योर कालेज का मदरसह तहसीली मेरठ से ब तारीख २२ नवम्बर सन् १८८० ई० को दिया था लेकिन अखबार सर्कारी को देखकर फिदवी को मालूम हुआ कि फिदवी फेल होगया रंज हुआ खैर जनाब वही बात है कि किसी कवि का बचन है तदबीर के पर जलते हैं तदबीर के आगे- फिदवी लाचार है- मजास्म के लिखे को कोई भेट सकता नहीं- लेकिन फिदवी को यह बड़ा अफसोस है कि फिदवी की २ अर्जी तारीख द फरवरी सन् १८८१ ई० को मये टिकट के खानः दफ्तर हुजूर के दरयाफ्त करने तादाद नम्बरों के भेजी थी लेकिन जबाब

उनके से फ़िदवी निरास रहा लेकिन फ़िदवी को यह यकीन
 इस दफ़्तर से न था कि जवाब न आये अब फ़िदवी ला-
 चार व मजबूर होकर प्रार्थना करता है कि नम्बर फ़िदवी के
 हर मजमून के हाकिमी फ़रमा के भेज दें ता कि फ़िदवी
 की फ़िकिर मिटे और आयन्दा को ज्यादातर मिहनत उस
 मजमून में जिसमें फ़िदवी फ़ेल हुआ है की जावे इलाही
 आफ़ताब दोलत का हमेशा चमकता रहे फ़क़त
 तारीख़ र्द फ़रवरी सन् १२२१ ई० ॥

फ़िदवी अफ़ारफ़ां तालिब इल्म
 शहर मेरठ मोहल्ले खंदक

गरीब परवर अदल गुस्तर

सलामत

गुज़ारिश्वा हाल बज़ूर फ़ैज़ गंज़ूर यह है कि
 ताबेदार घरसे १० साल से कार सकार व कार तालीम व
 ख़ैर ख़ाही तमाम अंजाम देता चला आता है और हर तरह
 से नेक नाम ख़ैर ख़ाह रहा कि जिसकी कई किता परवान-
 जात व सनद सरटिफ़िकेट इल्म नागरी पास होकर पास फ़ि-
 दवी मौजूद हैं। मगर व सबब कमी तन ख़ाह बसर औकात
 ताबेदार नहीं होती इसवास्ते बज़रिये दर ख़ास्त इसके
 गुज़रान कर उम्मेदवार नज़र ख़ाविन्दी का है कि बीच हक़
 कमतरान के सकार दोलत मदार से गुंजाइश रोज़गार व कार ख़ाने

महकमे रेल सरकार से फ़रमाई जावे कि फ़िदवी अपने
हक़ व फ़ैज़ को पड़च कर उस सर्व शक्तिमान जगदीश्वर
से दुष्ठा करे जियादे हुक़म हुज़ूर कुशादा रहें फ़क़त

तारीख ११ महीना मार्च

सन् १८८१ ई०

अर्जी फ़िदवी विष्णुदयालसिंह

मुदीरस मरसह हलकाबन्दी

साकिन पकड़ी सूरजबंश

परगना अमूटा तहसील हरद्वारा

जिल्ला बस्ती -

गरीब परवर सलामत

जनाब आली अर्ज कम तरीन का यह है कि गुलाम
वे वसीला छोका है बाप फ़ोत होगया मा अंधी है भाई
मुहताज है महनत मजदूरी से निर्वाह करते हैं गुलाम
स्कूल में पढ़ता है गुलाम रोटी वगैरह से हैरान है
जनाब आली पारसाल फ़रवरी में टामसगौन सुप्रन्दन्त
साहिब ने जब दूस्तहान लिया था ॥ वज़ीफ़ा कर दिया था
मार्च तक का तो १) मिला फिर तब से नहीं मिला इस
वास्ते अर्जी हुज़ूर में गुज़रान कर उम्मेदवार हूं कि अलमोड़ा
वगैरह हर एक जगह में तो लड़कों की भी परवरिश
हो रही है कुछ गुलाम का भी बन्दोबस्त होजावे और
वज़ीफ़ा भी दूनायत किया जावे कि वज़ीफ़े के भरोसे पर

३) की किताब चोरगल्या के पंडित से खरीदी है तकाजा जारी है सब मुहताजों पर ऊज़ूर दिया करते हैं कुछ गुलाम का भी बन्दोबस्त होजाता तो गुलाम भी ऊज़ूर को दुष्प्रा दिया करे मालिक जान कर अर्ज किया ॥

अर्जी विलाराम सनपल
विद्यार्थी हाल चोरगल्या
तारीख २३ फरवरी

सन १८८४ ई०

गरीब परवर सलामत

खुदा वन्दा अर्ज गुलाम का यह है कि परम्परा बाप दादे से ऊज़ूरों ने गुलाम को आधसेर आरा देके गुलामों की परवरिश की जनाब आली पहिले पूर्णनन्द मेरे चचा ने ऊज़ूरों के पास अमीनी में काम दिया और प्रेमवलभ मेरे भाई तामसन साहिब बहादुर के यहां मुनशी रहे और अब नाथू पांडे पटवारी मेरे भाई की ऊज़ूर ने आधसेर आरा हलहानी में दे रक्खा है खुदा वन्दा उम्मेदवार हूं कि आधसेर आटे की परवरिश में भी कहीं पर कर पाऊं - इस वक्त ऊज़ूर ने सैकड़ों आदमियों की परवरिश कर रक्की है उम्मेदवार हूं कि परवरिश किसी जगह भी कर पाऊं गुजर गुलाम की होजायगी दुष्प्रा ऊज़ूर को दिया करूंगा ज्यादा ऊज़ूर मा बाप

हैं ॥

अर्जी दुर्गादत्त पांडे उम्मेदवार
 भोजे वैरती हाल पहाड़ -
 कोरा गिन्ती गांव
 तारीख ३ दि सम्बर
 सन् १८८३ ई०

गरीब परवर सलामत

खुदावन्दा हकताला इज़्ज़र पुरनूर को सदा
 सलामत रखे जिनके कदमों के बंदोलत गुलाम सरीके
 गरीब बे वसीले मुराद अपनी २ पर पढ़ांच कर दुआ इज़्ज़र
 को देते हैं गुलाम सन् ६७ से अब तक याने अर्से १८
 बरस से बरोबर बारहों महीने भावर रामनगर व हलद्वानी
 के रहकर चराई पैमाइश में काम करके साथ किफायत
 के गुज़र करता चला जाता हूं और जिस तौर से काम
 किया इज़्ज़र व तहसीलदार पेशकार साहिब भावर के जानते
 हैं मगर अपनी कम तकदीर से अब तक मुकर्रर जगह
 न पाई भरोसा था खुद याद मेरी होगी लेकिन किसमत
 से न ऊई न कोई कम मकसूमी का वसीला इज़्ज़र को
 याद देने वाला है और मैंने भी खुद आज तक इज़्ज़र को
 तकलीफ नहीं दी अब दिन ब दिन रोज़गार करना भारी
 होता जाता है क्योंकि इन्द्रन्स पास व मिडिलकिलास
 पास वाले कम से कम दरजे में भरती होंगे खबर सुनता हूं

आज तक ऊज़ूरने हम गढ़ कुमाऊं के पहाड़ी आदमी के इ-
 म्तहान वालों से कुल काम अनजाम लिया है और हर
 एक आदमीने जिस तरह से उसके महनत से सर्कारी काम
 दिया ऊज़ूर को रोशन है ऊज़ूर के कदमों में कमतरीन
 की अर्ज यह है कि गुलाम कम मकसूम के मकसूम व
 बेवसीला के वसीला होकर कहीं पटवारगीरी या खुर्पा-
 ताल के रेंजरी या कोई जमादारी वगैरे में परवरिश गुलाम
 की हाल में या बर वक्त जगह होने के पहिले याद गुलाम
 की करना ऊज़ूर खाविन्द को इरिस्तयार है ऊज़ूर के
 सिवाय परवरिश करनेवाला और किसी को न समझकर
 अपनी कम तकदीर के हाल का याददास्त अर्ज किया
 आगे सब सूरत से पालन परवरिश करनेवाले मालिक
 ऊज़ूर हैं ॥ तारीख २८ मार्च सन् ८४

अर्जी याददास्त
 गुजारिश परवरिश
 निस्वत गुलाम प्रेमा-
 नन्द डेवराणी

गढ़वाली हाल अमीन बैदा
 बस्ती दफ्तर रामनगर

गरीब परवर सलामत

अर्ज यह कि ताबेदारान सन् १८८० ईस्वी के
 मिडिल लास वर्नाक्यूलर इम्तहान में मदर्स तहसील बड़-
 हल गंज से शरीक इम्तहान किये गये - इम्तहान जांच में

हम लोग प्रज्वल दरजे में पास ऊपर इम्तहान तहरीरी में
सवालात के जवाब ऐसे सेहत व कायदे से लिखे हैं जिस
से आला दरजे में पास होना हक है इसलिये यह प्रजी
ऊपर में गुजरान कर उम्मेदवार हैं कि हम लोगों का कागज़
फिर से जांच फरमाया जाय जिससे हम गरीब लड़कों की
हक तलफ़ी नही और अपने हक को पड़चकर दुष्प्रा तर-
की दोलत और इकबाल में मसरूफ़ हों ॥

नम्बर रजिस्टर इम्तहान व नाम तुलबा

- १ रामजीत
- २ दसरथ
- ३ रामरक्षा
- ४ कालीचरण
- ५ रामबहाल
- ६ गंगा

प्रजी फ़िदविधान रामजीत और दसरथ
और रामरक्षा इत्यादि तुलबाय
मदर्सेह तहसील बडहलगंज

ज़िला गोरखपुर

१३ अप्रैल सन् १८८१ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाब आली जो प्रजी फ़िदवी ने तारीख २१ फ़रवरी
सन् हाल को खाना खिदमत ऊपर के की उसका सबूत ऊपर
के दफ़तर ही से बरख़्बी हो सकता है कि मुलीधर मुदर्सि

मौजे अटा परगना कोंच का पर्चा हिसाब का तारीख १७ फर-
वरी के मुलाहिजे से झुजूर को साबित होजायगा कि
पर्चा के उत्तर सिरे पर मुलीधर का नाम लिखा है और
अक्षर भी उसी के हैं और बाकी सब पर्चा कालीचरण मुद-
रिस मौजे वंगरा परगने माधोगढ़ ने लिखा है और जनाब आ-
ली यह दोनों मुदरिस जिल्ला कानपुर के रहनेवाले डिप्टी
इन्स्पेक्टर के आवुरदों में से हैं लिहाजा उम्मेदवार हूं
कि मुलीधर के पर्चे का मुलाहिजा भी फरमाया जावे ज्यादा
हद अदब । ता. २२ फरवरी सन् १८७६

अर्जी फिदवी गिरधारी लाल

मुदरिस

जिल्ला जालौन

गरीब परवर सलामत

जनाब आली साहिब फिदवी का गुजारिश हाल
यह है कि फिदवी की उमर ६५ बरस के करीब है और
चला फिर भी नहीं जाता और इकम फरवरी सन् १८६६
ई० से नौकर हूं और इकम फरवरी सन् १८७७ ई० से
झुजूर के जूकन से मेरा मदर्स कमी में आगया है और
सिवाय पढ़ाने के मुझ से कोई काम नहीं होसकता है
और झुजूर इंगलिस्तान से हिन्दुस्तान तक मालिक है
और मुझसे मुफलिस कल्लोंच की परवरिश फरमाना झुजूर

की कुछ बात नहीं और सिवाय झूठ के मेरी परवरिश करनेवाला कोई नहीं और झूठ के झूठ से मदर्स जिला एटा में कायम हैं उन्हीं मदर्स में मेरा भी मदर्स शामिल किया जावे लिहाजा उम्मेदवार हूँ कि प्राध सेर प्राटे की परवरिश फरमाई जावे फकत

तारीख तहरीर १४ फरवरी सन् १८७७

अर्जी फिदवी छेदीलाल

मुदरिस दुरवतरान

मौजे सेना जिला एटा

जनाब आली

खुदावन्दा मेरे गुरु ने और मैंने आज तक जो गुजरान व इज्जत पाया सिर्फ झूठ की परवरिश से पाया नहीं तो आज तक हम गरीब फकीर लोगों का क्या ठिकाना था खबर सुनता हूँ कि झूठ अपनी मर्जी से काम छोड़े देते हैं झूठ का सब तरह से परमेश्वर भला करनेवाला है क्योंकि झूठ ने दुत्तनी मुद्दत से मुझ सरीके लाखों प्रादमियों का भला किया है लेकिन हम लोग अपने वास्ते रोते हैं हमको ऐसा मालिक दूसरा नहीं मिलेगा खैर मेरे ज्यादा दिन कट गये अब थोड़े दिन बाकी हैं यह भी जैसा किस्मत में लिखा होगा कट जायेंगे लेकिन हम लोगों ने इस सारे पहाड़ में झूठ के माफिक मालिक नहीं पाया है यह रज जब तक जियूंगा जाने वाला नहीं रात दिन

परमेश्वर के दर्बार में यही पुकार करता हूं कि परमेश्वर ऊज़ूर को और ऊज़ूर के बालबच्चों को सलामत रखे और अच्छी हालत पर रखे मेरी इच्छा ऊज़ूर के चरणों में हाज़िर होके खूब सलाम करने की थी लेकिन बुढ़ापे के सबब नहीं चल सकता हूं ॥ फ़क़त

ता. १८ मार्च सन् ८४

अर्जी दत्तलाय महन्त रामबुद्ध
मुनी मन्दर काला पट्टी नादूल
ज़िला गढ़वाल

ग़रीब पर वर सलामत

जनाब अली अर्ज हाल फ़िदविया का यह है कि २० तारीख नवम्बर सन् १८७६ ई. को मदर्स नार्मल स्कूल तरफ़ीफ़ में आगया और फ़िदविया बेरोज़गार बैठी हुई है ऊज़ूर कोई अक्ल दर्जे की मुदरिसी या इन्स्पेक्टरी इनायत फ़रमाइये जिससे फ़िदविया गुज़र करे सबरे रुहेल-खंड की तरफ़ीफ़ फ़िदविया के हिस्से में आई है मदरसा इस्लाम पूरी तनखाह पे अलीगढ़ तबदील किया गया तरफ़ीफ़ माने उसके हैं कि सब मुग़ल्लिमाओं की तनखाह कम होजाती और सरकार को फ़ायदा वही पड़चता जो अब ऊम्मा है ऊज़ूर ही परवरिषा करनेवाले हैं सिवाय ऊज़ूर के और दुनियां में कोई नहीं है ऊज़ूर की कलम से ग़रीब अमीर होते हैं ॥ फ़क़त

तारीख १२ जनवरी सन् १८७७

अर्जी फिदविया बेदा साबिक
मुअल्लिमा नार्मलस्कूल रुहेल
खंड जिला बरेली

गरीब परवर सलामत

खुदावन्दा हाल ताबेदार का यह है कि मौजे
रेस्तपुर परगने भुईली जिला मिरजापुर में है वहां पर सर-
कारी मदर्सा पांच छः बरस से था ताबेदार उसमें पढ़ता था
अब अरसा एक माह का होता है कि मदर्सा मजकूर मौजे
मदरा में उठ गया अब ताबेदार चाहता है कि कुछ इल्म
हासिल करूं खाकसार को कुछ ओकात खाने की नहीं है
कि दूसरी जगह किसी जरिये से जाकर पढ़ूं वसलिये यह
अर्जी ऊजूर में गुजरान कर उम्मेदवार हूं कि तीन चार
रुपये माहवारी सकारि से एक बरस भर मिलता तो कुछ
इल्म ताबेदार हासिल करलेता और इस मदर्से में ताबेदार
तीसरी चौथी सफ़ की लियाकत रखता है इसवास्ते सरकार
के पास अरज परवरिश की की है कि कुछ नज़र महर-
बानी की होजाती तो हमेशा सरकार का दुआगो रहता
और खाकसार का हमेशा का दुख छूट जाता और
जिले बनारस में रामनगर है उस मदर्से में जाकर
ताबेदार तालीम पाता कि अपने मकसद को पढ़ंच जाता
खुदा से शबो रोज़ दुआ मांगता रहता है ॥

ब कलम ताबेदार बुद्धलाल तालिब इल्म
मोजे रेस्तूर परगने मुर्दली
जिला मिरजापूर तहसीली चुनार
ता. ७ अ. सन् १८७७ ई ई०

गरीब परवर सलामत

बन्दगान्धाली परवाना नम्बरी १७ मरकूमे १३ अप्रै
ल सन हाल ऊजूर पुरनूर से सादिर ऊआ बमूजिब ऊकन पर्वाने
हाजा के कमतरीन अल्मोडे के वास्ते रवाना ऊआ तारीख २५
को बमुकाम गणार्ड में जनाब इन्स्पेक्टर साहिब मिले साहिब
मोस्फ ने फरमाया कि सब कारो बार दफ्तर का हम करते
जाते हैं सिवाय इसके कमतरीन अंगरेजी नहीं जानता इस
बादस बमूजिब ऊकन साहिब ममदूह के वापिस अपने
इलाके को गया वास्ते इत्तला के अर्ज की आइन्दा मा-
लिक ऊजूर हैं ॥ ता. २६ अप्रैल सन् १८७६ ई ई०

अर्जी फिदवी

शोभाराम

सब्डिष्टी इन्स्पेक्टर

गढ़वाल

स्वस्तिश्रीमत्प्रभुवर डैरेकर क्यम्स्यन साहिब

जयतु तराम्

हे स्वामिन् मेरी व्यवस्था यह है कि बारह बरस से ताबेदारी करता करता आठ बरस से काम भी दे रहा हूँ और मेरे कुल की मेरी व्यवस्था को बरेली और पहाड़ कुमऊ में सब कोई जानते हैं काम देखने से ऊँजूर भी जानते होंगे सो आज मुझ को चाहिये कि मैं अपने बालबच्चों की पालना अच्छी तरह करता सो इस समय ईश्वरेच्छा से रिडक-शन हुआ यह दुख तो नहीं कहने के लायक है परन्तु भूखे पेट का बड़ा दुख हुआ है सो इस मेरे दुख के दूर करने की सामर्थ्य पालक ऊँजूर को है मुझ को एक एक घड़ी युग युग के समान बीत रही है अब मेरी इस प्रार्थना को पालक ऊँजूर से दूसरा कौन सुनेगा. अब इतनी इच्छा करता हूँ कि मेरी प्रार्थना में श्रीमत् कृपा दृष्टि करके मेरी पालना की जावे जिस से मेरे हाथ पैर और आँखों में सामर्थ्य बनी रहे. और आशीर्वाद करता हूँ कि ऊँजूर चिरंजीवी होंवे अखण्ड प्रताप होवे ॥

अर्जी पंडित दुर्गादत्त बरेली

प्रेमण्ड लोवर स्कूल

ता. १८ जून

गरीब परवर सलामत

जनाब आली अर्ज यह है कि ताबेदार जिला
हमीरपुर में मदर्सा मौजा अतरार और उरवारह और
गेवड़ी तहसीली महोवा और मदर्सा इटैलिया तहसील
राठ में पंडित घनश्यामराय डिप्टी इन्स्पेक्टर और मौलवी
नूरुलहसन डिप्टी इन्स्पेक्टर और सब डिप्टी इन्स्पेक्टर पंडित
लक्ष्मनराव और मुन्शी डोरीलाल इनकी मातहत में सात
आठ वर्ष व्यतीत किये बाद इसके इस्तेफा देकर मुमालिक
मुतवास्सिता मदर्सा देहाती कोड़िया और बुरहीवंद तहसील
सिहोरा और टौन स्कूल बिलहरी तहसील मुरवारा और
मदर्सा तेवर तहसील जबलपूर जिला जबलपूर में मौलवी
सफ़दर अली जिला इन्स्पेक्टर और मुन्शी डोरीलाल और
जनाब तहसीलदार साहिब बनमारीलाल मुरवारा मुन्शी
शिवदयालसिंह तहसीलदार साहिब सिहोरा इन लोगो की
मातहत में ६ बरस व्यतीत किये हाल में जिला दुशंगाबाद
के जिला इन्स्पेक्टर बाबू नरबदा प्रसाद का मातहत हूं लेकिन
इस मुल्क की आबहुवा फ़िदवी को बिलकुल नामुवाफ़िक है
इस वास्ते उम्मेदवार हूं कि मेरी परवरिश पश्चिमोत्तरदेश
के विद्या खाते में कीजावे तो ऐन महर्वानी ऊज़ूरवाला
की हो ॥

अर्जी पंडित बंशीधर

जिला दुशंगाबाद

मारुजे ७ जून सन् १८७७ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाब आली हाल अर्ज ताबेदार का बन्दगान आली
में यह है कि ताबेदार मौजा पकरी चौहान जिला बस्ती थाना
कपतानगंज परगना नगर का है तहरीरी दस्तहान यूनीवर-
सिटी का जब शुरू हुआ था तभी पास हुए (सन १८७२
ई० में देर्जा सेयुम में) उसकी सनद ऊजूर से मरहमत नहीं
ऊई और ताबेदार को कोई नौकरी नहीं मिली बेकाम बैठा
है इसलिये यह अर्जी ऊजूर वाला में गुजरान कर उम्मेदवार
हूँ कि सारटी फिकट ऊजूर से मरहमत हो और ताबेदार की
परवरिषा कीजाय नहीं तो ताबेदार मर जायगा जनाब मन
डिष्टी इन्स्पेक्टर नहीं जगह देता अगर सनद होती तो दूसरे
जिले में जाकर नौकरी करता ॥ वाजिब था अर्ज किया ॥

दः हनुमानसिंह विद्यार्थी

मौजा पकरी चौहान

जिला बस्ती

डाकरवाना कपतानगंज

तारीख ६ अगस्त सन् १८७७

गरीब परवर सलामत

खुदा वन्दा हाल यह है कि पहिले जब विद्यार्थी
कालिज में पढ़ते थे और जगह पंडित की नहीं और लड़के
संस्कृत का शौक रखते थे तब प्रिन्सिपैल साहिब बहादुर
ने मुझ से कहा कि तुम इन लड़कों को पढ़ाओ तब मैंने
बहुत महनत करके उनको संस्कृत पास कराया, बाद १५

दिन एवजी सेकिन पंडित की की फिर साहिब बहादुर की
 आज्ञानुसार मैंने अर्जी साहिब इन्स्पेक्टर बहादुर को भेजी
 तब यह डाकट मुझे उन्होंने भेजा फिर कुछ ज़कन न सादिर
 हुआ तब तक बाबू गंगा प्रसाद रईसने मुझे अपने यहां २०
 माहवारी को रखलिया वह राजासाहिब की इजाज़त से मैंने
 कबूल करलिया अब उम्मेदवार हूँ कि ज़ज़ूर मेरी अर्जी मये डाकट
 के मुलाहिज़ा करके मेरी परवरिश करें ॥

यावत् चंद्राकी दिवि तिष्ठतस्तावद्विजयतां देवः। अर्थिनस्सृजते
 धातुः कृतार्थान् कुर्वतस्तव विद्वत्पालनजानीमः कस्य विश्रमते
 करः ॥

अर्जी बासदेव शास्त्री
 मुलाज़िम राजा माधवराव साहिब
 ता. २७ जून सन् १८७७

गरीबपरवर सलामत - जनाब अली गुज़ारिषा हम फिदवियान
 की यह है कि अकाल बड़त पड़ा है और अभी तक पानी यहां
 पर नहीं बरसा है अब हम लोगों की गुज़र इस
 तनखा में नहीं होती और भूख के बारे हम लोग मरे
 जाते हैं और यहां पर गेहूँ का भाव दस सेर तोल सर-
 कारी से है लिहाज़ा उम्मेदवार हैं कि महीना मई सन्
 १८७८ ईस्वी तक हम लोगों के दस दस रुपये तनखा के
 करदिये जाय तो गुज़र कुछ होती जाय नहीं तो हम लोग
 मर जावेंगे और सरकार में कुछ रुपये की कमती नहीं है
 और लोग ज़ज़ूर को दुष्ठा देते हैं कि खुदा करे ज़ज़ूर लाट
 साहिब हों - बाजिब था वह अर्ज किया ॥ जैसा जिस मुदरिसका

खर्चा होवे तह की कोत मारफत डिप्टी इन्स्पेक्टर होकर करा दी जाय
 अर्जी फिदवियान मुदरिसान जिले एरा
 तारीख ३ सितम्बर सन् १८७७ ई०

गरीब परवर सलामत

जनाब आली अर्ज हम सब लड़कियों की यह है कि ऊजूर
 ने पाहिले तो शौक पढ़ने लिखने का लगाया अब हमने पढ़ने लिखने
 के शौक में अपने घर बार छोड़कर और अपने आदमियों का
 कहना न मानकर नार्मल स्कूल में हुई और अपने जी में यह उम्मेद
 कि घरके आदमी क्या करेंगे सरकार से तो हम लोगों की परवरिश होती
 है और विद्या पढ़ाई जाती है लिख पढ़कर किसी रोज नौकरी करेंगीं
 अब हम किसी की न रहीं सिवाय एक पढ़ाने लिखाने के दूसरा जुक
 वक्त कहत साली में सब लड़कियों की ऊजूर से परवरिश होनी चाहिये
 थी सो उस परवरिश की एवज में ऐसा ऊकन सुनाया गया कि हम लड़कि-
 यों के होश उड़ गये अब हम लड़कियों की ज़िन्दगी बचनी बहुत मुश-
 किल है और सिवाय आपके हम लड़कियों को कहीं ठिकाना नहीं है
 जहां पर हम चली जाय अब ऊजूर ही हमारे वाप मा हैं चाहे जान
 बचावें हम लड़कियों ने अपनी ज़िन्दगी से नाउम्मेद होकर यह अर्जी
 ऊजूर को गुजरानी है आगे ऊजूर मालिक है ॥

दस्तरवत राधा वा जिबा वा रूपो वा गोविन्दी
 गरीबों के परवरिश करने वाले सर

सलामत रहें

खुदावन्दा गुजिश्ते सन् अप्रैल में नियाज़ मंदने अपनी कुल्ल सनेहें बज-
 रिये चिद्दी जनाब सिनियर असिस्टेन्ट कमिश्नर फिसर साहिब बहादुर
 के वास्ते हो जाने तक रूरी फिदवी की तनखाह में डाइरेक्टर साहिब बहादुर

के झूँर में गुज़ारिश की थी अब अर्सा मुद्दत का गुज़रा अब तक वापिस
न मिलीं गुलाम ताजिन्दगानी की कमाई का भरोसा अपनी सनद मज-
कूरे को समझता है गुलाम के ऊपर रहम की नज़र फारमाई जावे कि
झूँर मा बाप मेरी सनद वापिस मंगा दें तो ऐन खुश नसीबी दुआगीय
की होगी फ़क़त ॥ ता. र्द जनवरी सन् १८७८

अर्जी फ़िदवी शोमाराम स. डि. रू. गढ़वाल

गरीब परवर सलामत जनाब डैरेकर साहिब

जनाब अली गुज़ारिश हाल फ़िदवी मातादीन का यह है कि झूँर
की बढ़ती परमेश्वर से मनाता रहता हूँ और पहले मैंने संस्कृत प्रकाशि-
नी सभामें पढ़ा जब संस्कृत का स्कूल टूट गया तब तहसीली मदर्स में
पढ़ा अब झूँर खाने पीने कपड़ों से तंग रहता हूँ और परसिकतर साहिब
कने नोर्मल स्कूल जाने के लिये अर्जी दी थी साहिबने कहा इकन देंगे और
दूमसाल दी तो कहा टिकट लगाकर दो टिकट लेने के वास्ते पैसे नथे और
किताब एक भी नहीं है जब खाने की तंगी है तब किताब काहे में लूँ और तह-
सीली में दो अध्याय रेखागणित और बीजगणित एक वर्ण समीकरण तक
अंकगणित हिंदी व्याकरण दोनों खंड इतिहास नक्शा भी पढ़ा संस्कृत
में सारस्वती प्रक्रिया और चन्द्रिका अमरकोश रघुवंश काव्य पढ़ा है
और अब अंगरेजी विद्या पढ़ना चाहता हूँ जो आप महर्बानी करें तो
पढ़ जाऊंगा और झूँर मेरे इसका जवाब मदर्स में आवे झूँर को परमे-
श्वर बद्ध माने यह मनाते रहते हैं झूँर दस १५ दिन रहूंगा जब तक
खाने को है झूँर इतने आदमी आप पास खाते हैं मेरा भाग्य होगा
तो मैं भी खाने को पाऊंगा या न पाऊंगा तो मेरे भाग्य को कोई क्या करे-
गा इस वास्ते आपके पास यह चन्द कलमा अर्ज किया गया आप मुल्क
मालिक हैं जो कुछ जवाब हो जल्द मिशन स्कूल में आवे ॥

इसका जवाब मंजूरी या नामंजूरी का जल्द प्राप्ति ॥ १९ मार्च सन् १८७८ ई.

दः मातादीन दफा २

गरीब परवर सलामत

खुदावन्दा ऊजूर में तमाम पहाड़वालों को भावर में गांव मिले हुए हैं सिर्फ हम लोगों के पास कोई गांव भावर में नहीं मिला कि हम लोग गांव बिना तंग हैं अर्ज है कि हसरापुर के पच्छिम तरफ और सिवलालपुर के पूरब तरफ योदानसी जलाल के गांव के उत्तर तरफ सरकारी सड़क के ऊपर करीब १००० बीघा तक वीरान है कि वह ज़मीन आबाद करने के लिये इनायत कर दीजिये कि इस वक्त घरोंघर में करीब २० हल मौजूद हैं गांव मिलने पर साल भर में पूरा गांव आबाद कस्तगा - फिदवी के बालबच्चे पलेंगे ऊजूर को दुआ देंगे ॥

अर्जी परमाफुन्नार काशतकार हाल भावर

वेलपोरेवरा - ता. ८ मार्च सन् १८८३ ई.

गरीब परवर सलामत

गुजारीश हाल फिदवी का यह है कि ३१४ साल से तहसील रामनगर में उम्मेदवार है व एकजी वगैरह कामों में अपना गुजर किया करता है कम किसमत बेवसीला होने से किसी मुकर्रर जगह पर गुलामने परवरिश न पाई लिखना पढ़ना भी गुलाम बखूबी जानता है पर के साल जालावन की चौकी पर चोरमारी में बरकंदाज था वह जगह टूट गई जब से मैं खाली तहसील पर बैठा हूँ अब हाल में मोहतमिम दामासिन साहिब की मातहतती में पतरौल लोग भरती होने वाले हैं किसी जगह पर फिदवी की परवरिश हो जावे मालिक जान के इतलाअन अर्ज किया ॥

अर्जी गुलाम हरकसेन गौ मौजे चापड़ पयमद

रूड़ा हाल रामनगर - ता. १८ अगस्त सन् ८१

॥ इति ॥



Madschmû'ah-i'arâiz

[Nichtlateinische Schriftzeichen] Sammlung von Eingaben auf befehl des
Lieutenant Governor der nordwestlichen Provinzen und des Chief
Commissioner's der Provinz Andh herausgegeben. In Devanagari Schrift Vgl.
Catalogue of the Library of the India Office. Vol. II part 2 p. 34 letzte

Allahabad 1884

A.or. 2815

urn:nbn:de:bvb:12-bsb11541632-0